بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على اله و ازواجه و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

फ़िर्क़ा वारियत की लाअनत और मस्लक परस्ती की नहूस्त से बच कर क़ुरआन -ए- हक़ीम, सहीह इस्नाद अहादीस और इज्माअ-ए-उम्मत को हुज्जत व दलील बनाता हुआ तारीख़ की झूठी, बे-सनद और ज़ईफ़ुल इस्नाद रिवायात से महफ़ूज़ और 72-शुहदाए कर्बला से इज़्हार अक़ीदत पर मुश्तमिल तहक़ीक़ी मक़ाला |

वाक़िया कर्बला का हक़ीक़ी पसमंज़र 72- सहीहुल अस्नाद अहादीस की रौशनी में

कर्बला के वाक़िया का हक़ीक़ी पसमंज़र 72 सहीहुल अस्नाद अहादीस की रौशनी में कुल २०० अहादीस अहले सुन्नत की मुस्तनद किताबों से हैं I और उनके नम्बर्ज़ उलमा ए हरमैन, बैरूत और दारुस्सलाम की इंटरनेश्नल नंबरिंग के ऐन मुताबिक़ है

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहलें पहलें सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

अल्लाह ﷻ का फ़रमान

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ [سُورةُ البقرة : 159 اور 160

तर्जुमा: **"बेशक जो लोग हमारी नाज़िल की हुई वाज़ेह आयात और रहनुमाई की बातों को छुपाते हैं जबकी हमने तो किताब में उसे लोगों के लिए ख़ूब ब्यान कर दिया, तो उन्ही लोगों पर अल्लाह तआला की लाअनत और तमाम लाअनत करने वालों की लाअनत है। सिवाए उन लोगों के जिन्हेंाने तौबा कर ली और अपनी इस्लाह भी कर ली और उस (छुपाए हुए इल्म) को बयाँ भी कर दिया, तो मैं भी उन पर महरबान हो जाऊंगा और मैं बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला और बहुत महरबान हूं।"** [सूरहतुल बक़रह : 159 और 160]

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ عَلِمَهُ ثُمَّ كَتَمَهُ أُلْجِمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِلِجَامٍ مِّنْ نَّارٍ

तर्जुमा: सय्यिदना अबुहुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "जिस शख़्स से कोई इल्म की बात पूछी गई जो उस शख़्स को मालूम थी फिर भी उसने उस (इल्म की बात) को छुपा लिया तो ऐसे शख़्स को क़यामत के दिन (अल्लाह तआला की तरफ़ से सज़ा के तौर पे) आग की लगाम डाली जाएगी। **(नाऊज़ु बिल्लाही मिन ज़ालिक)"** [जामेअ तिरमिज़ी:2649, सुनन अबुदाऊद:3658, सुनन इब्नेमाजा:261, मिश्कातुलमसाबीह:223]

[جامع ترمذی : 2649 ، سُنن ابی داؤد : 3658 ، سُنن ابنِ ماجه : 261 ، مِشکوٰۃ المصابیح : 223 ، قال الشیخ زبیر علیزئی والشیخ الالبانی : اِسنادہ صحیح]

सलफ का फ़हम इमाम मुस्लिम बिन हुज्जाज رحمه الله (अलमुतवफ्फ़ा 261 हिजरी) अपनी शोहरा आफ़ाक़ तालीफ़ "सहीह मुस्लिम शरीफ़" को तालीफ़ फ़रमाने की हिकमत लिखते हैं: "(ऐ मेरे शागिर्द !) जब तुमने मुझसे इस अज़ीम काम की फ़रमाइश की (यानी सहीह मुस्लिम की तालीफ़) तो मैंने सोचा कि अगर मैं इसका इरादा कर लूँ और ये काम पाया ए तक्मील को पहुंच जाए (यानी पूर्ण हो जाये) तो इस का फ़ायदा सबसे पहले बतौरे ख़ास मुझे ही हासिल होगा, इसके असबाब बहुत हैं मगर उनके ज़िक्र से (ये तम्हीदी) गुफ़्तगू लम्बी हो जाएगी। मुख़्तसर ये कि इस पुख़्ता तरीक़े से थोड़ी मिक़्दार में रिवायात को तहक़ीक़ के साथ मुरततब करना ज़्यादा आसान और मुफ़ीद है बजाए बहुत ज़्यादा रिवायात जमा करने के, बतौरे ख़ास आम इंसानों के लिए कि जिन्हें अहादीस (के सहीह या ज़ईफ़ होने) की पहचान नहीं होती जब तक उनकी रहनुमाई कोई दूसरा ना कर दे। जब ऐसी सूरत ए हाल हो जो हमने बयान की, थोड़ी तादाद में सहीह अहादीस का जमा कर देना, ज़्यादा मिक़्दार में ग़ैरमुस्तनद रिवायात को जमा करने से ज़्यादा नफ़ा बख़्श होगा।"

[सहीह मुस्लिम : अल मुक़दमा] [صحیح مُسلم : المُقدمه]

मन्हज नबवी ﷺ पर क़ाइम ख़िलाफ़त राशिदा की सहीह मुद्दत कितनी थी ? और ख़िलाफ़त राशिदा के अह्ल हक़ीक़ी ख़ुल्फ़ाए राशिदीन ؓ कौन थे ?

01 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबुमूसा अशअरी ؓ बयान करते हैं कि एक दिन हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मग़रिब की नमाज़ अदा की, फिर हम ने सोचा कि यहीं बैठे रहें कि इशा की नमाज़ भी रसूलुल्लाह ﷺ के साथ पढ ले (तो बेहतर होगा) चुनाचे हम वही बैठे रहे, इस दौरान रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाये, आप ﷺ ने पूछा, तुम उस वक़्त से यहीं (बैठे) हो? हम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हमने आप ﷺ के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, फिर सोचा यही

बैठे रहते हैं ताकि आपﷺ के साथ इशा की नमाज़ भी पढ़ लें। आपﷺ ने फ़रमाया "तुमने अच्छा काम किया " फिर आपﷺ ने सिर मुबारक आसमान की तरफ़ उठाया और अक्सर आपﷺ अपना सिर मुबारक आसमान की तरफ़ उठाया करते थे, फिर आपﷺ ने फ़रमाया: "सितारे आसमान के लिए अमन के बाईस हैं, जब सितारे चले जाएंगे तो आसमान पर वो वक़्त आ जाएगा जिसका वादा है (यानी फ़ना), और मैं अपने सहाबा رضی اللہ عنہم के लिए अमन का बाईस हूँ, जब मैं रुख़्सत हो गया तो मेरे सहाबा رضی اللہ عنہم पर वो चीज़ आएगी जिसका उन से वादा किया गया है (यानी फितन व मसाइब), और मेरे सहाबा رضی اللہ عنہم मेरी उम्मत के लिए बाईस ए अमन हैं, जब मेरे सहाबा رضی اللہ عنہم रुख़्सत हो जाएंगे तो मेरी उम्मत पर वो चीज़ आ जाएगी जिस (फितन व मसाइब) का उनसे वादा किया गया है।" [सहीह मुस्लिम: 6466][صحیح مسلم : 6466]

02 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना नोमान बिन बशीर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ के राज़दार सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: मुझे अमरा (हुक्मरानों) के बारे में आपﷺ का ख़ुतबा (भाषण) याद है कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "तुम में नबुवत बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब चाहेगा, उसे उठा लेगा, फिर नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त होगी, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब चाहेगा उसे भी उठा लेगा, फिर काट खाने वाली बादशाहत होगी, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब चाहेगा उसे भी उठा लेगा, फिर जाबराना बादशाहत होगी, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, फिर जब अल्लाह तआला चाहेगा उसे भी उठा लेगा, फिर नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त होगी (यानी क़ुर्ब क़यामत से पहले इमाम मेहदी की ख़िलाफ़त ए राशिदा)। फिर इसके बाद आपﷺ ख़ामोश हो गए।" **मुसनद अहमद ही की एक हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन जहमान ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि मुझ से सय्यिदना सफीना رضی اللہ عنہ ने हदीस बयान की, कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर उसके बाद मलूकियत (बादशाहत) हो जाएगी।" **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना सईद ताबई رحمہ اللہ का बयान है कि रसूलुल्लाहﷺ के आज़ाद किये हुए गुलाम सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर उसके बाद मलूकियत (बादशाहत) हो जाएगी"। फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने मुझ से फ़रमाया: "जब हमने शुमार किया तो सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ, सयिद्दना उस्मान رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ को पाया (यानी हमने इन ख़ुलफ़ा राशिदीन की कुल मुद्दत ए ख़िलाफ़त को 30 साल ही पाया)। **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है कि** सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया :"नबुवत की तर्ज़ पर ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर अल्लाह तआला जिसे चाहेगा हकूमत देगा।" सईद ताबई رحمہ اللہ कहते हैं कि फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने मुझ से फ़रमाया: सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ के 2 साल, सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ के 10 साल, सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ के 12 साल और इसी तरह सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के 6 साल भी शुमार कर लो (ये कुल तीस साल पूरे हुए)। सईद ताबई رحمہ اللہ कहते हैं कि मैंने सय्यिदना सफ़ीना से अर्ज़ की कि ये लोग (यानी बनू उमय्या) तो समझते हैं कि सय्यिदना अली علیہ السلام ख़लीफ़ा (बरहक़) नहीं थे! (नोट: सय्यिदना अली के साथ علیہ السلام ख़ुद इमाम अबुदाऊद رحمہ اللہ ने लिखा है) सय्यिदना सफ़ीना ने (ग़ुस्से की हालत में) फ़रमाया: "बनू ज़ुर्क़ा (नीली आंखों वाले) बनू मरवान की पीठ ने झूठ बोला है।" **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने बयान किया कि रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर इसके बाद बादशाहत होगी।" फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त और सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त और सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त और फिर फ़रमाया सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त भी शुमार करो, हमने ये तमाम मुद्दत कुल 30 साल ही पाई है।" सईद ताबई رحمہ اللہ फ़रमाते हैं कि मैंने सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया कि बनू उमय्या के लोग तो समझते हैं कि ख़िलाफ़त तो उनमें है, तो सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने (इन्तिहाई ग़ुस्से में) फ़रमाया: "ये बनू ज़ुर्क़ा (नीली आंखों वाले यानी बनू उमया और बनू मरवान के लोग) बिल्कुल झूठ बोलते हैं बल्कि (हक़ तो यह है कि) वो तो शरीर तरीन हकूमत करने वाली एक मलूकियत (बादशाहत) हैं।" **मुसनद अबुदाऊद अल तयालसी की हदीस में है:** सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने हमें ख़ुत्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया: "मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त 30 साल तक रहेगी, फिर उसके बाद मलूकियत (बादशाहत) हो जाएगी।" फिर सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने सईद ताबई رحمہ اللہ से फ़रमाया: "तुम शुमार कर लो सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ और सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त 12 साल और 6 माह थी और सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त 12 साल थी और फिर सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की ख़िलाफ़त ने (सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ के 6 माह भी शामिल करने से) 30 साल पुरे कर दिए।" सईद رحمہ اللہ का बयान है कि मैंने सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ से अर्ज़ किया: फिर हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ की हकूमत क्या हुई ? सय्यिदना सफ़ीना رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "वह (यानी हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ख़लीफ़ा राशिद नहीं बल्कि मुसलमानों के) बादशाहों में से पहले (बादशाह) थे।"

[मुसनद अहमद:18430 और 21973, मिश्कातुलमसाबीह:5378, सुनन नसाई अलकुबरा:8155, सुनन अबुदाऊद:4646, जामेअ तिरमिज़ी:**2226**, सिलसिलातुलसहीहा:**459**, मुसनद अबुदाऊद अलतयालसी: **1190**]

[مشکوۃ المصابیح : 5378 ، سنن نسائی الکبریٰ : 8155 ، سنن ابی داؤد : 4646 ، جامع ترمذی : 2226 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]
[السلسلۃ الصحیحۃ : 459 ، مسند ابی داؤد الطیالسی : 1190 (جلد - 3 ، صفحہ - 285) ، قال الشیخ غلام مصطفی ظہیر امن پوری فی السنۃ - 16 : اسنادہ صحیح]
[مسند احمد : 18430 (جلد - 4 ، صفحہ - 273) اور 21973 (جلد - 5 ، صفحہ - 221) ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی و الشیخ الارنووط : اسنادہ صحیح]

03 **सहीह मुस्लिम की हदीस है:** सय्यिदना मअदान बिन अबुतलहा ताबई رحمه الله का बयान है कि सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه ने जुमा का ख़ुत्बा दिया और उसमें रसूलुल्लाह ﷺ और सय्यिदना अबुबकर رضي الله عنه का ज़िक्र ए खैर फ़रमाया। फिर सय्यिदना उमर رضي الله عنه ने इरशाद फ़रमाया: "बेशक़ मैंने ख़्वाब में देखा कि एक मुर्ग़ ने मुझे तीन ठोंके मारीं हैं और मैं (उसकी ताबीर) ये समझता हूँ कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है। बाज़ लोग मुझे ये मशवरा दे रहे हैं कि मैं अपना जाँनशीन (उत्तराधिकारी) मुक़र्रर कर दूं लेकिन (मैं ऐसा कोई इरादा नहीं रखता क्योंकि) अल्लाह अपने दीन को बर्बाद नहीं होने देगा न ही अपनी ख़िलाफ़त को और न ही उस (हिदायत) को जिसे उसने अपने रसूल ﷺ को देकर भेजा है। अगर मेरी मौत जल्द हो जाए तो (मेरा ये हुक्म है कि) ख़िलाफ़त का फ़ैसला उन 6 अफ़राद में ही तय पाए जिनसे रसूलुल्लाह ﷺ अपनी वफ़ात तक राज़ी थे। (नोट: उन छह अफ़राद के नाम सहीह बुख़ारी की अगली हदीस में आ रहे हैं) और मुझे ख़ूब मालूम है कि बाज़ लोग इस अम्र ए ख़िलाफ़त में तान करेंगे और ये वही लोग हैं जिन्हें मैंने इस्लाम की ख़ातिर (उनके इस्लाम क़ुबूल करने से पहले) अपने इन हाथों से मारा भी है। (नोट: फ़तह मक्का पर माफ़ी मांग के इस्लाम में दाख़िल होने वाले इन्हीं लोगों से मुतालिक हक़ाएक़ इस तहक़ीक़ी मक़ाला की अगली अहादीस में आ रहे हैं) पस अगर वह लोग वाक़ई ऐसा करें (यानी ख़िलाफ़त में तान करें) तो जान लेना कि वो अल्लाह तआला के दुश्मन और काफ़िर गुमराह हैं___" **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अम्र बिन मौमून ताबई رحمه الله का बयान है कि जिस ज़ख्म में सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه की शहादत हुई, आप رضي الله عنه को दूध पेश किया गया, आप رضي الله عنه ने पिया मगर वो आप رضي الله عنه के ज़ख्म से बह निकला तो लोगों को यक़ीन हो गया कि आप رضي الله عنه इस ज़ख्म से ज़िंदा नहीं बच पाएंगे, तो लोग आप رضي الله عنه के गिर्द जमा हो गए .... चुनांचे लोगों ने दर्ख़वास्त की कि अमीरुल मोमिनीन! अपने बाद अपने जाँनशीन (उत्तराधिकारी) की वसीयत फ़रमा दीजिए, आप رضي الله عنه ने फ़रमाया, "मैं अपने बाद इन 6 अफ़राद से बढ़कर मामले (ख़िलाफ़त) का किसी और को हक़दार नहीं समझता, जिन से नबी ﷺ अपनी वफ़ात तक राज़ी थे।" फिर आप رضي الله عنه ने सय्यिदना अली رضي الله عنه ,सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه ,सय्यिदना ज़ुबैर رضي الله عنه ,सय्यिदना तलहा رضي الله عنه ,सय्यिदना साद رضي الله عنه और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه के नाम लिए और फिर (अपने बेटे की दिलजोई के लिए) फ़रमाया कि इन 6 अफ़राद के साथ सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه भी (मशावरत में) मौजूद होगा, लेकिन ख़िलाफ़त (के उम्मीदवारों) में उसका कोई हिस्सा नहीं होगा।"........फिर मज़ीद फ़रमाया: "मैं अपने बाद वाले ख़लीफ़ा को वसीयत करता हूँ कि वो मुहाजरीन ए अव्वल का ख़्याल रखे, उन के हुक़ूक़ और एहतराम को मलहूज़ ए ख़ातिर रखे और मैं उसे अन्सार के बारे में भी हिदायत करता हूँ कि वो उन से हुस्ने सुलूक करे क्योंकि ये वो लोग हैं जिन्होंने बहुत पहले अहले ईमान को पनाह दी थी। उनकी अच्छाइयों की पज़ीराई की जाए और कोताहियों से सरफ ए नज़र की जाए और मैं तमाम ख़िलाफ़ते इस्लामिया के मुताल्लिक़ भी हुस्ने सुलूक की वसीयत करता हूँ कि नौ मुस्लिम रिआया(प्रजा) इस्लाम के मददगार और बैतुल माल की आमदन और दुश्मन पर रौब का वसीला हैं लिहाज़ा उन से उनकी रज़ामंदी के साथ ही उनका फ़ालतू माल (बैतुल माल के लिए) लिया जाए, और मैं उस (नए ख़लीफ़ा) को बद्दू लोगों से मुताल्लिक़ भी अच्छे बर्ताव की वसीयत करता हूँ क्योंकि ये लोग अरब की जड़ हैं और इस्लाम उन्ही से फैला है, मैं हिदायत करता हूं कि उनसे (ज़कात की वसूली में) घटिया माल लिया जाए और उन्ही के मुस्तहक़ीन में तकसीम किया जाए, मैं उस (नए ख़लीफ़ा) को वसीयत करता हूँ कि वो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ के आइद करदा ज़िम्मा का पास रखे और अवाम के हक़ूक़ की पूरी अदाइगी करे और अवाम की ताक़त से बढ़कर उन पर बोझ ना डाले।"

[सहीह मुस्लिम :1258, सहीह बुख़ारी :3700] [صحیح مُسلم : 1258 ، صحیح بخاری : 3700]

नोट उन 6 अफ़राद में 4 अफ़राद: सय्यिदना ज़ुबैर رضي الله عنه , सय्यिदना तलहा رضي الله عنه , सय्यिदना साद رضي الله عنه और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه ख़ुद ही दस्तबर्दार हो गए फिर उन्होंने ही ने बाक़ी बच जाने वाले सय्यिदना अली رضي الله عنه और सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه में से सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه को ख़लीफ़ा मुन्तख़िब कर लिया और सबसे पहले सय्यिदना अली رضي الله عنه ने ही सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه की बैअत की। लिहाज़ा सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه की शहादत के बाद सय्यिदना अली رضي الله عنه से बढ़कर कोई भी शख़्स ख़िलाफ़त का हक़दार नहीं था इसीलिए सहाबा رضي الله عنهم ने सय्यिदना अली رضي الله عنه को सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه के बाद ख़लीफ़ा चुन लिया था :

[सहीह बुख़ारी : 3700 और 7207] [صحیح بخاری : 3700 اور 7207]

04 **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه बयान फ़रमाते हैं कि मैं लोगों के हमराह सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه की मय्यत के पास खड़ा था कि पीछे से एक आदमी ने मेरे कंधे पर अपनी कोहनी रखी और कहा अल्लाह तआला आप (सय्यिदना उमर رضي الله عنه) पर रहमत फ़रमाए, मुझे शुरू ही से ये उम्मीद वासिक़ थी कि अल्लाह तआला आप رضي الله عنه को अपने दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और सय्यिदना अबुबकर رضي الله عنه) के साथ इकठ्ठा फ़रमा देगा, क्योंकि मैं अकसर रसूलुल्लाह ﷺ से ये

सुना करता था कि आप ﷺ फ़रमाया करते थे: "मैं और अबुबकर और उमर थे, मैं और अबुबकर और उमर ने ये कहा, मैं और अबुबकर और उमर गए।" तो मैं तवक़्क़ो (आशा) रखता था कि अल्लाह तआला उमर رضي الله عنه को उन दोनों साथियों के साथ (मौत के बाद भी) इकठ्ठा फ़रमा देगा, सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه का बयान है: "जब मैंने (सय्यिदना उमर رضي الله عنه के लिए तारीफ़ी कलमात कहने वाले) उस शख़्स की तरफ़ मुड़कर देखा तो वो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब رضي الله عنه थे।"
[सहीह बुख़ारी:3677 सहीह मुस्लिम: 6187] [صحیح بخاری : 3677 ، صحیح مسلم : 6187]

05 सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضي الله عنه बयान करते हैं कि एक मरतबा हम सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه की सोहबत में बैठे थे कि आप رضي الله عنه ने दरयाफ़्त फ़रमाया: फ़ितने से मुतालिक़ कोई हदीस तुम में से किसी को याद है?" सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने अर्ज़ की (जी हां) आदमी को बाज़ दफ़ा अपने अहल व अयाल, माल, औलाद और पड़ोसी से फ़ितना (आज़माइश) लाहक़ होता है और नमाज़, ख़ैरात और अम्रबिलमारूफ़ व नहीअनलमुंकर (अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) से ऐसे फ़ितने का सद्देबाब (समाधान) और इज़ाला हो जाता है। सय्यिदना उमर رضي الله عنه ने फ़रमाया: (नहीं) मैं इस क़िस्म के फ़ितनों के बारे में नहीं पूछ रहा हूँ, बल्कि मेरा सवाल तो उस फ़ितने से मुत्तालिक़ है जो समन्दर की मौजों की तरह शदीद ठाठें मारता हुआ होगा। सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने अर्ज़ की: ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप رضي الله عنه को तो उस फ़ितना से कोई ख़तरा नहीं होगा, आप رضي الله عنه और उस (अज़ीम) फ़ितने के दर्मियान एक बंद दरवाज़ा (हाइल) है। सय्यिदना उमर رضي الله عنه ने पूछा: वो दरवाज़ा तोड़ दिया जाएगा या खोला जाएगा? सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने अर्ज़ की: बल्कि उसे तोड़ दिया जाएगा। सय्यिदना उमर رضي الله عنه ने फ़रमाया: फिर तो वो कभी भी बंद ना हो पाएगा। सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने अर्ज़ की: जी हां बिल्कुल! (ऐसा होगा) ताबईन कहते हैं कि हमने फिर सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه से पूछा: क्या सय्यिदना उमर رضي الله عنه को मालूम था कि दरवाज़े से मुराद क्या चीज़ है? सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने फ़रमाया: हाँ! बिल्कुल उन को ऐसे ही मालूम था जैसे आज के बाद आने वाले कल का इल्म यक़ीनी होता है, क्योंकि मेनें कोई ग़लत हदीस तो उन्हें बयान नहीं की थी! ताबईन कहते हैं कि हमें जुरअत ना हुई कि हम सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه से पूछ सकें कि उस दरवाज़े से मुराद क्या चीज़ थी ? चुनाँचे हमने मसरूक़ ताबई رحمه الله से कहा कि तुम पूछो तो उनके पूछने पर सय्यिदना हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने फ़रमाया: "उस दरवाज़े से मुराद सय्यिदना उमर رضي الله عنه ही तो थे। [सहीह बुख़ारी: 7096, सहीह मुस्लिम: 7268] [صحیح بخاری : 7096 ، صحیح مسلم : 7268]

06 सहीह बुख़ारी की हदीस में है: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه बयान फ़रमाते हैं कि मैं (अपनी बहन) उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा हफ़्सा رضي الله عنها के पास गया, इस हाल में कि उनके बालों से पानी टपक रहा था, मैंने उनसे अर्ज़ की, लोगों का मामला जो सूरत इख़्तियार कर गया है, आप बाख़ूबी उससे वाकिफ़ हैं, मेरा तो कोई दख़ल इस अम्र (ख़िलाफ़त और इक़तिदार) में नहीं रह गया। उम्मुल मोमिनीन رضي الله عنها ने फ़रमाया तुम अभी जाओ क्योंकि लोग तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं और मुझे डर है कि तुम्हारे न जाने से इन्तिशार व इफराक़ पैदा होगा। उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा हफ़्सा رضي الله عنها ने बाइसरार उन्हें भेज कर ही छोड़ा। चुनांचे सब लोग मुतफर्रिक टुकड़ियों में बैठ गए तो हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضي الله عنه ने (मसअला ए तहकीम के बाद पहली दफा) वहां (मदीना शरीफ़ में) ख़ुत्बा दिया और कहा: जो कोई इस अम्र (ख़िलाफ़त व इक़तिदार) में बोलना चाहता है, तो वह ज़रा सा सिर उठा के तो दिखाए, यकीनन हम उसके और उसके बाप से भी ज़्यादा इस (ख़िलाफ़त व इक़तिदार) के मुसतहिक़ हैं (نعوذ باللہ من ذلك) । हदीस के रावी हबीब बिन मुस्लिमा ताबई رحمه الله ने बाद में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से पूछा: ऐ सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه ! फिर आपने उन (हज़रत मुआविया رضي الله عنه) को कोई जवाब क्यों नहीं दिया ? सय्यिदना अब्दुल्ललाह बिन उमर رضي الله عنه ने फ़रमाया: मैंने इरादा किया था कि उसी वक़्त अपनी गोठ खोलूं और हज़रत मुआविया رضي الله عنه को जवाब दूं कि इस अम्र (ख़िलाफ़त) का तुमसे बड़ा हक़दार तो वो है जिसने तुमसे और तुम्हारे बाप से इस्लाम की खातिर जंग की थी (यानी सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضي الله عنه या फिर ख़ुद सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه) मगर फिर मैं डर गया कि कहीं ऐसी कोई बात न कह बैठूं जिससे इन्तिशार फ़ैले और ख़ूँरेज़ी हो और मेरी बात का ग़लत मतलब ही समझ लिया जाए चुनांचे मैंने अल्लाह तआला की तैयार करदा जन्नती नेमतों को अपने तसव्वुर में याद किया (और सब्र करके ख़ामोश हो रहा)। रावी हदीस हबीब मुसल्लमा ताबई رحمه الله ने इस पर कहा: "सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه ने (यूं ख़ामोशी इख़्तियार फरमाकर) अपनी जान भी बचा ली और अपनी इज़्ज़त को भी (फ़ितना व फ़साद से) बचा लिया।" [सहीह बुख़ारी : 4108] [صحیح بخاری : 4108]

07 सहीह बुख़ारी की हदीस में है: सय्यिदना मुहम्मद बिन हन्फ़िया ताबई رحمه الله (जो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब رضي الله عنه की दूसरी बीवी सय्यिदा हन्फ़िया رضي الله عنها के बेटे थे) बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद गिरामी (अली رضي الله عنه) से पूछा कि रसूलुल्लाह ﷺ के बाद (इस उम्मत के लोगों में) सबसे अफ़ज़ल शख़्सियत कौन सी हैं? तो सय्यिदना अली رضي الله عنه ने फ़रमाया सय्यिदना अबुबकर رضي الله عنه , मैंने कहा फिर उनके बाद कौन हैं ? फ़रमाया सय्यिदना उमर رضي الله عنه , फिर मुझे ख़दशा (भय) हुआ कि अब की बार पूछा तो आप رضي الله عنه सय्यिदना उस्मान رضي الله عنه का नाम लेंगे, चुनांचे मैंने कहा कि उन (सय्यिदना अबुबकर رضي الله عنه और सय्यिदना उमर رضي الله عنه) के बाद तो आप (सय्यिदना

अली ؓ) ही (अफ़ज़ल) हैं? तो आप ؓ ने (इन्तहाई इंक्सारी करते हुए) फ़रमाया: "मैं तो आम मुसलमानों में से एक मुसलमान हूँ।" [सहीह बुख़ारी : 3671] [صحیح بخاری : 3671]

B ख़लीफ़ह राशिद के ख़िलाफ़ बग़ावत करना बिदअत है! जंग-ए-जमल, जंग-ए-सिफ़्फ़ीन और जंग-ए-नहरवान में सय्यिदना अली ؓ की हक्क़ानियत और शहादते सय्यिदना उस्मान ؓ

08 सुनन अबुदाऊद, जामेअ तिरमिज़ी और सुनन इब्ने माजा की हदीस में है: सय्यिदना अरबाज़ बिन सारया ؓ का बयान है कि एक रोज़ (अपनी वफ़ात से कुछ ही अर्सा क़ब्ल) रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ पढ़ाई और फिर हमारी तरफ़ रुख़ अनवर (चेहरा) करके बहुत ही असर अंगेज़ ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया जिस को सुनकर सहाबा ؓ की आंखें बह पड़ीं और दिल दहल गए। एक शख़्स ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ हमें यूं लगता है गोया कि ये आप ﷺ का आख़िरी वाज़ व नसीहत है! लिहाज़ा आप ﷺ हमें कोई वसीयत फ़रमाइए! तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह तआला से डरते रहने और (अपने बाद के हुक्मरानों की) बात सुनने और इताअत करने की वसीयत करता हूँ ख़्वाह वो कोई हब्शी ग़ुलाम ही क्यों ना हो। तुम में जो भी मेरे बाद ज़िंदा रहा तो वो बहुत ही इख़्तिलाफ़ देखेगा, देखना उस (इख़्तिलाफ़ के वक़्त) तुम मेरी सुन्नत और रास्तबाज़ और हिदायत याफ़्ता ख़ुलफ़ा ؓ की सुन्नत पर कार बंद रहना, और उन को ख़ूब मज़बूती से थाम लेना कि छूटने ना पाएं और (दीन में) किसी नए काम को जारी करने से बाज़ रहना क्योंकि ये बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।" सुनन नसाई की हदीस में ये अल्फ़ाज़ मौजूद हैं: "और हर गुमराही (उसी बिदअती को) दोज़ख़ में ले कर जाने वाली है।" [सुनन अबुदाऊद: 4607, जामेअ तिरमिज़ी: 2676, सुनन इब्ने माजा: 42, सुनन नसाई: 1579,]
[سنن ابی داؤد : 4607 ، جامع ترمذی : 2676 ، سنن ابنِ ماجہ : 42 ، سنن نسائی : 1579 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

09 मुसनद अहमद, अलमुसतदरकलिलहाकिम और सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है: सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ؓ बयान फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे कि आप ﷺ अपनी किसी अहलिया मुहतरमा के घर से तशरीफ़ ले आए, फिर हम भी आप ﷺ के हमराह हो लिए, इसी दौरान आप ﷺ का जूता मुबारक टूट गया, तो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ उस मुबारक जूते को मरम्मत करने की वजह से पीछे रह गए और हम रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह चलते रहे यहां तक कि आप ﷺ सय्यिदना अली ؓ के इंतज़ार में रुक गए और हम भी ठहर गए। वहां आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "तुम में एक ऐसा (ख़ुशनसीब) शख़्स भी है कि जो क़ुरआन हकीम की तफ़्सीर की ख़ातिर (मुसलमानों से) क़िताल करेगा जैसा कि मुझे क़ुरआन हकीम की तंज़ील (यानी हक़्क़ानियत) की ख़ातिर (कुफ़्फ़ार से) क़िताल करना पड़ा।" ये सुनकर हम सब शौक़ से आप ﷺ की तरफ़ मुतवज्ज हुए (इस उम्मीद से शायद मैं ही वो ख़ुशनसीब शख़्स हूँ) और उस वक़्त हमारे दरमियान सय्यिदना अबुबकर ؓ और सय्यिदना उमर ؓ भी मौजूद थे, सय्यिदना अबुबकर ؓ ने अर्ज़ की क्या मैं हूँ वो ? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं"। सय्यिदना उमर ؓ ने अर्ज़ कि क्या मैं हूँ वो? आप ﷺ ने फ़रमाया, "नहीं (तुम में से कोई भी ऐसा शख़्स नहीं) बल्कि वो (ख़ुशनसीब) तो मेरे जूते गांठने वाला शख़्स है (यानी सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ)। चुनांचे हम सब सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ के पास आए ताकि उन्हें ये बशारत दें। सय्यिदना अबु सईद ख़दरी ؓ फ़रमाते हैं: "(ये बशारत सुनने के बाद) सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ का रद्दे (प्रतिक्रिया) अमल ऐसा था गोया कि वो पहले ही से इस बशारत को जानते थे।"
[मुस्नद अहमद: 11307 और 11790, अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4621, सुनन नसाई अलकुबरा :8457]
[مسند احمد : 11307 (جلد - 3 ، صفحہ - 33) اور 11790 (جلد - 3 ، صفحہ - 82) ، قال الشیخ شعیب الارنؤوط : اسنادہ صحیح]
[المستدرک للحاکم : 4621 ، قال الامام حاکم و الامام الذہبی : اسنادہ صحیح ، سنن نسائی الکبریٰ : 8457 ، قال الشیخ غلام مصطفی فی خصائص علی : اسنادہ صحیح]

10 सहीह बुख़ारी की हदीस में है: सय्यिदना अल्क़मा ताबई ؒ का बयान है वो मुल्क शाम गए तो वहां मस्जिद में दाख़िल हो कर दुआ की कि ऐ अल्लाह मुझे यहां कोई नेक हम नशीन अता फ़रमा। चुनांचे (दुआ की क़बूलियत हुई और) उनको सय्यिदना अबुदर्दा ؓ की सोहबत नसीब हुई। उन्होंने अल्क़मा ताबई से पूछा कि तुम किस इलाक़े से हो? मैंने अर्ज़ की कि शहर कूफ़ा से आया हूँ, उन्होंने फ़रमाया :क्या तुममें सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ मौजूद नहीं हैं, जो सफ़र व हज़र में रसूलुल्लाह ﷺ की जूतियाँ और सामान उठाया करते थे? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ! फिर फ़रमाया: क्या तुम में सय्यिदना हुज़ैफ़ा ؓ मौजूद नहीं हैं कि जिन्हें रसूलुल्लाह ﷺ के ख़ास राज़ मालूम हैं जिन्हें उनके सिवा कोई और नहीं जानता? मैंने अर्ज़ किया हां ! फिर फ़रमाया: क्या तुम (अहले कूफ़ा) में सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ जैसी शख़्सियत मौजूद नहीं जिन्हें अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक ज़ुबान के ज़रिये शैतान से पनाह अता फ़रमाई है? मैंने अर्ज़ की जी हाँ! (यानी सय्यिदना अबुदर्दा ؓ ने अलक़मा ताबई को नसीहत फ़रमाई कि कूफ़ा में इतने बड़े असहाब ए रसूल ﷺ के होते हुए शाम का सफ़र इख़्तियार करने की ज़रुरत नहीं।)
[सहीह बुख़ारी : 3743] [صحیح بخاری : 3743]

11 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु मरयम असदी ताबई का बयान है कि जब सय्यिदना तलहा, सय्यिदना ज़ुबैर और उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा बसरा की तरफ़ (जंगे जमल के लिए) रवाना हुए तो सय्यिदना अली ने सय्यिदना अम्मार बिन यासिर और अपने बेटे सय्यिदना हसन को हमारे पास कूफ़ा रवाना फ़रमाया (ताकि वहां से फ़ौजी मदद हासिल कर सकें) । तो वो दोनों मिम्बर पर चढ़े, सय्यिदना हसन मिम्बर के ऊपर वाले हिस्से पे तशरीफ़ फ़रमा हुए और सय्यिदना अम्मार नीचे वाले हिस्से पर खड़े हुए। हम सब उनकी बात सुनने के लिए इकठ्ठे हुए। सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ने फ़रमाया: उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा (लश्कर लेकर मक्का मुकर्रमा से) बसरा रवाना हो चुकी हैं, अल्लाह तआला की क़सम! वो दुनिया और आख़िरत में रसूलुल्लाह की ज़ौजा मोहतरमा हैं, मगर (इस वक़्त) अल्लाह तआला तुम्हारा इम्तिहान फ़रमाना चाहता है कि तुम (ख़लीफ़ा राशिद की इताअत करने के सबब से) अल्लाह तआला की इताअत करते हो या फिर सय्यिदा आयशा की पैरवी करते हो ? **सहीह बुख़ारी की हदीस है:** सय्यिदना अबुबकरा बयान फ़रमाते हैं कि जमल की जंग के दिनों में अल्लाह तआला ने मुझे रसूलुल्लाह के एक फ़रमान मुबारक ने बहुत फ़ायदा पहुंचाया जबकि मैं (सय्यिदना अली के ख़िलाफ़) जमल वालों के साथ (सय्यिदा आयशा के लश्कर में) शरीक होने ही वाला था कि उनकी हिमायत में क़िताल करूँ (मगर मुझे फ़रमान ए नबवी याद आ गया कि) रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया था "वो क़ौम कभी भी फ़लाह (कामयाबी) हासिल नहीं कर सकती जो अपना सरबराह (नेता) किसी औरत को बना ले।" **[सहीह बुख़ारी: 7100 और 4425]** [صحیح بخاری : 7100 اور 4425]

12 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना क़ैस ताबई का बयान है कि जब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा अपने लश्कर के साथ बनूआमिर के घाट पर पहुंचीं तो वहां कुत्ते भौंकने लगे, तो आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया: ये कौन सा चश्मा (जिस जगह से ज़मीन से पानी निकलता है) है? जवाब मिला कि ये चश्मा हव्वाब है ! ये सुनकर आप ने फ़रमाया: फिर तो मैं ज़रूर वापस ही जाऊंगी। इस फ़ैसले पर सय्यिदना ज़ुबैर ने मशवरा दिया कि नहीं बल्कि हमें आगे बढ़ना चाहिए ताकि आप को देखकर मुसलमानों में इत्तिहाद की कोई राह निकल सके (और वो फ़ित्ना व इंतिशार ख़त्म हो जाए जो सय्यिदना उस्मान की शहादत के बाद से जन्म ले चुका था) । उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ने फ़रमाया कि एक दिन मुझसे रसूलुल्लाह ने (ये ग़ैबी ख़बर देते हुए बड़े अफ़सोस की हालत में) इरशाद फ़रमाया था: "तुम (अज़वाजे मुतहरात यानी पवित्र पत्निया) में से किसी एक (ज़ौजा मुतहरा अर्थात पवित्र पत्नी) की हालत उस वक़्त कैसी होगी, जबकि उस पर (मक़ामे) हव्वाब के कुत्ते भौंकेंगे।" **मुसनद अहमद और मजमउज़्ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुराफ़ेअ का बयान है कि रसूलुल्लाह ने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब से फ़रमाया: "याद रखना ऐ अली ! अनक़रीब तुम्हारे और आएशा के दरमियान एक (रंजिश वाला) मामला होगा।" सय्यिदना अली ने पूछा: क्या मेरे साथ? आप ने फ़रमाया: "हाँ" , सय्यिदना अली ने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह फिर तो मैं बड़ा बदबख्त होऊंगा। आप ने इरशाद फ़रमाया: "नहीं! बल्कि जब ऐसा होगा तो तुम उस (आएशा) को उसकी पनाहगाह तक पहुंचा देना।" **मजमउज़्ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास का बयान है कि रसूलुल्लाह ने अपनी अज़वाजे मुतहरात (पवित्र पत्नियों) से इरशाद फ़रमाया: "काश मुझे मालूम हो जाता कि तुम में से मेरी कौन सी बीवी एक ऐसे ऊँट पर सवार होगी जिस (ऊँट) के चेहरे पर बहुत ज़्यादा बाल होंगे। हव्वाब के कुत्ते निकलेंगे और उसके दाएं बाएँ बहुत ज़्यादा क़त्ल व ग़ारत होगी। और फिर वह बाल बाल बच जाएगी!" **मुहद्दिस ए आज़म सऊदी अरब शेख़ मुहम्मद नासिरुद्दीन अलबानी (अल मुतवफ़्फ़ा 1420 हिजरी) इसी हदीस के तहत लिखते हैं:** इस मामले में ज़्यादा से ज़्यादा ऐतराज़ ये किया जा सकता है कि उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आएशा को जब हव्वाब मक़ाम के बारे में मालूम हो गया था तो उन्हें तो वापस चले जाना चाहिए था, लेकिन अहादीस में आया है कि वो वापस नहीं गईं, ये बात तो उम्मुल मोमिनीन की शान को ज़ेबा नहीं थी। इस (इल्मी सवाल पर) हमारा जवाब ये है कि ज़रूरी नहीं कि सहाबा किराम में कमाल वाली हर सिफत ही पाई जाती हो, याद रखें! लगज़िश और ग़लती से पाक सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात है। किसी सुन्नी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह अपनी क़ाबिले एहतिराम हस्तियों के बारे में इतना ग़ुलू कर ले कि इन्हें शियों की तरह मासूम इमामों की सफ़ में ला खड़ा करे (यानी अस्मते सहाबा का अक़ीदा वैसा ही बातिल अक़ीदा है जैसा शिया का अस्मते आइम्मा का अक़ीदा बातिल है।) इस में शक नहीं है कि उम्मुल मोमिनीन का ये ख़ुरूज असल में ख़ता पर ही मबनी था, इसीलिए जब उनको मक़ामें हव्वाब के बारे में रसूलुल्लाह की पेशगोई के पूरे होने का मालूम हुआ तो उन्होंने वापसी का इरादा भी कर लिया था लेकिन सय्यिदना ज़ुबैर ने उन्हें ये कहकर वापसी का इरादा तर्क करने पर क़ाइल कर लिया कि शायद आप की वजह से अल्लाह तआला मुसलमानों में सुलह की कोई सूरत निकाल देगा। इसमें भी शक नहीं है कि सय्यिदना ज़ुबैर भी अपने इस इज्तिहाद में ख़ता पर थे। अक़्ल भी इस बात का तक़ाज़ा करती है कि उन दोनों गिरोहों में से किसी एक को ज़रूर ख़ता पर क़रार दिया जाए कि जिस वजह से मुसलमानों के दरमियान सैकड़ों हज़ारों लोगों का खून हुआ। और बेशक़ उम्मुल मोमिनीन का इज्तिहाद ही इस (जंगे जमल वाले) मामले में

ख़ता पर मबनी था। इसके बहुत से असबाब और वाज़ेह दलाइल मौजूद हैं। (और इसकी) एक दलील तो उन का अपने इस ख़ुरूज पर नादिम होना ही है और यही नदामत उनके फ़ज़्लो कमाल को ज़ेबा भी है। उनकी ये ख़ता इज्तिहादी ख़ताओं में से एक खता थी जो कि न सिर्फ़ माफ कर दी जाती है बल्कि उस पर एक अज्र भी मिलता है।" **सहीह बुख़ारी की एक हदीस में है:** सय्यिदना उरवा बिन ज़ुबैर ताबई ؒ का बयान है कि सय्यिदा आएशा ؓ ने (अपने भांजे) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ؓ को वसीयत फ़रमाई कि मुझे उन हस्तियों (रसूलुल्लाह ﷺ और सय्यिदना अबुबकर ؓ और सय्यिदना उमर ؓ के साथ दफन न करना बल्कि मुझे मेरी सौतनों (अज़वाजे मुतहरात ؓ) के साथ बक़ीअ गरक़द में दफनाना, मैं इन (तीनों अज़ीम हस्तियों) के ज़रिए अपनी शान नहीं बढ़ाना चाहती ! **अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा की हदीस में है:** सय्यिदना क़ैस ताबई ؒ का बयान है कि जब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आएशा ؓ का आख़िरी वक़्त क़रीब आया तो आप ؓ ने फ़रमाया: "मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की अज़वाजे मुतहरात ؓ के साथ दफ़न करना क्योंकि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात के बाद एक नया काम सरज़द हो गया।" **मुहद्दिस ए आज़म सऊदी अरब शेख़ अलबानी ؒ इसी हदीस के तहत लिखते हैं:** "इस नए काम से आप ؓ की मुराद जमल की जंग में शिरकत करना था, क्योंकि बाद में आप ؓ इस सफ़र पर बहुत शर्मिंदा थीं और अपने अमल पर तौबा भी की थी। लेकिन उन्होंने ये काम भी नेक इरादे से ही किया था, बिलकुल इसी तरह सय्यिदना तलहा ؓ, सय्यिदना ज़ुबैर ؓ, और दीगर सहाबा ؓ ने भी नेक इरादे के साथ भलाई की उम्मीद पर इस्लाह की गर्ज़ से इस सफ़र में शिरकत की थी।"

[मुसनद अहमद: 24299, 24698 और 27242, सिलसिलातुलसहीहा: 474, मजमउज़्ज़वाइद: 12024 और 12026, सहीह बुख़ारी:1391, अल मुसन्नफ़ इब्ने अबु शैबा: 37772,]

[مسند احمد : 24299 (جلد - 6 ، صفحہ - 52) اور 24698 (جلد - 6 ، صفحہ - 97) ، السلسلۃ الصحیحۃ : 474 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ الارنؤوط : اسنادہ صحیح]
[مسند احمد : 27242 (جلد - 6 ، صفحہ - 393) ، مجمع الزوائد : 12024 (جلد - 7 ، صفحہ - 163) ، قال الامام الهیثمی : رواہ مسند احمد و البزار و الطبرانی و رجالہ ثقات]
[مجمع الزوائد : 12026 (جلد - 7 ، صفحہ - 163) ، قال الامام الهیثمی : رواہ مسند البزار و رجالہ ثقات ، قال الشیخ غلام مصطفی ظہیر فی السنۃ - 70 : اسنادہ صحیح]
[صحیح بخاری : 1391 ، المصنف ابن ابی شیبہ : 37772 ، قال الشیخ الالبانی : اسنادہ صحیح ، السلسلۃ الصحیحۃ : 474 ، قال الشیخ الالبانی : اسنادہ صحیح]

13 **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है :** सय्यिदना क़ैस बिन हाज़म ताबई ؒ का बयान है: "मैंनें मरवान बिन हकम (जो जंगे जमल में बनू उमय्या की तरफ़ से लोगों को सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ के ख़िलाफ़ भड़काने वालों का सरग़ना था) को (जंग जमल के) उस दिन सय्यिदना तलहा ؓ पर ही तीर चलाते हुए देखा था, जो उनके घुटने में लगा और वो उसी ज़ख़्मी हालत में मुसलसल तस्बीह कहते रहे यहां तक के शहीद हो गए।" **अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा और फ़ज़ाइलुस्सहाबा की हदीस में है:** सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ फ़रमाया करते थे: "मुझे अल्लाह तआला से क़वी उम्मीद है कि मैं, सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान ؓ, सय्यिदना तलहा ؓ और सय्यिदना ज़ुबैर ؓ उन लोगों में से होंगे जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:
"और हम उन (ईमान वालो) के सीनों में से हर क़िस्म का कीना ख़ींच निकालेंगे (और वो) भाईयों की तरह (जन्नत के) तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। [सूरह हिज्र: आयत47] [سورۃ الحجر : آیت نمبر 47]

[अलमुसतदरकलिलहाकिम:5591; अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा:37821; फ़ज़ाइलुस्सहाबा (इमाम हम्बल):1021]

[المستدرک للحاکم : 5591 ، قال الامام حاکم و الامام الذهبی : اسنادہ صحیح]
[المصنف ابن ابی شیبہ : 37821 ، فضائل الصحابۃ لاحمد بن حنبل : 1021 (جلد - 3 ، صفحہ - 35) ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

नोट चौथे खलीफ़ा राशिद सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ ने मुंदरजा बाला हदीस नम्बर-13 में तीसरे खलीफ़ा राशिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान ؓ का ज़िक्र क्यों किया? इस अहम् बात की हक़ीक़त व हिकमत और अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान ؓ की मज़लूमाना शहादत की हक़ीक़ी वुज़ूहात को जाने के लिए सहीह अहादीस (नम्बर 14 से नम्बर 16) मुलाहज़ा फ़रमाएं:

14 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना मुहम्मद बिन हन्फिया ताबई ؒ (जो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ की दूसरी बीवी सय्यिदा हंफिया ؒ के बेटे थे) बयान फ़रमाते हैं: अगर सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ ने सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान ؓ का ज़िक्र बुराई से करना होता तो उस दिन करते जब कुछ लोगों ने आकर उन (सय्यिदना अली) से सय्यिदना उस्मान ؓ के गवर्नरों (की नाइन्साफियों व मज़ालिम) की शिकायत की तो उन्होंने मुझे हुक्म दिया: "रसूलुल्लाह ﷺ की लिखवाई हुई तहरीर (जो बैतुल माल से मुताल्लिक़ शरई अहकाम पर मुश्तमिल थी) साथ लेकर सय्यिदना उस्मान ؓ के पास जाओ और उन्हें समझाओ कि अपने गवर्नरों को बैतुल माल में रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत तरीक़े पर तसर्रुफ़ करने का हुक्म दें।" चुनांचे मैं सय्यिदना उस्मान ؓ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (और सय्यिदना अली ؓ का पैगाम पहुंचा दिया) तो उन्होंने (सय्यिदना उस्मान ؓ) ने मुझसे फ़रमाया: "हमें इस (रसूलल्लाह ﷺ की लिखवाई तहरीर) की कोई ज़रुरत नहीं है।" चुनांचे मैं उसको लेकर सय्यिदना अली ؓ के पास वापस आया और सारा वाक़िया बयान कर दिया तो सय्यिदना अली ؓ ने फ़रमाया: "इस (रसूलुल्लाह ﷺ की लिखवाई हुई तहरीर) को उसी जगह रख दो जहाँ से उठाया था।" **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अली बिन हुसैन ताबई ؒ (अलमारूफ़ इमाम सज्जाद ज़ैनुल आबिदीन) मरवान

बिन हकम का बयान नक़ल करते हैं: "मैं (मरवान सय्यिदना उस्मान बिना अफ्फान और सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब के पास उस वक़्त मौजूद था जबकि सय्यिदना उस्मान हज तमअतुअ (एक ही सफ़र में हज और उमरा दोनों अदा करने) से मना कर रहे थे। जब सय्यिदना अली ने ये सूरते हाल देखी तो कहा: لبیک بعمرۃ وحج (यानी उमरह और हज इकटठा अदा करने का ऐलान किया) और फ़रमाया: "मैं किसी शख्स के कहने पर रसूलुल्लाहﷺ की सुन्नत तर्क नहीं करूँगा।"**सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सईद बिन मुसय्यब ताबई बयान फ़रमाते हैं: सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान और सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब दोनों मक़ाम उस्फान पर इकटठा हुए और सय्यिदना उस्मान हज तमअतुअ से रोक रहे थे तो सय्यिदना अली ने (सय्यिदना उस्मान से) फ़रमाया: "आप एक ऐसे अमल से क्यों मना कर रहे हैं जिसे ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ ने अदा फ़रमाया है ? "जवाब में सय्यिदना उस्मान ने (सय्यिदना अली) फ़रमाया: "आप हमारे मामले में दख़ल न दें।" सय्यिदना अली ने फ़रमाया: मैं इसे (बगैर दख़ल दिए) छोड़ नहीं सकता।" फिर जब सय्यिदना अली ने ये सूरते हाल देखी (कि ख़लीफा-ए-सालसा अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान उसी फ़ैसले पर क़ायम हैं) तो दोनों (हज और उमरा) को इकटठा अदा करने का ऐलान किया। **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** अबु सासान ताबई बयान फ़रमाते हैं: मैं सय्यिदना उस्मान के पास मौजूद था कि वलीद बिन उक़बा को लाया गया। (नोट:सय्यिदना उस्मान के इस गवर्नर का विस्तृत परिचय आगे आ रहा है) उस (वलीद बिन उक़बा) ने नमाज़े फ़ज्र की दो रकअत पढ़ाईं और फिर (नमाज़ियों से) पूछा: "और पढ़ा दूं?" चुनांचे दो अश्खास (व्यक्तियों) से गवाही दी जिन में से एक हमरान था, कि उस (वलीद) ने शराब पी हुई है। एक और आदमी ने गवाही दी कि मैंने उस (वलीद) को क़य (उलटी) करते हुए देखा है। तो सय्यिदना उस्मान ने फ़रमाया: "इसने शराब पी है इसीलिए तो क़य (vomit) की है।" फिर फ़रमाया: "ऐ अली ! उठें और इसे (शराब नोशी की हद) कोड़े लगाएं।" सय्यिदना अली ने (अपने बेटे से) फ़रमाया: "ऐ हसन ! उठो और इसको कोड़े लगाओ।" इस पर सय्यिदना हसन इब्ने अली ने अर्ज़ किया: "जिन्होंने इस शख्स (के इक़तिदार) का मज़ा लिया है वही (यानी सय्यिदना उस्मान) इस की तल्ख़ी भी बर्दाश्त करें।" (नोट: दरअसल सय्यिदना हसन इब्ने अली को वलीद बिन उक़बा जैसे बदकिरदार शख्स को गवर्नरी के ओहदे पर फाईज़ करने पर शदीद गुस्सा भी था और वो बनू उमय्या और बनू हाशिम के दरमियान होने वाले मुमकिना क़बाइली तअस्सुब (इर्ष्या व द्वेष) का भी इज्तिनाब करना चाहते थे।) फिर सय्यिदना अली ने फ़रमाया: "ऐ अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ! तुम उठो और इस कोड़े लगाओ।" चुनांचे उन्होंने कोड़े लगाने शुरू किये और जब चालीस पर पहुंचे तो (सय्यिदना अली) ने फ़रमाया: "बस करो! क्योंकि रसूलुल्लाहﷺ चालीस कोड़े लगवाया करते थे, सय्यिदना अबुबकर भी चालीस लगवाते थे, (जबकि) सय्यिदना उमर ने अस्सी कोड़े भी लगवाए थे। और ये सब अमल सुन्नत ही हैं मगर ये (चालीस वाला अदद) मुझे (रसूलुल्लाहﷺ की सुन्नत होने के बाईस) ज़्यादा पसंद है।" [सहीह बुख़ारी: 3111, 3112 और 1563, सहीह मुस्लिम: 2964 और 4457]
[صحیح بخاری : 3111 ، 3112 اور 1563 ، صحیح مسلم : 2964 اور 4457]

नोट वलीद बिन उक़बा, सय्यिदना उसमान का सौतेला भाई और उन की तरफ़ से कूफ़ा का गवर्नर था। इसकी ग़ैर अखलाक़ी हरकतों और इसी तरह सय्यिदना उस्मान की जानिब से (तालीफ़ ए क़ल्ब के लिए) लगाए गए बनू उमय्या ही के चंद रिश्तेदार गवर्नरों के अफ़आल की वजह से बाज़ सहाबा किराम तीसरे ख़लीफा अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान से नाराज़ थे और आख़िर यही मामलात सय्यिदना उस्मान की मज़लूमाना शहादत का सबब भी बने। शहादत ए उस्मान को अब्दुल्लाह इब्ने सबा यहूदी मलऊन के एक बिलकुल अलग थलग फितने से जोड़ देना दरअसल सहीहुल असनाद अहादीस और मुस्तनद तारीख़ से ना वाक़फियत और फ़िरकावाराना कित्माने हक़ (सच नात को छिपाना) का नतीजा है। चुनांचे इस ज़िमन में **मुहद्दिसे आज़म हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई अलमुतवफ़्फ़ा-1435 हिजरी) ने सुन्नी और शिया** दोनों की मुस्तनद किताबों से साबित किया है कि अब्दुल्लाह इब्ने सबा यहूदी मलऊन दोनों ही मकातिब फ़िक्र के यहाँ न सिर्फ़ एक मुनाफ़िक़ शख्सियत के तौर पर जाना जाता है बल्कि यहाँ तक मज़कूर है कि उसे चौथे ख़लीफ़ा राशिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ने (अपने दौरे ख़िलाफ़त में इसके ख़िलाफ़ ए तौहीद गुमराह कुन अक़ाएद और सय्यिदना मौला अली इब्ने अबुतालिब की शान में गुलू पर मबनी नज़रियात फैलाने के संगीन जुर्म की पादाश में) क़त्ल करवा के आग में डाल कर जलवा भी दिया था:
[फतावा इल्मिया अलमारूफ़ तौज़िहुल अहकाम हाफ़िज़ शेख़ ज़ुबैर अली ज़ई: जिल्द-1 सफा 153-159]
[فتاوی علمیہ المعروف توضیح الاحکام لِلحافظ شیخ زبیر علیزئی : جلد - 1 اور صفحہ - 153 تا 159]

15 **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास बयान करते हैं कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाहﷺ ने सब लोगों को अमान दे दी (यानी जान बख्शी का ऐलान फरमा दिया) मगर चार मर्दों और औरतों के मुताल्लिक़ हुक्म फ़रमाया: "उन्हें क़त्ल कर दो ख्वाह काबा के पर्दों से क्यों नही चिमटे हुए हों (यानी जान बचाने के लिए काबा की हुरमत का सहारा लें तब भी क़त्ल कर दो क्योंकि उन चारों के जराएम न काबिले माफ़ी थे) इन चारों में अकरमा बिन अबुजहल, अब्दुल्लाह बिन ख़तल, मक़ीस बिन सबाबा और

अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबुसरह शामिल थे। चुनांचे अब्दुल्लाह बिन ख़तल काबा के पर्दों से चिमटी हुई हालत में पकड़ा गया तो उस की तरफ़ सय्यिदना सईद बिन हारिस ﷺ और सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ﷺ दोनों लपके मगर सय्यिदना अम्मार ﷺ जवान आदमी थे इसलिए पहले जा पहुंचे और उसे मार डाला। इसी तरह मक़ीस बिन सबाबा बाज़ार में लोगों के हत्थे चढ़ गया और वहीं मारा गया, अलबत्ता अकरमा बिन अबुजहल फरार हो गया और समुन्द्री जहाज़ में सवार हो गया। समुन्द्री सफ़र के दौरान तूफ़ान आ गया तो सब कहने लगे अब तो सिर्फ़ अल्लाह तआला से मदद मांगो, यहाँ तुम्हारे (झूठे) माबूद कुछ काम न आएँगे। चुनांचे अकरमा ने (दिल में) दुआ करते हुए अर्ज़ किया: " अल्लाह तआला की क़सम! अगर सिर्फ़ अल्लाह तआला ही मुझे समुन्द्री आफत से निजात दिला सकता है तो ख़ुशकी (ज़मीन) में भी वही निजात देने वाला है। ऐ अल्लाह तआला! मेरा तुझ से पक्का अहद है कि अगर तूने मुझे इस (तूफ़ान) से बचा लिया तो सीधा जाकर (तेरे नबी) मुहम्मद ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होऊँगा और उनके हाथ में हाथ दे दूंगा (यानी इस्लाम क़बूल कर लूँगा) यक़ीनन वो बड़े माफ़ करने वाले और वसीअ उल ज़र्फ़ शख्सियत के मालिक हैं। चुनांचे फिर (जब उसे निजात मिली तो) वह आया और (आप के हाथ पर) इस्लाम क़बूल कर लिया। अब (चौथा ना क़ाबिले माफ़ी शख्स) अब्दुल्लाह बिन अबुसरह (कुछ अरसे के लिए) सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान के पास छिपा रहा (नोट) सय्यिदना उस्मान ﷺ ने क़रीबी रिश्तेदारी की बिना पर उसे पनाह दे दी थी), फिर जब आप ﷺ ने सब लोगों को इस्लाम की बैअत के लिए बुलाया तो वह (सय्यिदना उस्मान ﷺ) उस (अब्दुल्लाह बिन अबुसरह) को लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की कि इस की बैअत भी क़ुबूल फरमा लें। रसूलुल्लाह ﷺ ने नज़र मुबारक उठा कर उसको तीन मरतबा देखा मगर सिर मुबारक का इशारा फ़रमाकर (तीनो बार बैअत लेने से) मना फ़रमाया। फिर आख़िरकार बैअत ले ली। मगर फिर (उन दोनों के जाने के थोड़ी देर बाद) रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा किराम ﷺ से इरशाद फ़रमाया: "तुम में कोई एक समझदार आदमी ऐसा नही था जो (सूरते हाल की संगीनी को देखते हुए) उस (अब्दुल्लाह बिन अबुसरह) को क़त्ल कर देता जबकि मैं उसकी बैअत से गुरेज़ कर रहा था।" सहाबा-ए-किराम ﷺ ने अर्ज़ किया:"ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! हमें आप ﷺ की ख्वाहिश का इल्म कैसे हो सकता था (बस एक दफा हमें) आप ﷺ आँख से इशारा फरमा देते!" आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "किसी भी नबी की शायानेशान नही है कि वो आँख से इशारा करे।" (नोट) आँख से इशारा करने का ये अमल हर मुआशरे में एक क़िस्म की ख़यानत समझा जाता है)। **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने अल्लाह तआला के फरमान: "जो कोई कुफ़्र करे अल्लाह तआला के साथ, सिवाए उसके कि जिसे मजबूर किया जाए, तो उसके लिए बड़ा अज़ाब है।"[अल नहल: 106] की तफसीर में फ़रमाया कि इस हुक्म को मंसूख कर दिया गया और फिर अल्लाह तआला ने हुक्म नाज़िल फरमाया: "फिर बेशक़ आप ﷺ का रब बहुत बख्शने वाला मेहरबान है, उन लोगों को जो फितने में डाले गए थे, फिर उन्होंने हिजरत की, फिर जिहाद किया और सब्र किया।"[अल-नहल: 110] सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने फ़रमाया: "सूरह नहल की ये आयत जिसमें शरह सदर होने के बावजूद कुफ़्र करने का ज़िक्र है, ये आयत अब्दुल्लाह बिन अबुसरह के बारे में है जो (सय्यिदना उस्मान ﷺ की तरफ़ से) मिस्र का गवर्नर बनाया गया था। (हालाँकि) ये रसूलुल्लाह ﷺ का कातिब था फिर शैतान ने उसे फुसलाया और ये कुफ्फार से जा मिला तो आप ﷺ ने फ़तह मक्का के दिन इसे क़त्ल करने का हुक्म दिया मगर सय्यिदना उस्मान ﷺ ने (अपनी रिश्तेदारी के सबब सिफ़ारिश करके) इसे पनाह दिलवा दी थी।" **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷺ के मोअज़्ज़िन सय्यिदना इक़रा ताबई ﷺ बयांन करते हैं कि सय्यिदना उमर ﷺ ने मुझे एक पादरी के पास भेजा और फिर उसे सय्यिदना उमर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर किया गया। सय्यिदना उमर ﷺ ने उससे पूछा: "क्या मेरा ज़िक्र तुम्हारी किताब में मौजूद है?" उसने अर्ज़ किया: "जी हाँ!" फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे बारे में क्या लिखा है?" उसने अर्ज़ किया: "एक क़रन!" (ये सुनकर) आप ﷺ ने उस पर (मारने के लिए) दुर्रा तान लिया फिर पूछा: "किस क़िस्म का क़रन?" उसने अर्ज़ किया: "शदीद मज़बूत और सख्त अमानतदार" आप ﷺ ने पूछा: "मेरे बाद आने वाले (ख़लीफा) का ज़िक्र किन अल्फ़ाज़ में है?" उसने अर्ज़ किया: "उसका ज़िक्र ये है कि वह ख़लीफा तो नेक होगा, मगर वह अपने रिश्तेदारों को तरजीह देगा।" सय्यिदना उमर ﷺ ने (ये सुनकर) तीन बार दुआ की: "अल्लाह उस्मान पर रहम करे।" (नोट: सय्यिदना उमर ﷺ उस पेशगोई को समझ गए क्योंकि उन्हे मुन्दर्जा बाला (उपरोक्त) सहीहुल असनाद अहादीस में आए वाक़ियात की रौशनी में सय्यिदना उस्मान ﷺ की ये बशरी कमज़ोरी ख़ूब मालूम थी) सय्यिदना उमर ﷺ ने फिर सवाल किया: "उस (सय्यिदना उस्मान ﷺ) के बाद आने वाले का क्या ज़िक्र है?" उसने अर्ज़ किया: " वह तो लोहे में लिपटा रहेगा। (यानी जंगों में मसरूफ रहेगा)" (ये सुनकर) सय्यिदना उमर ने अपना हाथ उस के सिर पर रखा और फ़रमाया: "ऐ नालायक़! ऐ नालायक़! (ये क्या कह रहा है?)" उसने अर्ज़ किया: "ऐ अमीरुल मोमिनीन! बेशक़ वह (यानी सय्यिदना अली ﷺ) एक नेकसीरत ख़लीफा होगा, लेकिन उसके ख़लीफा बनाए जाने के वक़्त तलवार मियान से निकाली जा चुकी होगी और खून बहाया जा रहा होगा (यानी मुसलमानों में आपस में ख़ानाजंगी(ग्रहयुद्ध) शुरू हो चुकी होगी)। **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुबकर ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक

दिन (सहाबा किराम ؓ से) पूछा: "क्या तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है ?" एक शख्स ने अर्ज़ किया: "जी हाँ! मैंने ये देखा है कि आसमान से एक तराज़ू उतरा है, जिसमें आप ﷺ और सय्यिदना अबुबकर ؓ को तोला गया तो आप ﷺ भारी निकले, फिर सय्यिदना उमर ؓ और सय्यिदना अबुबकर ؓ को आपस में तोला गया तो सय्यिदना अबुबकर ؓ भारी साबित हुए, फिर सय्यिदना उमर ؓ और सय्यिदना उस्मान ؓ का वज़न किया गया तो सय्यिदना उमर ؓ का वज़न ज्यादा निकला, फिर वह तराज़ू (आसमान की तरफ़) उठा लिया गया।" (ये सुन कर) हमने देखा कि आप ﷺ के चेहरा अनवर पर नागवारी के असरात ज़ाहिर हो गए। (यानी शहादते उमर ؓ के बाद मामलात में तगय्युर आने लगेगा)।

[सुनन नसाई: 4072 और 4074, सुनन अबुदाऊद: 4656, जामेअ तिरमिज़ी:2287]

[سنن نسائی : 4072 اور 4074 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

[سنن ابی داؤد : 4656 ، قال الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح ، جامع ترمذی : 2287 ، قال الامام الترمذی و الشیخ الالبانی : اسنادہ صحیح]

16 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ का बयान है कि एक शख्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया: मैंने आज रात ख़्वाब में देखा कि एक छतरीनुमा बादल से घी और शहद टपक रहा है और लोग उसे अपनी हथेलियों में समेट रहे हैं, कोई ज़्यादा और कोई कम ले रहा है, फिर अचानक एक रस्सी देखी जो ज़मीन से आसमान तक तनी हुई थी। फिर मैंने आप ﷺ को देखा कि उस रस्सी को पकड़ कर ऊपर चढ़ गए। फिर आप ﷺ के बाद एक और आदमी उसी रस्सी को पकड़ कर ऊपर चढ़ गया, फिर उस के बाद एक दूसरे शख्स ने उसी रस्सी को पकड़ा और ऊपर चढ़ गया, फिर एक तीसरे शख्स ने उसी रस्सी को पकड़ा तो वह रस्सी टूट गई फिर उस रस्सी को उस शख्स के लिए जोड़ दिया गया। (ये ख़्वाब सुनकर) सय्यिदना अबुबकर ؓ ने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह ताआला के रसूल ﷺ ! मेरे मां बाप आप ﷺ पर क़ुर्बान, मुझे इस (ख़्वाब) की ताबीर बयान करने की इजाज़त दीजिए।" आप ﷺ ने फ़रमाया: "ठीक है ताबीर करो।" सय्यिदना अबुबकर ؓ ने अर्ज़ किया: "बादल से मुराद इस्लाम है और उस से टपकने वाला घी और शहद, क़ुरआन और उसकी शीरीनी है जिसे कोई ज़्यादा और कोई थोड़ा हासिल कर रहा है। और आसमान से ज़मीन तक लटकने वाली रस्सी, वह दीन है जिस पर आप ﷺ क़ायम हैं। आप ﷺ उसे थामे रखेंगे हत्ता कि अल्लाह ताआला आप ﷺ को उठा लेगा। फिर आप ﷺ के बाद एक और शख्स (यानी सय्यिदना अबुबकर ؓ) उसे थाम लेगा और फिर उसे भी ऊपर उठा लिया जाएगा। फिर एक दूसरा शख्स (यानी सय्यिदना उमर ؓ) उसे थाम लेगा और फिर उसे भी ऊपर उठा लिया जाएगा। फिर एक तीसरा शख्स (यानी सय्यिदना उस्मान ؓ) उसे थमेगा तो वह रस्सी टूट जाएगी। मगर फिर उस रस्सी को उस (यानी सय्यिदना उस्मान ؓ) के लिए जोड़ दिया जाएगा। (यानी सय्यिदना उस्मान ؓ की शहादत उनके लिए कफ्फ़ारा बन जाएगी) फिर वह भी उसे थाम कर ऊपर चढ़ जाएगा।" सय्यिदना अबुबकर ؓ ने ताबीर बयान करने के बाद अर्ज़ किया: " ऐ अल्लाह ताआला के रसूल ﷺ ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान (बताइए कि) मैंने दुरुस्त ताबीर की या ग़लत?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे कसम मत दो" (आप ﷺ ने इस ताबीर को हिकमत की वजह से बयान नहीं फ़रमाया लेकिन बाद में होने वाले हालात ने उस हकीक़त को वाज़ेह कर दिया।) **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु मूसा अशअरी ؓ का बयान है कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह मदीना मुनव्वरा के किसी बाग़ में था और रसूलुल्लाह ﷺ के दस्ते मुबारक में एक छड़ी थी जिसे आप ﷺ पानी और मिटटी में मार रहे थे। (इसी दौरान) एक शख्श ने दरवाज़े पर आकर बाग़ में दाख़िल होने की इजाज़त मांगी। आप ﷺ ने फ़रमाया: "दरवाज़ा खोल दो और उस (आने वाले) को जन्नत की बशारत दे दो।" चुनांचे मैं गया तो वह (आने वाले) सय्यिदना अबुबकर ؓ थे। मैंने दरवाज़ा खोल दिया और उन्हें बशारत दे दी। फिर एक और शख्स ने दरवाज़ा पर आकर बाग़ में दाख़िले की इजाज़त मांगी। तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "दरवाज़ा खोल दो और उस (आने वाले) को भी जन्नत की बशारत दे दो। मैंने जाकर दरवाज़ा खोला तो वह सय्यिदना उमर ؓ थे। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया और उन्हें भी जन्नत की बशारत की ख़ुशख़बरी दे दी। फिर एक शख्स ने दरवाज़े पर आकर बाग़ में दाखिले की इजाज़त मांगी। आप ﷺ टेक लगाकर तशरीफ़ फरमा थे, (इस बार) उठ कर बैठ गए और फ़रमाया: "दरवाज़ा खोल दो और उसे (भी) जन्नत की बशारत दे दो मगर उसे एक बड़ी मुसीबत पहुँच कर रहेगी।" चुनांचे मैंने जाकर दरवाज़ा खोल दिया तो वह सय्यिदना उस्मान ؓ थे मैंने बशारत भी दी और (आप ﷺ की बयान करदा) बात भी सुना दी। (वह बात सुनकर) सय्यिदना उस्मान ؓ ने कहा: "मैं अल्लाह ताआला ही से मदद चाहता हूँ।" **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अदी बिन ख़यार ؓ का बयान है कि मैं मुहासरे (जो बाग़ियों ने हज़रत उस्मान ؓ का किया था) के दौरान सय्यिदना उस्मान ؓ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि (ऐ अमीरुल मोमिनीन!) बेशक हमारे इमाम तो आप ؓ हैं (लेकिन) आप ؓ पर जो मुसीबत आई है वह आप ؓ के सामने ही है। आजकल हमें (मस्जिदे नबवी ﷺ में) फ़ितनों का सरगन नमाज़ पढ़ा रहा है जिस की वजह से हमें तंगी महसूस होती है (कि उस बिदअती इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ कर हम भी कहीं गुनाहगार न हो जाएं !) सय्यिदना उस्मान ؓ ने फ़रमाया: "नमाज़ लोगों के आमाल में से सबसे बेहतरीन अमल है, इसलिए जब लोग कोई अच्छा अमल करें तो तुम भी उन (बिदअतियों और बाग़ियों) के साथ शरीक हो जाओ। और जब वह बुराई करने लगें तो उस से

अलग हो जाओ।” **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना मुरतह बिन काअब ؓ का बयान है की एक मरतबा रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़ितनों का ज़िक्र किया और उन (फ़ितनों) के बहुत जल्द वुक़ूअपज़ीर (प्रकट) होने की तवक्को (आशंका) भी ज़ाहिर की। (इसी दौरान) एक शख्स कपड़े में लिपटा हुआ वहां से गुज़रा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये शख्स उस (फ़ितनों वालों) दिन राहे हिदायत पर होगा।” सय्यिदना मुरतह बिन काअब ؓ का बयान है कि मैं उठ कर उस (कपड़े में लिपटे हुए शख्स) के पास गया तो देखा कि वह उस्मान बिन अफ्फान ؓ थे। फिर मैं ने आप ﷺ के क़रीब आकर पूछा कि क्या यही वह शख्स है? (जिस के राहे हिदायत पर होने की खबर आप ﷺ ने दी है) तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “हाँ!” **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुसहल ताबई ؒ का बयान है कि सय्यिदना उस्मान बिन अफ्फान ؓ ने मुहासरे (जो बागियों ने हज़रत उस्मान ؓ का किया था) वाले दिन फ़रमाया: “रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से (मुसीबत के वक़्त सब्र करने पर) एक अहद लिया था जिस पर सब्र के साथ हूँ।” **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ؓ और सय्यिदना अबुहुरैरा ؓ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “एक मुसलमान को जो भी तकलीफ, दर्द, रंज व गम लाहक़ होता है हत्ता कि उसे जो काँटा भी चुभता है तो अल्लाह ताआला उस (तकलीफ को बर्दाश्त करने) के एवज़ उस के गुनाहों को माफ़ फरमा देता है।” **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु हुरैरा ؓ का बयान है कि जब ये आयत नाज़िल हुई: مَن يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ “जो शख्स कोई भी बुराई करेगा, तो वह उस का बदला भी पाएगा।” [अननिसा :123] [النساء : 123] तो मुसलमानों को शदीद परेशानी लाहक़ हुई। (इस पर) रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “एक दूसरे को हक की तलक़ीन और इस्लाह करते रहो, क्योंकि मुसलमान को पहुँचने वाली हर मुसीबत में गुनाहों का कफ्फारह है, हत्ता कि मामूली सा दुःख और काँटा चुभ जाने पर भी (उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।)” [सहीह बुखारी: 7046, सहीह मुस्लिम: 5928, सहीह बुखारी: 6216, सहीह मुस्लिम: 6212, सहीह बुखारी: 695, जामेअ तिरमिज़ी: 3704 और 3714, सहीह बुखारी: 5641, सहीह मुस्लिम: 6569]

[صحیح بخاری : 7046 ، صحیح مسلم : 5928 ، صحیح بخاری : 6216 ، صحیح مسلم : 6212 ، صحیح بخاری : 695]
[جامع ترمذی : 3704 اور 3711 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح ، صحیح بخاری : 5641 ، صحیح مسلم : 6569]

17 **सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** अकरमा ताबई ؒ का बयान है कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ ने मुझे और (अपने बेटे) सय्यिदना अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ताबई ؒ को हुक्म दिया कि तुम दोनों सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ؓ के पास जाओ और उनसे उनकी (रिवायत की गई एक ख़ास) हदीस सुनो, चुनांचे जब हम उनके पास गए तो वो और उनका भाई अपने बाग़ को सैराब कर रहे थे। हमें देख कर वो (हमारे क़रीब) आ गए और गोठ लगाकर (दिल जमई के साथ) बैठ गए और फिर सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ؓ ने हमसे बयान फ़रमाया: “हम लोग मस्जिद (नबवी की तामीर के लिए) ईंटें एक एक करके उठा रहे थे जबकि सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ (अपने शौक़ और जज़्बे के बाइस एक की बजाए) दो दो ईंटें उठाकर ला रहे थे। (इसी दौरान) रसूलुल्लाह ﷺ जब सय्यिदना अम्मार ؓ के पास से गुज़रे तो (अपने मुबारक हाथों से) उनके सिर मुबारक से गर्द और मिट्टी झाड़ते हुए इरशाद फ़रमाया: “(अफ़्सोस!) अम्मार ؓ की कमबख़्ती! (नोट: ये अरब का मुहावरा था) इसे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा, अम्मार ؓ तो उन्हें जन्नत की तरफ़ बुला रहा होगा जबकि वो लोग अम्मार को आग की तरफ़ बुला रहे होंगे।” सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ؓ का बयान है कि सय्यिदना अम्मार ने दुआ की: “ऐ अल्लाह तआला मैं उस फ़ितने से तेरी पनाह मांगता हूँ।”

[सहीह बुखारी: 2812 और 447, सहीह मुस्लिम: 7320] [صحیح بخاری : 2812 اور 447 ، صحیح مسلم : 7320]

18 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना कुल्सूम ताबई ؒ का बयान है कि हम वासित (जो इराक़ का एक शहर है) में सय्यिदना अबुल आला ताबई ؒ के पास बैठे थे कि अचानक वहां एक शख़्स को देखा जिनका नाम था: “सय्यिदना अबुल ग़ादिया ؓ ” उन्होंने पानी मांगा तो एक चांदी के नक़्श व निगार वाले बर्तन में उनके लिए पानी लाया गया मगर उन्होंने पानी पीने से इंकार कर दिया और फिर रसूलुल्लाह ﷺ का ज़िक्र करते हुए (बड़ी हसरत के साथ) बयान फ़रमाया कि आपने हम से ये इरशाद फ़रमाया था: देखना मेरे बाद दोबारा काफ़िर ना बन जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लग जाओ।” फिर सय्यिदना अबुल ग़ादिया मज़ीद फ़रमाने लगे की एक मौक़े पर मैंने एक शख़्स को देखा कि वो फ़लां (मेरी एक महबूब शख़्सियत) का तज़्किरा (वर्णन) बुराई के साथ कर रहा था, तो मैंने कहा अल्लाह तआला की क़सम ! अगर लश्कर में तू मेरे हत्थे चढ़ गया (तो तुझ से निमट लूंगा)। फिर जब जंग सिफ़्फ़ीन का दिन बरपा हुआ तो अचानक वही शख़्स मुझे (मैदाने जंग में) मिल गया। उसने ज़िरह पहन रखी थी, मुझे ज़िरह में एक शगाफ़ (छिद्र) नज़र आ गया तो मैंनें ताक लगाकर नेज़ा मारा और उसे मार डाला। लेकिन फिर मुझे पता चला कि वो (मक़्तूल शख़्स तो) सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ थे (यानी उस वक़्त तक सय्यिदना अबुलग़ादिया ؓ ख़ुद भी सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ के अहम मरतबे से नावाक़िफ़ थे)। फिर सय्यिदना अबुलग़ादिया ؓ ख़ुद से मुख़ातिब हुए और कहा (ताज्जुब है कि) एक तरफ़ तो इन हाथों ने चाँदी के बर्तन में पानी पीने को तो पसंद नही किया और दूसरी तरफ़ सय्यिदना अम्मार बिन यासिर को क़त्ल कर डाला। (نعوذ باللہ من ذلک) **मुस्नद अहमद की ही एक और हदीस में है कि** सय्यिदना मुहम्मद बिन अम्र ताबई ؒ का बयान है कि जब सय्यिदना अम्मार बिन

यासिर ؓ क़त्ल हुए तो सय्यिदना अम्र बिन हज़म ؓ , हज़रत अम्र बिन आस के पास आए और कहा कि सय्यिदना अम्मार क़त्ल हो गए हैं और (याद करो कि) रसूलुल्लाहﷺ ने ये पेशगोई फ़र्माई थी: "उन (सय्यिदना अम्मार ؓ) को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा। " ये सुनकर हज़रत अम्र बिन आस फ़ौरन घबराकर खड़े हो गए और मुसलसल "إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعون" पढ़ते हुए हज़रत मुआविया बिन अबुसुफ़्यान ؓ के पास आए। हज़रत मुआविया ؓ ने (उन्हें घबराया हुआ देखकर) पूछा "क्या हुआ ?" हज़रत अम्र बिन आस ؓ ने उन्हें जवाब दिया: "सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ क़त्ल हो गए हैं।" हज़रत मुआविया ؓ ने पूछा "हज़रत अम्मार बिन यासिर ؓ क़त्ल हो गए हैं तो फिर क्या हो गया ?" ये सुनकर हज़रत अम्र बिन आस ؓ ने कहा कि मैंनें ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "उन (सय्यिदना अम्मार ؓ) को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।" इस पर हज़रत मुआविया ने (ग़ुस्से में आकर) कहा: "तुम अपने ही पेशाब में फिसल जाओ" उन (सय्यिदना अम्मार ؓ) को हमने क़त्ल किया ? (फिर हज़रत मुआविया ने इस वाज़ेह ग़लती की तावील करते हुए कहा) उन्हें तो सय्यिदना अली बिन अबुतालिब और उनके साथियों ने क़त्ल किया है कि उनको अपने साथ लाए और लाकर हमारे नेज़ों के आगे डाल दिया। (نعوذ بالله من ذلك)। **मुस्नद अहमद और अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** इन्ही हज़रत अम्र बिन आस को जब सय्यिदना अम्मार बिन यासिर के क़त्ल की ख़बर दी गई तो उन्होंने फ़रमाया कि मैंनें ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "उन (सय्यिदना अम्मार ؓ) का क़ातिल और उन का सामान (माले ग़नीमत के तौर पर) लूटने वाला जहन्नम में जाएगा।" (نعوذ بالله من ذلك) किसी ने पूछा कि ख़ुद आप भी तो उन (सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ) से लड़ने वाले गिरोह में शामिल हैं ? (तो हज़रत अम्र बिन आस ؓ ने भी इस वाजेह ग़लती की तावील करते हुए) कहा: "रसूलुल्लाहﷺ ने तो सिर्फ़ क़ातिल और सामान लूटने वाले (के लिए ही जहन्नम रसीद होने) का ज़िक्र किया था।" (نعوذ بالله من ذلك)

[मुस्नद अहमद:16744, 17813 और 17811 अलमुसतदरकलिलहाकिम:5661, अलसिलसिलातुस्सहीहा:2008]

[مسند احمد : 16744 (جلد - 4 ، صفحہ - 76) ، قال الشیخ زبیر علیزئی و الشیخ شعیب الارنووط : اسنادہ صحیح]

[مسند احمد : 17813 (جلد - 4 ، صفحہ - 199) اور 17811 (جلد - 4 ، صفحہ - 198) ، قال الشیخ شعیب الارنووط : اسنادہ صحیح]

[المستدرک للحاکم : 5661 ، قال الامام حاکم و الذھبی : اسنادہ صحیح علیٰ شرط البخاری و مسلم ، السلسلۃ الصحیحۃ : 2008 ، قال الشیخ الالبانی : اسنادہ صحیح]

19 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना इब्ने शमासा ताबईؒ का बयान है कि हम हज़रत अम्र बिन आस ؓ के पास आए जबकि वो नज़अ के आलम में थे, वो काफ़ी देर तक रोते रहे और अपने चेहरा दीवार की तरफ़ फ़ेर लिया। (ये देखकर) उनके बेटे ने कहा: अब्बा जान! आपको तो रसूलुल्लाहﷺ ने फ़लां बशारत दी थी, फ़लां ख़ुशख़बरी दी थी। हज़रत अम्र बिन आस ؓ ने हमारे तरफ़ रुख़ फ़ेर कर कहा "हम सहाबा ؓ (बशारतों से भी बढ़कर) ज़्यादा अफ़ज़ल अमल لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ की गवाही देने को ख़्याल करते थे। (ऐ मेरे बेटे !) मेरी ज़िन्दगी में 3-अद्वार गुज़रे हैं। पहले (दौर-ए-जहालत में) मेरा यह हाल था कि मुझ से बढ़कर कोई और शख़्स रसूलुल्लाहﷺ से ज़्यादा नफ़रत रखने वाला नहीं था और मेरी ये शदीद ख़्वाहिश थी कि मेरा बस चले तो मैं आपको क़त्ल कर डालूं। (نعوذ بالله من ذلك) अगर मैं उसी दौर में मर जाता तो यक़ीनन जहन्नमी होता। फिर (मेरी ज़िन्दगी का दूसरा दौर उस वक़्त आया) जब अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इस्लाम (की मुहब्बत को) डाल दिया, तो मैं रसूलुल्लाहﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की "आपﷺ अपना हाथ मुबारक बढ़ाइए, मैं बैअत करना चाहता हूँ। आपने अपना दायां हाथ मुबारक आगे दराज़ फ़रमाया तो मैंनें अपना हाथ (पीछे) खींच लिया। आपﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अम्र! ये क्या हरकत है ? मैंने अर्ज़ किया कि मैं (क़बूले इस्लाम से पहले) शर्त आइद करना चाहता हूँ। आपनेﷺ ने फ़रमाया क्या शर्त है ? मैंने अर्ज़ किया: मुझे (अपने गुज़िश्ता गुनाहों की) माफ़ी चाहिए, आपनेﷺ फ़रमाया: "क्या तुझे इल्म नहीं कि इस्लाम लाने से पिछले तमाम गुनाह मिट जाते हैं और हज करने से भी पिछले तमाम गुनाह मिट जाते हैं। (फिर मैंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो) उसके बाद आपसेﷺ बढ़कर मुझे कोई और महबूब नही रहा और ना ही मेरी निगाहों में कोई और आपसेﷺ ज़्यादा मुआज़्ज़िज़ (आदरणीय) नही रहा। मैं आपﷺ की ताज़ीम (आदर) के बाईस (कारण) कभी भी आपको आँख भर के नही देख सका। और (मेरी हालत यहां तक हुई कि) अगर मुझसे आपकाﷺ हुलिया मुबारक बयान करने को कहे तो मैं बयान नही कर सकूंगा क्योंकि मैंने आपﷺ को कभी नज़र भर के देखा ही नहीं था। इस (दूसरे) दौर में अगर मुझे मौत आ जाती तो उम्मीद थी कि मैं अहले जन्नत में से होता। फिर (मेरी ज़िंदगी का तीसरा दौर उस वक़्त आया) जब आपके बाद हमें कई ऐसे मामलात (हुक्मरानी से मुताल्लिक़) दरपेश हुए कि अब मुझे इल्म नहीं कि मैं उनमें कैसा रहा हूँ (यानी बरहक़ या नाहक़)। अब जबकि मैं मर जाऊं तो (रस्म के तौर पे) मेरे (जनाज़े के) साथ कोई नौहा करने वाली या आग उठाने वाली ना जाए। फिर जब तुम मुझे दफ़न कर चुको तो मेरी क़ब्र पे (सुन्नत के मुताबिक़ पानी) छिड़काव करना और मेरी क़ब्र पर इतनी देर ठहर जाना कि जितना वक़्त एक ऊँट ज़िबह करके उस का गोश्त बांटने में लगता है ताकि अपनी क़ब्र पर तुम्हारी मौजूदगी के बाईस घबराहट से महफ़ूज़ रहूँ और अपने रब्बे करीम के भेजे हुए (फ़रिश्तों) से हम कलाम हो सकूं (यानी क़ब्र के सवालात के जवाबात में मुझे इस्तिक़ामत नसीब हो सके)।" **मुस्नद अहमद की हदीस में है:** जब हज़रत अम्र बिन आस ؓ की मौत का वक़्त क़रीब आया तो रोने लगे। उनके बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह

बिन अम्र बिन आसؓ ने पूछा: "क्या आप मौत के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ?" तो उन्होंने फ़रमाया: "नहीं अल्लाह तआला की क़सम! बल्कि मैं तो (मौत के) बाद (आने वाले मराहिल) से डरता हूँ। बेटे ने कहा: आपؓ (पूरी ज़िंदगी दीने-इस्लाम की) ख़ैर पर क़ाइम रहे हैं और फिर आपको रसूलुल्लाहﷺ की सोहबत भी हासिल रही और फ़तूहाते शाम (की सआदत) में भी शामिल हुए। इस पर हज़रत अम्र बिन आसؓ ने फ़रमाया: तूने उन (नेकियों) से ज़्यादा अफ़ज़ल अमल (का ज़िक्र) तो छोड़ ही दिया और वो है: لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ की गवाही देना। (ऐ मेरे बेटे !) मेरी ज़िंदगी में 3-अद्वार गुज़रे हैं और मुझे हर दौर में अपने हालात की ख़ूब ख़बर है। शुरू (के पहले दौर) में मैं काफ़िर था और सबसे बढ़कर रसूलुल्लाहﷺ का दुश्मन था, अगर उसी हाल में मर जाता तो मुझ पर दोज़ख़ वाजिब थी। फिर (दूसरे दौर में) जब मैंने आपﷺ की (इस्लाम पर) बैअत कर ली तो मैं सबसे ज़्यादा आपﷺ का अहतराम करने वाला था, हत्ताकि मैंने (उसी आदर के बाइस) आपﷺ को कभी आँख भर कर नहीं देखा और ना ही कभी आपﷺ से किसी मस्अले में बहस की हत्ताकि आप अल्लाह तआला से जा मिले। उस वक़्त (उसी दूसरे दौर में ही अगर) मुझे मौत आ जाती तो लोग यही कहते कि अम्र को मुबारक हो, वो मुसलमान हुआ और ख़ैर पर क़ाइम रहा और फिर मर गया, लिहाज़ा उम्मीद है कि जन्नती होगा। फिर मैं इसके बाद (अपने तीसरे दौर में हज़रत मुआविया ؓ की) बादशाहत में जा मिला और कुछ ऐसे काम हुए (यानी ख़लीफ़ा बरहक़ सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ के ख़िलाफ़ ख़रूज) कि मैं नहीं जानता कि वो ग़लत हैं या सहीह ? अब जबकि मैं मर जाऊं तो (रस्म के तौर पे) मेरे (जनाज़े के) साथ कोई नौहा करने वाली या आग उठाने वाली ना जाए। और मेरा तहबंद अच्छी तरह बांधना क्योंकि मेरे साथ झगड़ा होगा और मुझ पर मिट्टी आहिस्ता डालना (बराबर डालना) क्योंकि मेरा दायां पहलू (यानी नेकियों वाला), मेरे बाएं पहलू (यानी गुनाहों वाले) से मिट्टी का ज़्यादा हक़दार नहीं है। मेरी क़ब्र में लकड़ी या पत्थर ना लगाना और जब तुम मुझे दफ़ना चुको तो मेरी क़ब्र पर इतनी देर ठहर जाना कि जितना वक़्त एक ऊँट ज़िबह करके उसका गोश्त बांटने में लगता है ताकि अपनी क़ब्र पर तुम्हारी मौजूदगी के बाईस सुकून हासिल करूं। " **मुस्नद अहमद की ही एक हदीस में है:** सय्यिदना अबु नौफ़ल ताबईؒ का बयान है कि हज़रत अम्र बिन आसؓ पर मौत के वक़्त सख़्त घबराहट हुई, तो उनके बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आसؓ ने पूछा: "ऐ अबुअब्दुल्लाहؓ ! ये घबराहट क्यों है हालांकि आप तो रसूलुल्लाहﷺ के मुक़र्रिब (निकटवर्ती) थे और आपﷺ आपको ख़ुसूसी ज़िम्मेदारियां भी सौंपा करते थे ?" हज़रत अम्र बिन आसؓ ने फ़रमाया: हां बेटा! ये सब कुछ तो था लेकिन मैं तुम्हें (अपने दिल की) अस्ल बात बताता हूँ: "अल्लाह तआला की क़सम! मुझे ये मालूम नहीं कि (आपﷺ की) ये नवाज़िश मुहब्बत की बिना पर थी या मेरी तालीफ़ क़ल्ब (दिलजोई) के लिए थी। अल्बत्ता मैं तुम्हें गवाही देकर उन दो (ख़ुशक़िस्मत) अफ़राद के बारे में बताता हूँ कि जिनसे रसूलुल्लाहﷺ ताहयात (पूरी ज़िन्दगी) राज़ी रहे। पहले सय्यिदा सुमय्याؓ का बेटा (सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ؓ और दूसरा सय्यिदा उम्मे अब्द का बेटा (सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊदؓ)। फिर जब हज़रत अम्र बिन आसؓ अपनी बात मुकम्मल कर चुके तो उन्होंने अपना हाथ अपनी ठोडी (chin) के नीचे रखा और अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह तआला! तूने हमें हुक्म दिया लेकिन हमने उस (तेरे हुक्म) को छोड़ दिया, और तूने हमें (कुछ कामों से) मना किया लेकिन हम वही काम कर गुज़रे, तेरी मग़्फ़िरत के बग़ैर कोई चारा नहीं।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आसؓ का बयान है: "हज़रत अम्र बिन आसؓ बस इसी दुआ की तकरार करते रहे यहां तक कि कुछ देर बाद आप का इंतक़ाल हो गया।" **मुस्नद अहमद की एक हदीस में है:** सय्यिदना हंज़ला बिन ख़वीलद ताबईؒ का बयान है कि मैं हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियानؓ के पास था कि अचानक वहां दो आदमी सय्यिदना अम्मार बिन यासिरؓ के कटे हुए सिर को लिये झगड़ते हुए आए। उनमें से हर एक का यही दावा था कि उसने उन्हें क़त्ल किया है। (نعوذ باللہ من ذلك)। (ये मंज़र देखकर) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आसؓ ने फ़रमाया: "तुम दोनों (बजाए इस क़त्ल पर फ़ख़्र करने के) इस (दावा-ए-क़त्ल को) अपने साथी के हक़ में ही छोड़ दो क्योंकि रसूलुल्लाहﷺ ने तो इरशाद फ़रमाया था: "उन (सय्यिदना अम्मारؓ) को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।" ये सुनकर हज़रत मुआविया ने (ग़ुस्से में आकर सय्यिदना अब्दुल्लाह अम्र बिन आसؓ के वालिद हज़रत अम्र बिन आसؓ से) कहा: "ऐ अम्र अपने मज्नून (बेटे) से तो हमारी जान छुड़ाओ! और (ऐ अब्दुल्लाह! अगर ऐसा ही है तो) तेरा हमारे साथ क्या काम है ? (यानी हमारे गिरोह से निकल जाओ)। सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आसؓ ने हज़रत मुआवियाؓ को जवाब देते हुए फ़रमाया: "मेरे बाप ने (एक बार) रसूलुल्लाहﷺ से मेरी शिकायत की थी तो आपﷺ ने मुझे हुक्म दिया था कि ज़िंदगी भर अपने बाप की इताअत करते रहना और उसकी नाफ़रमानी नही करना, लिहाज़ा मैं (आपﷺ की उस नसीहत का पास रखते हुए) तुम्हारे साथ तो रहूँगा मगर (ख़लीफ़ा बरहक़ सय्यिदना अलीؓ के ख़िलाफ़) लड़ाई में हिस्सा नहीं लूंगा।" [सहीह मुस्लिम: 321, मुस्नद अहमद:17815,17816, 6929]

[صحیح مسلم : 321 ، مسند احمد : 17815 اور 17816 (جلد - 4 ، صفحہ - 199) ، 6929 (جلد - 2 ، صفحہ - 206) ، قال الشیخ شعیب الارنووط : اسنادہ صحیح]

20 **अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा की एक हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुर्रहमान ताबईؒ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा की तो उन्होंने क़ुनूत नाज़िला पढ़ी जिसमें ये दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह तआला तू ख़ुद

मुआविया और उसके शिया (समर्थकों) से निमट ले, और अम्र बिन आस और उसके शिया (समर्थकों) से निमट ले, और अबुसल्मा और उसके शिया (समर्थकों) से निमट ले।" अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा की हदीस में है: सय्यिदना यज़ीद बिन असिम ताबई बयान करते हैं कि जब सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब से जंगे सिफ़्फ़ीन के मक़्तूलीन के (उख़रवी अन्जाम के) मुताल्लिक़ पूछा गया तो उन्होंने इरशाद फ़रमाया: "(मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि) हमारे और उन (हज़रत मुआविया) के मक़्तूलीन (अवामुन्नास) जन्नत में होंगे और (क़यामत के दिन) बिल आख़िर मामला (फ़ैसला होने के लिए अल्लाह तआला की बारगाह में) मेरे और मुआविया के दरमियान पहुंचेगा।" [अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा: 7050, 37880] [المصنف ابن ابی شیبہ : 7050 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی مقالات جُز - 6 : اسناده صحیح ، المصنف ابن ابی شیبہ : 37880 ، قال الشیخ اِرشاد الحق الاثری : اسناده صحیح]

21 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: "(मेरे बाद ही मेरी उम्मत के) लोग 2 गिरोहों में तक़्सीम हो जाएंगे (यानी सय्यिदना अली और हज़रत मुआविया) फिर इन दोनों (मुसलमानों) गिरोहों के अन्दर ही से एक (तीसरा) फ़िर्क़ा (यानी ख़वारिज का) अलग हो जाएगा और उस अलग हो जाने वाले फ़िर्क़े (ख़वारिज) से वो गिरोह क़िताल करेगा जो उन दोनों गिरोहों (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब और हज़रत मुआविया) में से हक़ के क़रीबतर होगा। (यानी सय्यिदना अली का गिरोह)" [सहीह मुस्लिम:2459] [صحیح مسلم : 2459]

नोट "अक़रब अलल हक़ से मुराद है: "हक़ वाला गिरोह" और दलील इसकी यह है कि क़ुरआन हकीम में ख़ुद अल्लाह तआला ने ग़ज़वह-ए-ओहद के मौक़े पर मुनाफ़िक़ीन के वाज़ेह कुफ़्र के लिए भी "अक़रब" का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया है: [सूरा आले इमरान: 167] चुनांचे इसी ज़िमन में सुनन निसाई लील बैहिक़ी की हदीस में है: सय्यिदना अम्मार बिन यासिर ने फ़रमाया: "मत कहो कि अहले शाम (यानी हज़रात मुआविया के गरोह) ने कुफ़्र किया बल्कि कहो कि उन्होंने फ़िस्क़ (गुहाने कबीरा) किया, या फिर कहो कि (अपनी जानों पर) ज़ुल्म किया।" [सुनन कुबरा लिल बैहक़ी: 16498, इस्नाद सहीह]

22 सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे कि अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुल ख़ुवैसरा तमीमी आया और कहने लगा "ऐ मुहम्मद! इंसाफ़ करो" आपने जलाल में आकर फ़रमाया: "तू बर्बाद हो ! जब मैं ही इंसाफ़ ना करूंगा तो और कौन करेगा? "सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ने अर्ज़ की: मुझे इजाज़त दीजिए कि इस (गुस्ताख़) को क़त्ल कर दूँ।आपने फ़रमाया: रहने दो! इसके कुछ साथी (मुस्तक़्बिल में) ऐसे भी होंगे कि तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ और अपने रोज़े को उनके रोज़े के मुक़ाबले में हक़ीर समझोगे (यानी वो ख़वारिज बहुत ज़्यादा इबादत गुज़ार होंगे) ये लोग दीन में से यूं ख़ारिज हो जाएंगे जैसे तीर अपने हदफ़ से आर पार निकल जाता है और उस तीर के अगले पिछले और दर्मियान किसी भी हिस्से पर कोई निशान नहीं लगा होता और वो गोबर और ख़ून में से साफ़ निकल जाता है। उन ख़वारिज की एक निशानी ये होगी कि उनमें से एक शख़्स का कटा हुआ बाज़ू औरत के पिस्तान जैसा होगा और ये लोग इख़्तिलाफ़ (जो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब और हज़रत मुआविया के दर्मियान हुआ) के वक़्त ज़ाहिर होंगे। सय्यिदना अबुसईद ख़ुदरी फ़रमाते हैं कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह को (ये सब बातें) फ़रमाते हुए सुना था और मैं (ये भी) गवाही देता हूँ कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ने ही उन ख़वारिज को (जंग नहरवान में) क़त्ल किया और मैं भी आप के साथ था और फिर (ख़वारिज के मक़्तूलीन में) एक शख़्स की लाश लाई गई जिसमें वो तमाम अलामात मौजूद थीं जो रसूलुल्लाह ने (पेशगोई) ज़िक्र फ़रमाई थीं। और इसी से मुताल्लिक़ ये आयत भी नाज़िल हुई: وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ "और उनमे से बाज़ आप पर सदक़ात (की तक़्सीम) में ताअन करते हैं। [अत्तौबा: 58] [سورة التوبة: 58] [सहीह बुख़ारी: 6933, सहीह मुस्लिम: 2456][صحیح بخاری: 6933 ، صحیح مسلم: 2456]

23 सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान फ़रमाते हैं कि जब हरौरय (ख़वारिज) का ज़हूर हुआ तो उन्होंने एक अलग जगह को अपना मसकन बना लिया और उनकी तादाद 6000 थी। मैंने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब से अर्ज़ की कि आप नमाज़ (ज़ुहर) थोड़ी ठंडी (यानी मौअख़्ख़िर यानी देर से) कर दें ताकि मैं उन लोगों (ख़वारिज) से गुफ़्त व शनीद कर सकूं। सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ने फ़रमाया: मुझे ख़ौफ़ है कि वो तुम्हें कोई नुक़्सान ना पहुंचाएं। मैंने अर्ज़ की कि क़त्अन ऐसा कोई इम्कान नहीं है। चुनांचे मैंने अच्छा लिबास ज़ेबतन किया और बाल संवारें और उनके पास पहुंच गया। ऐन दोपहर का वक़्त था और वो खाना खा रहे थे। उन्होंने (मुझे देखकर) कहा: मरहबा ऐ इब्ने अब्बास! कहो कैसे आना हुआ ? मैं तुम्हारे पास मुहाजिर व अंसार सहाबा रसूलुल्लाह के चचाज़ाद और दामाद (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब) की तरफ़ से आया हूँ। उन (के हालात) पर क़ुरआन हकीम उतरा, लिहाज़ा क़ुरआन की तफ़्सीर तुम से कहीं बेहतर जानते हैं और तुम में उन जैसा (फ़ज़ीलत वाला) कोई भी मौजूद नहीं। (मेरे आने की ग़र्ज़ ये है कि) मैं तुम्हें उन का मौअक़्क़िफ़ पहुंचा दूँ और तुम्हारा मौअक़्क़िफ़ उन तक पहुंचा दूँ। चुनांचे (ये बात सुनकर) उनमें से बहुत से लोग मेरे पास आ बैठे। मैं (सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास) ने उन (ख़वारिज से) सवाल किया मुझे इस बात की दलील दो कि किस दलील की रौशनी में तुम लोगों ने सहाबा और रसूलल्लाह के चचाज़ाद और दामाद (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब) से दुश्मनी मोल ली है ? उन्होंने कहा: इस इख़्तिलाफ़ की 3 वजूहात हैं। मैंने कहा: वो 3 वजूहात कौन सी हैं ? उनमें से एक ने कहा : पहली बात तो ये है कि उन्होंने (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब) ने अल्लाह तआला के मामले में इंसानों को क़ाज़ी ठहरा लिया है, हालांकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّـهِ "फ़ैसले का इख़्तियार सिर्फ़

अल्लाह तआला को हासिल है।" [अल अनआम :57] लिहाज़ा इस मामले में इंसानों के फ़ैसले से क्या सरोकार ? मैंने कहा : ये एक ऐतराज़ हुआ (यानी अगला ऐतराज़ बताओ ?) उन्होंने दूसरा सबब ये बताया कि उन्होंने (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁) ने (सय्यिदा आयशा ﵂ के गिरोह के साथ जंग जमल और हज़रत मुआविया ﵁ के गिरोह के साथ जंग-ए-सिफ़्फ़ीन में) जंग की मगर ना तो उनके क़ैदियों को लोंडी और ग़ुलाम बनाया और ना ही माले ग़नीमत जमा किया ! अगर वो काफ़िर थे तो उन्हें क़ैदी बनाना भी दुरुस्त था और वो मोमिनीन थे तो सिरे से उनके साथ क़िताल करना भी ग़लत हुआ ! मैंने कहा "ये दो बातें तो हो गईं अब तीसरा ऐतराज़ बताओ ? उन्होंने कहा: उन्होंने (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ ने हज़रत मुआविया ﵁ के साथ मुआहिदे की तहरीर में) अपने नाम से लफ़्ज़ "अमीरुल मोमिनीन" मिटवा दिया है, लिहाज़ा अगर वो अमीरुल मोमिनीन नहीं हैं तो क्या अमीरुल काफ़िरीन हैं ? मैंने कहा: इन तीन इशक़लात के अलावा कोई और ऐतराज़ भी है ? उनहोंने कहा: नहीं यही तीन काफी है मैंने कहा अगर तुम्हें अल्लाह तआला की क़िताब और रसूलल्लाह की सुन्नत से कुछ पेश करूँ जिस से तुम्हारें इशक़लात हल हो जाएं तो मान लोगे ? उन्होंने कहा: जी हां बिल्कुल! मैं (सय्यिदना अब्दुल्लह बिन अब्बास ﵁) ने कहा: तुम्हारा ये ऐतराज़ कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ ने अल्लाह तआला के मामले में इंसानों को क़ाज़ी ठहरा लिया है (और यूं कुफ़्र का इरतक़ाब किया), तो मैं तुम्हें अल्लाह तआला की किताब ही में से दिखा देता हूँ कि अल्लाह तआला ने एक चौथाई दिरहम की मालियत (हक़ीर रक़म) पर फ़ैसला इंसानों के सुपुर्द फ़रमाया है कि वो इसका फ़ैसला कर दें, देखो अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ

"ऐ ईमान वालो! अहराम की हालत में शिकार मत करो और तुम में से जो जानबूझ कर ऐसा कर बैठे तो (उस शिकार) के बराबर किसी जानवर को बतौर क़फ्फारा पेश करे, जिसका फ़ैसला तुम में से 2 मोतबर (विश्वसनीय) अफ़राद करेंगे। [अलमाइदा : 95] [المائدة : 95] अब देख लो कि ये मामूली और छोटा सा फ़ैसला अल्लाह तआला ने बंदों के सुपुर्द फ़रमाया जबकि वो ख़ुद ही फ़ैसला फ़रमा सकता था मगर फिर भी उसने इंसानी फ़ैसले को जाइज़ रखा। मैं तुम्हें अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि (इंसानी फ़ैसले से) उमूरे मुस्लिमीन की इस्लाह करना और अमन की ख़ातिर बाहमी ख़ूनरेज़ी रोकना ज़्यादा अहम और अफ़ज़ल है या (हालते अहराम में शिकार किये गए) ख़रगोश का मामला ज़्यादा ज़रूरी है? उन (ख़्वारिज) ने जवाब दिया: क्यों नहीं! यही (मुसलमानो के दर्मियान सुलह करवाना ही) ज़्यादा अफ़ज़ल है। (फिर मैंने दूसरी दलील देते हुए कहा) अल्लाह तआला ने औरत और उसके शौहर के बारे में फ़रमाया: "अगर तुम्हें उनके दरमियान नाचाकी का ख़ौफ़ हो तो उस (मर्द) की तरफ़ से एक सालिस और उस (औरत) की तरफ़ से एक सालिस मुक़र्रर कर लो। [अननिसा : 35]" मैं तुम्हें अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि (इंसानी फ़ैसले से) उमूरे मुस्लिमीन की इस्लाह करना और अमन की ख़ातिर बाहमी ख़ून रेज़ी रोकना ज़्यादा अहम और अफ़ज़ल है या महज़ एक औरत के इज़्दवाजी मामले को संवारना ज़्यादा अफ़ज़ल है ? उन्होंने कहा: बिल्कुल ठीक ! फिर मैंने कहा : तुम्हारा ये ऐतराज़ कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ ने क़िताल तो किया मगर (फ़रीक़े मुख़ालिफ़ को) जंगी क़ैदी नहीं बनाया और ना (उनके माल से) ग़नीमत हासिल की। मुझे ये बताओ कि क्या तुम अपनी मां उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﵂ को जंगी क़ैदी बनाना चाहते हो ? और दीगर जंगी क़ैदी ख़्वातीन की तरह उन्हें भी अपने लिए हलाल करना चाहते हो जबकि वो तुम्हारी मां हैं ! अगर तुम्हारा जवाब ये हो कि हम उन्हें दीगर क़ैदी औरतों की तरह हलाल जानते हैं तो तुम काफ़िर हो जाओगे और अगर ये कहो किवो तुम्हारी मां ही नहीं तो फिर भी ये कुफ़्र होगा क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया है: "नबी मोमिनीन पर उन की जानों से बढ़कर हक़ रखते हैं और उनकी बीवियां उन (मोमिनीन) की माएँ हैं। [अलअहज़ाब : 6] इस तरह तुम दो बड़ी गुमराहियों में फंस गए और मुझे इनसे निकल के दिखाओ ? दूसरे ऐतराज़ का जवाब मिल गया ? उन्होंने कहा: जी हां! फिर मैंने कहा कि तुम्हारा ये ऐतराज़ कि (चूंकि हज़रत मुआविया ﵁ के ऐतराज़ करने पर, क्योंकि हज़रत मुआविया ﵁ सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ को ख़लीफ़ा नहीं तस्लीम करते थे इसलिए) सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ ने ख़ुद अपने मर्ज़ी से लफ़्ज़ अमीरुल मोमिनीन मिटवा दिया है तो इसका जवाब वो दूँगा जो तुम्हें पसंद होगा। देखो! रसूलुल्लाह ﷺ ने सुलह हुदैबिया में तहरीर कराते वक़्त अपना नाम "मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ " लिखवाया था, जिस पर कुफ़्फ़ार ने ऐतराज़ किया कि सारा झगड़ा ही इसी बात का है कि हम आपको अल्लाह तआला का रसूल नहीं मानते, चुनांचे आपने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ (जो तहरीर लिख रहे थे) से इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली ﵁ ! ये (अल्फ़ाज़) मिटा दो, ऐ अल्लाह तआला तुझे मालूम है कि मैं तेरा रसूल हूँ, ऐ अली ﵁ ! ये लिख दो: "मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह"। (बाक़ी तफ़्सील आगे हदीस नम्बर: 44 के तहत आ रही है)। अल्लाह तआला की क़सम! रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अली ﵁ से कहीं ज़्यादा बेहतर हैं फिर भी उन्होंने लफ़्ज़ "रसूलुल्लाह" को ख़ुद कहकर मिटवा दिया जिससे आप ﷺ की शाने नबुवत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। तीसरे ऐतराज़ का जवाब भी मिल गया ? उन्होंने कहा: जी हां! चुनांचे (इस इल्मी मुबाहसे की बरकत) उनमें से 2000 अफ़राद उसी मौक़े पर ताइब होकर वापस लौट आए जबकि बाक़ी 4000 ख़्वारिज मुजाहिर व अंसार सहाबा के हाथों गुमराही की हालत में मारे गए। [सुनन नसाई अलकुबरा: 8575]

[سنن نسائی الکبریٰ : 8575 ، قال الشیخ غلام مصطفی ظہیر فی خصائص علی : اسنادہ صحیح]

24 **अल मुसन्नफ़ इब्ने अबिशैबा की हदीस में है:** सय्यिदना तारिक़ बिन शहाब ताबईؒ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब रَضِيَ اللهُ के पास था तो उन से सवाल किया गया कि अहले नहरवान (यानी ख़्वारिज) मुशरिकीन हैं? आप رَضِيَ اللهُ ने फ़रमाया कि (नहीं) शिर्क से तो वो भागे हैं (यानी मस्अला तहकीम पर उन्होंने तौहीद का ही तो बहाना बनाया था तो वो मुशरिक क्यों कर हो सकते हैं)। फिर पूछा गया तो क्या वो मुनाफ़िक़ हैं ? फ़रमाया नहीं! मुनाफ़िक़ीन तो अल्लाह तआला को बहुत ही कम याद करने वाले होते हैं (यानी ख़्वारिज तो हद से ज़्यादा इबादत गुज़ार हैं तो वो मुनाफ़िक़ क्यों कर हो सकते हैं)" फिर पूछा गया कि आखिर वो (ख़्वारिज) क्या है सय्यिदना अली رَضِيَ اللهُ ने फ़रमाया: "ये (हमारे) ऐसे लोग है जिन्होंने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की है (सिर्फ़ बाग़ी हैं मुशरिक या मुनाफ़िक़ नहीं) **सुनन अलकुबरा (बैहक़ी) की हदीस में है:** सय्यिदना नाफ़ेअ ताबईؒ बयान करते हैं कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ खशबया (خشبيه मुख्तार सक़्फ़ी के गिरोह के लोगों) और ख़्वारिज को सलाम कहा करते थे हालांकि वो (मुसलमानों से) बरसरे क़िताल रहते थे। सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ फ़रमाया करते: "जो حي على الصلاة कहकर नमाज़ के लिए बुलाएगा मैं उसकी दावत क़बूल करूंगा (यानी उसके पीछे नमाज़ पढ़ूंगा) और حي على الفلاح कहकर बुलाएगा मैं उसकी पुकार पर भी لَبَّيْكَ कहूँगा (यानी उसके पीछे नमाज़ पढ़ता रहूँगा)। मगर जो ये कहेगा की आओ मुसलमान भाईयों से जंग करें और उनका माल लूटें तो फिर मैं इनकार ही करूंगा।"
[अल मुसन्नफ़ इब्ने अबिशैबा: 37942, सुनन अलकुबरा बैहक़ी: 5088]
[المصنف ابن ابی شیبه : 37942 اسناده صحیح ، سنن الکبریٰ للبیهقی : 5088 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی مقالات جُز - 1 : اسناده صحیح]

25 **अलमुसतदरकलिलहाकिम और सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अम्मार बिन यासिर رَضِيَ اللهُ बयान फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा ज़िलअशीरा के दौरान मैं और सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब رَضِيَ اللهُ सफ़र में साथ थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने वहां पड़ाव डाला और (कुछ देर) मुक़ीम रहे। इसी दौरान हमने बनी मदलज के कुछ लोगों को खजूर के बाग़ात में काम करते देखा तो सय्यिदना अली رَضِيَ اللهُ और मैं उनके पास आए और कुछ देर तक उनका काम देखते रहे, फिर हम पर नींद ग़ालिब आ गई तो हम दोनों जाकर खजूर के छोटे पौधों में मिट्टी पर लेट कर सो गए। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ही ने आकर अपने पाव मुबारक से हमें हिलाकर बेदार फ़रमाया और हमारी हालत ये थी कि हम गर्द से ख़ूब आलूदा हो चुके थे। (इस मौक़े पर) रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली رَضِيَ اللهُ से फ़रमाया: "ऐ अबुतुराब (यानी मिट्टी वाले) उठो! फिर फ़रमाया: "मैं तुम दोनों को सब इंसानों से बढ़कर दो बदबख़्त अफ़राद के बारे में ना बताऊं? "हमने अर्ज़ किया ज़रूर बताइए। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "(पहला बदबख़्त तो वो) क़ौमे समूद का अहीमर नामी शख़्स था जिसने ऊंटनी की कोंचें काट डाली थी और दूसरा (बदबख़्त) वो शख़्स है जो ऐ अली رَضِيَ اللهُ ! तुम्हारे सिर पर तलवार से ज़रब लगाएगा और तुम्हारी ढाढ़ी को उस (निकलने वाले) ख़ून से रंग देगा।" **[अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4679, अससिलसिलातुस्सहीहा:1743, सुनन नसाई अलकुबरा: 8538]**
[المستدرک للحاکم : 4679 ، قال الامام حاکم و الامام الذهبی : اسناده صحیح علی شرط مسلم ، السلسلة الصحیحة : 1743 ، قال الشیخ الالبانی : اسناده صحیح]
[سنن نسائی الکبریٰ : 8538 ، قال الشیخ غلام مصطفی ظهیر فی خصائصِ علی تحت الحدیث 8538 : اسناده صحیح]

नोट चौथे खलीफा राशिद सय्यिदना अली رَضِيَ اللهُ की ख़िलाफ़त एक आख़िरी कोशिश थे कि सय्यिदना अबुबकर رَضِيَ اللهُ और सय्यिदना उमर رَضِيَ اللهُ कि उसी ख़िलाफ़त रशिदा महफ़ूज़ा को दोबारा बहाल कर दिया जाता कि जिस को तीसरे ख़लीफ़ा राशिद सय्यिदना उस्मान رَضِيَ اللهُ के दौरे ख़िलाफ़त में (सय्यिदना उस्मान رَضِيَ اللهُ ने खुद तो नहीं बल्कि उनके चंद रिश्तेदार) बनू उमय्या के शरीर गवर्नरों ने अमली तौर पर ख़िलाफ़त रशिदा मफतून बना दिया था और सहीहुलअसनाद अहादीस में इन फ़ितनो की पेशगोई भी पहले से मौजूद थी। लेकिन सय्यिदना अली رَضِيَ اللهُ की शहादत के बाद कौमे समूद की तरह इस उम्मत पर भी मलूकियत का अजाब मुसल्लत हो गया जो आज तक किसी न किसी शक्ल में बाक़ी है। चुनाँचे इसी ज़िमन में **अल्मुस्तद्रिक अल हाकिम और मज्मउज़ ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिद्ना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ फ़रमाया करते: "मुझे पूरी ज़िन्दगी किसी भी चीज़ का इतना अफ़सोस नहीं है जितना इस बात पर कि मैं ने सय्यिद्ना अली رَضِيَ اللهُ के साथ मिलकर (क़ुरआनी हुक्म: अन निसा:59 और अल हुजरात:9 के मुताबिक़) बाग़ी गरोहों के ख़िलाफ़ जंग (जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान) नहीं की।" **[अल मुस्तद्रिक अल हाकिम: 6360, मजमउज़ ज़वाइद: 12054]**
[المُستدرک لِلحاکم : 6360 ، قال الامام حاکم : اِسناده صحیح ، مجمع الزوائد : 12054 ، قال الامام الهیثمی : اِسناده صحیح]

C रसूलल्लाह ﷺ ने अपनी वफ़ात से एक महीना क़ब्ल मुस्तक़्बिल होने वाले हकूमती बिगाड़ से मुताल्लिक़ ग़ैब्बी ख़बरें दे दीं थीं !

26 **सहीह बुखारी की हदीस में है:** सय्यिदना उक्बा बिन आमिर رَضِيَ اللهُ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने 8 साल बाद (यानी अपनी वफ़ात वाले साल 11 हिजरी में) उहद के शहीदों का जनाज़ा (उहद के मैदान के कब्रिस्तान में) पढ़ा (और आप ﷺ का अंदाज़ यूं था कि) गोया आप ज़िंदों और मुर्दों हर एक से रुख्सत होने वाले हैं। फिर आप ﷺ मिम्बर पर चढ़े और फ़रमाया: "मैं तुम्हारा पेश रो हूँ और मैं तुम पर गवाह भी हूँ और (आइंदा) तुम्हारी और मेरी मुलाक़ात हौज़ (कौसर) पर होगी, जिसे मैं यहीं से इस वक़्त देख रहा हूँ। मुझे (अपने बाद) तुम्हारे मुताल्लिक़ ये ख़ौफ़ नहीं कि तुम मुशरिक हो जाओगे लेकिन इस बात से डरता हूँ कि दुनिया में मगन हो जाओगे।"

सय्यदना उक्बा ؓ का बयान है कि उस मौक़े पर मैंने आपﷺ को आख़री बार देखा। **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना उक्बा बिन आमिर ؓ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने मक़्तूलीन ए उहद का जनाज़ा पढ़ा और फिर मिम्बर पर चढ़े इस अंदाज़ से कि गोया ज़िंदों और मुर्दों को अलविदा कहने वाले हों फिर आपﷺ ने फ़रमाया: "मैं हौज़ (कौसर) पर तुम्हारा पेशरो हूँ और उस (हौज़े कौसर) की चौड़ाई ऐला और जअफ़ा (की दर्मियानी मसाफ़त) के बराबर है, मुझे ये ख़ौफ़ बिल्कुल नहीं कि तुम (यानी सहाबा किराम ؓ) मेरे बाद शिर्क करने लग जाओगे मगर डर इस बात का है कि तुम दुनिया के मुश्ताक़ बन जाओगे और (दुनिया की ख़ातिर) आपस में क़िताल करोगे और बिल आख़िर हलाक हो जाओगे जिस तरह तुम से पहले के लोग हलाक हो चुके हैं।" सय्यिदना उक्बा ؓ का बयान है: "उसी मौक़े पर मैंने आख़री बार मिम्बर पे आपका दीदार किया था।" [सहीह बुख़ारी: 4042, सहीह मुस्लिम: 5977][صحیح بخاری : 4042 ، صحیح مسلم : 5977]

27 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान फ़रमाते हैं कि (फ़तह मक्का पर जब अबुसूफ़ियान ؓ ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो) मुसलमान ना तो हज़रत अबुसूफ़ियान ؓ की तरफ़ देखते थे ना ही उनके साथ बैठते थे (क्योंकि हज़रत अबुसूफ़ियान ؓ ने इस्लाम लाने से पहले पूरी ज़िंदगी मुसलमानों से जंगें कीं और मुसलमानों को तकालीफ़ दी थीं)। चुनांचे हज़रत अबुसूफ़ियान ؓ ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरख़्वास्त की कि आपﷺ मेरी 3 बातें पूरी फ़रमा दें। आप ﷺ ने फ़रमाया : ठीक है । चुनांचे हज़रत अबुसूफ़ियान ؓ ने अर्ज़ की मेरी बेटी सय्यिदा उम्मे हबीबा ؓ से निकाह फ़रमा लें। आप ﷺ ने फ़रमाया ठीक है, फिर उन्होंने अर्ज़ की कि आपﷺ मुझे हुक्म दे कि मैं अब कुफ्फार के साथ भी लड़ूं जैसा कि पहले मुसलमानों के साथ लड़ता रहा | आपﷺ ने फ़रमाया ठीक है फिर अर्ज़ किया कि आपﷺ मेरे बेटे मुआविया को अपना क़ातिब (लिखाई करने वाला) मुक़र्रर फ़रमा लें। आपﷺ ने फ़रमाया ठीक है। इस हदीस के रावी सय्यिदना अबुज़मील ताबई ؒ का बयान है कि अगर हज़रत अबुसूफ़ियान ؓ ख़ुद रसूलुल्लाहﷺ से दरख़्वास्त ना करते तो आपﷺ कभी भी हज़रत अबुसूफ़ियान ؓ को ये (सम्मान) अता नही फ़रमाते। क्योंकि आपकी आदत मुबारका थी कि जब भी कोई आप से किसी शै(वस्तु) से मुताल्लिक़ सवाल करता तो आप कभी इन्कार नहीं फ़रमाते थे। **सहीह मुस्लिम की ही एक और हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि रसूलुल्लाहﷺ तशरीफ़ लाए तो मैं दरवाज़े के पीछे छुप गया। आपने आकर (प्यार से) मुझे गुद्दी पर हल्की सी ज़रब लगाई और फ़रमाया: "जाओ और मुआविया ؓ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान फरमाते है कि मैं गया और (वापस आकर) बताया कि वो खाना खा रहे हैं आपने (कुछ देर बाद) फिर फ़रमाया: "जाओ और मुआविया को मेरे पास बुलाकर लाओ।" मैं फिर से गया और आकर बताया कि वो खाना खा रहे हैं तो आपने फ़रमाया: "अल्लाह तआला उस (मुआविया ؓ) का पेट सैर ना करे।" **दलाइलुन्नबुवालिलबैहकी की एक हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि रसूलुल्लाहﷺ तशरीफ़ लाए तो मुझे ये ख़्याल गुज़रा कि आप ﷺ मेरी तरफ़ ही आए हैं, चुनांचे मैं छुप गया, मगर (आपﷺ ने मुझे ढूंड निकाला) आपﷺ ने मुझे हल्की से चपत लगाई और फ़रमाया: "जाओ और मुआविया ؓ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" और वो (हज़रत मुआविया ؓ) वह्यी लिखा करते थे। मैं गया और उन्हें पैग़ाम दिया तो जवाब में कहा कि वो खाना खा रहे हैं। मैंने आकर आपﷺ को बता दिया। आपﷺ ने (कुछ देर बाद) फिर फ़रमाया: "जाओ और मुआविया ؓ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" मैं फिर गया तो वही जवाब मिला कि वो खाना खा रहे हैं, मैंने फिर आप ﷺ को सारी बात बता दी। फिर आपﷺ ने तीसरी मरतबा फ़रमाया: "अल्लाह तआला उसका पैट सैर ना करे।" इस हदीस के रावी सय्यिदना अबु हमज़ा ؒ फ़रमाते हैं: उन (हज़रत मुआविया ؓ) का पेट कभी भी सैर ना हो सका।" फिर इमाम बैय्हक़ी ؒ लिखते हैं: "रावी (सय्यिदना अबुहमज़ा ؒ) के ये अल्फ़ाज़ इस बात की दलील हैं कि रसूलुल्लाहﷺ की (हज़रत मुआविया ؓ से मुताल्लिक़ की हुई) दुआ क़ुबूल हो गई।"

[सहीह मुस्लिम: 6409 और 6628, दलाइलुन्नबुवालिलबैहकी: 2506]

[صحیح مسلم : 6409 اور 6628 ، دلائل النبوۃ للبیہقی : 2506 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی توضیح الاحکام جُز - 2 و الشیخ غلام مصطفی ظہیر فی السنۃ - 49 : اسنادہ صحیح]

नोट इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी ؒ (अलमुतवफ्फा 852 हिजरी लिखते हैं : "इमाम बुख़ारी ؒ ने यहां (सहीह बुख़ारी में हज़रत मुआविया ؓ से मुताल्लिक़ बाब के उन्वान में) सिर्फ़ लफ़्ज़ "ज़िक्र ए मुआविया" बयान किया और फ़ज़ीलत या मंक़बत जैसे अल्फ़ाज़ ज़िक्र नहीं किए क्योंकि उस हदीस से कोई फ़ज़ीलत मालूम नहीं होती। अल्बत्ता सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ का हज़रत मुआविया ؓ के लिए फ़क़्या और सहाबियत का बयान ही बतौरे फ़ज़ीलत काफ़ी है। ताहम इमाम इब्ने अबीआसिम ؒ ने हज़रत मुआविया ؓ के मनाक़िब में एक रिसाला लिखा है। इसी तरह का काम अबुउमर गुलाम सअलब और अबुबकर नक़्क़ाश ने भी किया है और इमाम इब्ने जौज़ी ؒ ने भी (मनघड़त अहादीस की निशान दही करने वाली उनकी मश्हूर किताब) "अलमौज़ूआत" में भी कुछ रिवायात ज़िक्र करके इमाम इस्हाक़ बिन राहिवया ؒ का ये क़ौल भी नक़्ल किया है: "हज़रत मुआविया ؓ की फ़ज़ीलत में (सहाबियत के सिवा) कोई चीज़ साबित नहीं है। (इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी ؒ मज़ीद लिखते हैं ।) यही वजह है कि इमाम बुख़ारी

ने अपने उस्ताद (इमाम इस्हाक़ बिन राहविया पर एतमाद करते हुए (हज़रत मुआविया के ज़िक्र में) लफ़्ज़ फ़ज़ीलत या मंक़बत इस्तेमाल करने से गुरेज़ किया है, ताहम अपनी गहरी नज़र से ऐसा इस्तन्बात फ़रमाया (यानी हज़रत मुआविया को सहाबी साबित किया है) कि जिससे रवाफ़िज़ की सरकोबी हो गई है। और इमाम नसाई का वाक़्या इस बारे में मशहूर है कि उन्होंने भी अपने उस्ताद (इमाम इस्हाक़ बिन राहविया) के क़ौल पर एतमाद किया (और अपनी मशहूर किताब "फ़ज़ाइल ए सहाबा " में कोई हदीस हज़रत मुआविया की फ़ज़ीलत से मुताल्लिक़ नहीं जमा फ़रमाई) और फिर इमाम हाकिम का क़िस्सा भी इसी तरह है। इमाम इब्ने जौज़ी ने अब्दुल्लाह बिन अहमद से उनके वालिद इमाम अहमद बिन हम्बल का मकालमा भी ज़िक्र किया है कि उन्होंने अपने वालिद इमाम अहमद बिन हम्बल से पूछा कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब और हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान के (इख़्तिलाफ़ात से) मुताल्लिक़ आपकी क्या राय है ? इमाम अहमद बिन हम्बल ने थोड़ी देर तक सिर झुकाए रखा फिर फ़रमाया: "(मेरे बेटे! ख़ूब) समझ लो कि सय्यिदना अली बिन अबुतालिब के दुश्मन बहुत ज़्यादा थे, जिन्होंने उनके उयूब (दोष,त्रुटिया) तलाश करना चाहे मगर नाकाम रहे। चुनांचे उन दुश्मनों ने (एक मुताबादिल चाल के तौर पर) एक दूसरे शख़्स (हज़रत मुआविया) को मक़सद बर्दारी के लिए मौज़ूं पाया जो उनसे जंग कर चुका था । चुनांचे उन दुश्मनों ने सय्यिदना अली के मुक़ाबले पर उन (हज़रत मुआविया को) बढ़ा चढ़ा कर पेश किया। (इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी मज़ीद लिखते हैं) "इमाम अहमद बिन हम्बल के इस जवाब में इशारा है कि कुछ लोगों ने हज़रत मुआविया के लिए बेबुनियाद फ़ज़ाइल गढ़ लिए जिनकी कोई अस्लियत नहीं है। ये हक़ीक़त है कि हज़रत मुआविया के लिए फ़ज़ीलत की रिवायत तो बहुत सी हैं मगर उन अहादीस में से कोई भी (उसूले मुहद्दिसीन पे) इस्नादी हैसियत से सहीह नहीं है। (इसीलिए) इमाम इस्हाक़ बिन राहविया और इमाम नसाई ने इस मौक़िफ़ को बड़े यक़ीन के साथ इख़्तियार किया है।" [फ़तह उल बारी (शरह सहीह बुख़ारी) "बाब ज़िक्र मुआविया", सहीह बुख़ारी: 3766]
[فتح البارى شرح صحيح بخارى لابن حضر العسقلانى تحت "ذكر معاويہ" صحيح بخارى : 3766]

28 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अब्दुर्रबुलकाबा ताबई बयान करते हैं कि मैं मस्जिद में आया तो देखा कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस क़ाबा के साए में तशरीफ़ फ़रमा हैं और उनके गिर्द लोगों का हुजूम है तो मैं भी उनके पास आ बैठा। उन्होंने फ़रमाया "एक मरतबा हम रसूलुल्लाह ﷺ के हमराह सफ़र में थे। एक जगह पड़ाव किया तो कुछ लोग वहां अपने ख़ैमें दुरुस्त करने लग गए तो कुछ तीर अन्दाज़ी (की प्रैक्टिस) में मशगूल हो गए जब कि कुछ लोग मवेशी चराने लगे। (इसी दौरान) अचानक रसूलुल्लाह ﷺ के मुनादी ने सदा लगाई "नमाज़ इकठ्ठा करने वाली है" (दरअस्ल इन अल्फ़ाज़ से उस वक़्त लोगों को जमा किया जाता था) ये सुनकर हम सब रसूलुल्लाह ﷺ के पास जमा हो गए तो आप ﷺ ने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया "मुझ से पहले भी हर नबी का ये फ़र्ज़ था कि वो अपनी उम्मत को उनकी भलाई (के रास्ते) की ख़बर दे और उनको शर (के रास्ते) से ख़बरदार करे। और तुम्हारी इस उम्मत (उम्मते मुहम्मदिया ﷺ) की आफ़ियत (ख़ैरियत और भलाई) का वक़्त इसका इब्तदाई दौर है। बहुत जल्द इसके बाद वाले दौर में ऐसी मुसीबतें और (फ़ितने वाली) चीज़ें आ गईं कि तुम उनसे नाआश्ना हो गए। ऐसे फ़ितने उठेंगे कि हर नया आने वाला फ़ित्ना पिछले से बदतर होगा। यहां तक कि ऐसा फ़ितना भी आएगा कि मोमिन कह उठेगा कि इसी (फ़ितने) में मेरी मौत होगी मगर वो फ़ितना छट जाएगा। फिर ऐसा फ़ितना आएगा कि मोमिन पुकार उठेगा कि ये सब बढ़कर है लिहाज़ा जो चाहे कि उसे जहन्नम से दूर हटाया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए तो उसे चाहिए कि उस की मौत इस हाल में आए कि वो अल्लाह तआला और आख़िरत पर (कामिल और हक़ीक़ी) ईमान रखता हो और लोगों के साथ वही बर्ताव करे जो वो लोगों से अपने हक़ में करवाना चाहता है। और जो इमाम (यानी वक़्त के हुक्मरां) की बैअत कर ले और दिल व जान से इताअत क़बूल कर ले, उससे जहां तक हो सके इताअत करनी चाहिए फिर अगर कोई और आकर उस (पहले हाकिम) से (इक्तदार के लिए) झगड़ा करे तो दूसरे (मुद्दई इक्तदार) की गर्दन मार दो" अब्दुर्रहमान बिन अब्दुर्रबुलकाबा ताबई बयान करते हैं (ये हदीस सुनकर) मैं उन (हदीस बयान करने वाले सहाबी सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस) के क़रीब हुआ और अर्ज़ की , "मैं आपको अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि आपने क्या ये सारी बातें ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी हैं ? "(मेरे इस सवाल पर) उन्होंने अपने दोनों हाथ कानों और दिल पर ले जाकर कहा: "हां! मेरे कानों ने (ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से इस हदीस को) सुना और मेरे दिल ने इसे महफ़ूज़ कर लिया।" फिर मैंने अर्ज़ की: "(आप हमें अमीर की इताअत पर उभार रहे हैं जबकि हमारा हुक्मरान और) आपके चचा के बेटे हज़रत मुआविया तो हमें हुक्म देते हैं कि हम आपस में एक दूसरे के अम्वाल हराम तरीक़े से खाएं और आपस में एक दूसरे को क़त्ल करें (यानी मुसलमान से लड़ें) हालांकि अल्लाह तआला तो हमें हुक्म देता है "ऐ ईमान वालो! अपने अम्वाल आपस में हराम तौर पर मत खाओ, सिवाए इसके कि तुम्हारी बाहमी रज़ामंदी से तिजारत हो और अपनी जानों को क़त्ल ना करो, यक़ीनन अल्लाह तआला तुम पर बहुत मेहरबान है।" [अननिसा: 29] (मेरा ये सवाल सुनकर) वो (सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र) कुछ देर तक तो ख़ामौश रहे फिर फ़रमाया "अल्लाह तआला की इताअत

(के कामों) में उन (हज़रत मुआविया ﵁) की इताअत करो, और अल्लाह तआला की नाफ़रमानी (के कामों) में उनकी नाफ़रमानी करो।" [सहीह मुस्लिम : 4776] [صحيح مسلم : 4776]

29 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﵁ बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की हयात ए मुबारका में (रमज़ान के रोज़ों का) फ़ितराना, हर छोटे बड़े, आज़ाद और ग़ुलाम की तरफ़ से एक साअ (तक़रीबन अढाई किलो) अश्याए ख़ूर्दनी (यानी अनाज मसलन गन्दुम और जौ वग़ैरह) का निकाला करते, या फिर एक साअ पनीर, या एक साअ जौ, या एक साअ खजूर, या एक साअ मुनक़्क़ा निकाला करते थे। पस ये सुन्नत अमल इसी तरह जारी रहा यहां तक कि हमारे पास हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﵁ (सरज़मीन शाम से) हज या उमरा के लिए आए और उन्होंने मिम्बर (नबवी ﷺ) पर लोगों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया , मैं समझता हूँ कि शामी गंदुम के 2 मुद्द (निस्फ़ साअ) एक साअ खजूर के बराबर हैं। " चुनांचे लोगों ने भी उसी (राय व इज्तहाद) पर अमल शुरू कर दिया तो सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﵁ ने फ़रमाया: "जहां तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं तो ज़िंदगी भर उसी तरह (सुन्नत के मुताबिक़ फ़ितराना एक साअ ही) निकालता रहूँगा जैसे मैं ज़िन्दगी भर निकालता रहा हूँ।" [सहीह मुस्लिम:2284][صحيح مسلم : 2284]

30 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबुक़लाबा ताबई ﵀ बयान करते हैं कि मैं सरज़मीने शाम (सीरिया) में सय्यिदना मुस्लिम बिन यसार ﵀ के (इल्मी) हल्क़े में मौजूद था कि वहां सय्यिदना अबुअशअत ताबई ﵀ तशरीफ़ लाए, तो लोगों ने कहना शुरू कर दिया , अबुअशअत आ गए, अबुअशअत आ गए (यानी आने पर ख़ुशी का इज़हार किया)। चुनांचे जब वो तशरीफ़ फ़र्मा हो गए तो मैंने सय्यिदना अबुअशअत ﵀ से दरख़्वास्त की कि हमें सय्यिदना उबदा बिन सामित ﵁ वाली हदीस तो सुना दें। उन्होंने फ़रमाया ठीक है "(ग़ौर से सुनो) हमने बहुत सारी जंगी महमात सर कीं और बकसरत माले ग़नीमत हासिल किया और उन दिनों हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﵁ हमारे हुक्मरान थे। हमारे माले ग़नीमत में चाँदी के बर्तन भी थे, हज़रत मुआविया ﵁ ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि इन बर्तनों को लोगों की तंख़्वाहों के औज़ फ़रोख़्त कर दे। लोगों ने उस सौदे में बहुत दिल चस्पी से हिस्सा लिया। जब ये बात सय्यिदना उबदा बिन सामित ﵁ तक पहुंची तो उन्होंने इस अमल की ऐलानिया मुख़ालफ़त करते हुए फ़रमाया "मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना कि आप ﷺ सोने को सोने, चाँदी को चांदी, गन्दुम को गन्दुम, जौ को जौ, खजूर को खजूर और नमक को नमक के बदले ख़रीदने और बेचने से मना फ़रमाते थे सिवाए इसके कि (इनमें से हर चीज़) वो आपस में बराबर वज़न और जिंसवाली हो, लिहाज़ा जिसने लेने या देने मे (वज़न की) कमी बेशी की उसने सूद का इरतिकाब किया। चुनांचे (ये सुनकर) लोगों ने ख़रीदे हुए वो चाँदी के बर्तन वापस लौटा दिये। जब ये ख़बर हज़रत मुआविया ﵁ तक पहुंची तो उन्होंने भी ख़ुत्बा दिया और कहा "इन लोगों को क्या हो गया कि रसूलुल्लाह ﷺ से ऐसी अहादीस बयान करते हैं कि जो हमने नहीं सुनीं हालांकि हम भी तो आप ﷺ की मज्लिस में हाज़िर हुआ करते थे"। (उस हदीस मुबारका पर ये ऐतराज़ सुनकर) सय्यिदना उबदा बिन सामित ﵁ ने फिर ऐलानिया वही हदीस दुहराई और फ़रमाया "हमने जो रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है उसे ज़रूर बयान करेंगे, ख़्वाह मुआविया ﵁ उसे नापसंद करें या कहें कि ख़्वाह हज़रत मुआविया ﵁ की नाक ख़ाक आलूदह हो जाए। और मुझे इस बात की भी परवाह नहीं कि मुझे (इस हक़गोई पे) तारीक रात में उनके लश्कर से अलग होना पड़ जाएगा।" [सहीह मुस्लिम : 4061] [صحيح مسلم : 4061]

31 सुनन अबुदाऊद की हदीस में है: सय्यिदना ख़ालिद ताबई ﵀ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ और अम्र बिन असवद और बनीअसद का एक शख्स, हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﵁ के पास वफद बन कर गए, (इस मौक़े पर मुलाक़ात के दौरान) हज़रत मुआविया ﵁ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ से कहा: "क्या तुम्हें मालूम है कि सय्यिदना हसन बिन अली ﵁ फौत हो गए हैं?" (नोट: सय्यिदना हसन ﵁ को एक साज़िश के तहत शहीद किया गया था जबकि तफसील हदीस नम्बर 50 के तहत आ रही है) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ ने फ़ौरन पढ़ा إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعون । एक शख्स (हज़रत मुआविया ﵁ जिनका नाम अगले तरीक़ में है) ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन ﵁ की मौत को) मुसीबत समझते हो?" (نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे मुसीबत क्योंकर नही समझूँ हालाँकि मैने खुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन बिन अली ﵁ को अपनी गोद मुबारक में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमाते थे: "ये (हसन ﵁) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन ﵁ अली ﵁ से है।" बनू असद में से एक शख्स ने कहा: "वह (हसन ﵁) तो एक अंगारा था जिसे अल्लाह ताआला ने बुझा दिया।" (نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ ने (ये बातें सुनने के बाद गुस्से में आकर इरशाद) फ़रमाया: "मैं उस वक़्त तक यहाँ से नही उठूँगा जब तक तुझ (हज़रत मुआविया ﵁) को गुस्सा नही दिलाऊं और ऐसी बात नही सुनाऊं जो तुझे नही पसंद हो। ऐ मुआविया ﵁ ! अगर मैं सच बयान करूँ तो मेरी तसदीक़ कर देना और अगर मैं झूठ बोलूं तो मेरी तरदीद कर देना।" हज़रत मुआविया ﵁ ने कहा कि ठीक है। चुनांचे हज़रत मिक्दाम बिन मअदीकरब ﵁ ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह तआला का वासता देकर पूछता हूँ कि तूने खुद रसूलुल्लाह ﷺ

को सोना पहनने से मना फरमाते हुए सुना था?" हज़रत मुआविया ﷛ ने कहा: "हाँ!" फिर सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह तआला का वासता देकर पूछता हूँ कि तूने खुद रसूलुल्लाह ﷺ को रेशम पहनने से मना फ़रमाते हुए सुना था?" हज़रत मुआविया ﷛ ने कहा: "हाँ!" फिर सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह ताआला का वास्ता देकर पूछता हूँ तूने खुद रसूलुल्लाह ﷺ को दरिंदों की खालों (के लिबास) को पहनने से और उन पर (कालीन के तौर पर) बैठने से रोका था?" हज़रत मुआविया ﷛ ने कहा: "हाँ!" फिर सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! ऐ मुआविया ﷛ ये सब (हराम वस्तुए इस्तेमाल होती हुई) मैंने तेरे घर में देखी हैं।" ये सुनकर हज़रत मुआविया ﷛ ने कहा: "ऐ मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ! मुझे पता है कि मैं तुम से जीत नहीं सकता।" सय्यिदना खालिद ताबई ﵀ बयान करते हैं कि फिर हज़रत मुआविया ﷛ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ के लिए उन के दोनों साथियों से बढ़कर इनआम व इकराम का हुक्म सादिर किया। और सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ने सारा माल अपने साथियों में वहीं बाँट दिया और असदी ने किसी को कुछ भी न दिया। इस बात कि ख़बर जब हज़रत मुआविया ﷛ को हुई तो उन्होंने कहा: "सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ तो वाक़ई एक सखी शख्स हैं जिन्होंने दिल खोल के दे दिया और जो असदी शख्स है वो अपने माल को अच्छी तरह से सँभालने वाला है।" **मुसनद अहमद की एक हदीस में है:** सय्यिदना खालिद बिन मअदान ताबई ﵀ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ और अम्र बिन असवद हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷛ से मिलने आए तो हज़रत मुआविया ﷛ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ से कहा: "क्या तुम मालूम है कि सय्यिदना हसन ﷛ फौत हो गए हैं?" सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ने फ़ौरन पढ़ा: إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون इस पर हज़रत मुआविया ﷛ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन ﷛ की मौत को) मुसीबत समझते हो?" (نعوذ باللہ من ذلک) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷛ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे मुसीबत क्यों नही समझूँ हालाँकि मैंने खुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन ﷛ को अपनी गोद में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमा रहे थे: "ये (हसन ﷛) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन ﷛ अली ﷛ से है।" **मुसनद अहमद कि हदीस में है:** सय्यिदना अबुल्लाह बिन बरीरा ताबई ﵀ बयान फ़रमाते हैं कि मैं और मेरे वालिद सय्यिदना बरीरह ﷛ हज़रत मुआविया ﷛ के पास मिलने गए। हज़रत मुआविया ﷛ ने हमें फर्शी नशिस्त (यानी कालीन) पर बिठाया, फिर खाना लाया गया जो हमने तनावुल किया, फिर हमारे सामने एक मशरूब लाया गया जो हज़रत मुआविया ﷛ ने पीने के बाद (वह मशरूब वाला बर्तन) मेरे वालिद को पकड़ा दिया तो उन्होंने (सय्यिदना बरीरा ﷛) ने फ़रमाया: "जब से इस मशरूब को रसूलुल्लाह ﷺ ने हराम क़रार दिया है, तब से मैंने इसे कभी नोश नहीं किया।" फिर हज़रत मुआविया ﷛ फरमाने लगे: "मैं क़ुरैशी नौजवानों में सबसे हसीन तरीन और ख़ूबसूरत दांतों वाला नौजवान था और जवानी के उन दिनों मेरे लिए दूध और अच्छे किस्सा गो आदमी से बढ़कर कोई चीज़ लज़्ज़त आवर नहीं होती थी।" **[सुनन अबुदाऊद: 4131, मुसनद अहमद: 17228 और 22991]**

[سنن ابی داؤد : 4131 ، مسند احمد : 17228 (جلد - 4 ، صفحہ - 132) ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]
[مسند احمد : 22991 (جلد - 5 ، صفحہ - 347) ، قال الشیخ زبیر علیزئی و الشیخ شعیب الارنوؤط : اسنادہ صحیح]

D चौथे ख़लीफ़ा राशिद सय्यिदना अली ﷛ के फ़ज़ाइल का बयान और उन पर मिंबरों से लाअनत करने की बिदअत कब और किसने ईजाद की थी ?

32 **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु हमज़ा अन्सारी ताबई ﵀ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ﷛ को सुना कि वो फ़रमाया करते, "पहला शख़्स जो इस्लाम लाया वो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ थे।" **सुनन नसाई अल कुबरा की हदीस में है ,** "पहला शख़्स जिसने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ (हरम में बाजमाअत) नमाज़ अदा की वो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ थे।" **सुनन नसाई अल कुबरा की एक हदीस में है:** " बेशक़ पहला शख़्स जिसने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इस्लाम कुबूल किया वो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ थे।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है** "बेशक पहला शख़्स जो इस्लाम लाया वो सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ थे।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की एक और हदीस में है,** इमाम अहमद बिन हम्बल ﵀ फ़रमाते थे, "रसूलुल्लाह ﷺ के तमाम सहाबा किराम ﷡ में से किसी भी और शख़्सियत के लिए (अहादीस ए मुबारका में) इतने ज़्यादा फ़ज़ाइल नहीं आए हैं जितने कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ के लिए आए हैं।"

[जामेअ तिरमिज़ी: 3735, सुनन नसाई अलकुबरा: 8391 और 8392, अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4663, और 4572]

[جامع ترمذی : 3735 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]
[سنن نسائی الکبریٰ : 8391 ، اور 8392 ، قال الشیخ غلام مصطفی ظہیر امن پوری فی خصائص علی : اسنادہ صحیح]
[المستدرک للحاکم : 4663 ، قال الامام حاکم و الذہبی : اسنادہ صحیح ، المستدرک للحاکم : 4572 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

33 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना यज़ीद बिन हयान ताबई बयान करते हैं कि मैं, हुसैन बिन सबरा ताबई और उमर बिन मुस्लिम ताबई सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म से मिलने गए। जब हम उनके पास जा बैठे तो हुसैन ने उन्हें मुख़ातिब करके अर्ज़ की: "ऐ ज़ैद ! आपने तो बहुत ज़्यादा ख़ैर पाई है, रसूलुल्लाह की ज़ियारत की है, आप के फ़रामीन सुने हैं, आप के साथ ग़ज़्वात (जिहाद) में शिर्कत की और आप की इक़्तदाअ में नमाज़ें भी पढ़ीं। ऐ ज़ैद ! वाक़ई आप ने बहुत भलाई हासिल की है तो अब हमें वो अहादीस भी तो सुनाइए जो आप ने ख़ुद रसूलुल्लाह से समाअत फ़रमाई थीं।" सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ने फ़रमाया : "बेटा ! अल्लाह तआला की क़सम मेरी उमर बहुत ज़्यादा हो चुकी है और काफ़ी अर्सा बीत गया है और रसूलुल्लाह से सुनी हुई कुछ बातें तो मैं भूल चुका हूँ, लिहाज़ा जो बयान करूँ उसी पर इक्तफ़ा करना और जो ना बता सकूं तो उसके लिए मुझे मजबूर ना करना।" फिर सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म फरमाने लगे: "एक रोज़ रसूलुल्लाह मक्का और मदीना के दर्मियान ख़ुम नामी एक गाँव में पानी के तालाब के पास (हज्जतुलविदा से वापसी पर 18 ज़ुलहिज्जा 10 हिजरी में अपनी वफ़ात से तक़रीबन दो माह क़ब्ल) हमें ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाने के लिए खड़े हुए, चुनांचे आप ने (अल्लाह तआला की) हम्द ओ सना और वज़ व नसीहत करने के बाद इरशाद फ़रमाया: "ऐ लोगो! मैं भी एक इंसान हूँ, क़रीब है कि जल्द ही मेरे रब का क़ासिद (यानी मौत का फ़रिश्ता) आए और मैं उसे लब्बैक कह दूँ (यानी इस दुनिया से रुख़्सत हो जाऊं)। मैं (अपने बाद) तुम में दो गिरांक़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, (उनमें से) पहली तो अल्लाह तआला की किताब (क़ुरआने हकीम) है जिस में हिदायत का सामान और नूर है, लिहाज़ा तुम अल्लाह तआला की किताब को थाम लो और मज़बूती से पकड़ लो।" फिर आप ने अल्लाह तआला की किताब को थामने की ख़ूब तर्ग़ीब दिलाई, फिर फ़रमाया: "और (दूसरी गिरांक़द्र चीज़) मेरे अहले बैअत हैं, मैं तुम्हें अपने अहले बैअत के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ, मैं तुम्हें अपने अहले बैअत के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ, मैं तुम्हें अपने अहले बैअत के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ, (यानी मेरे बाद उन के साथ मेरी निस्बत की वजह से हुस्ने सुलूक करना)। हुसैन ताबई ने सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म से अर्ज़ की: "आप के अहले बैअत कौन हैं? क्या आप की बीवियां आपके अहले बैअत में शामिल नहीं हैं ?" (सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ने) फ़रमाया: "आप की बीवियां (भी) आपके अहले बैअत से हैं, लेकिन (उस हदीस में) आप के अहले बैअत से मुराद (सिर्फ़) वो हैं जिन पर आप के बाद (अल्लाह ताआला की तरफ़ से) सद्क़ा (खाना) हराम कर दिया गया है।" (हुसैन ताबई ने) पूछा वो कौन से लोग मुराद हैं ? (सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ने) फ़रमाया: "वो हैं: आलेअली, आलेअक़ील, आलेजाफ़र, और आलेअब्बास ।" (हुसैन ताबई ने) पूछा: "क्या उन सब पर ही सद्क़ा हराम है?" (सय्यिदना ज़ैद ने) फ़रमाया: "हां।" **सहीह मुस्लिम की एक और हदीस में है:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म का बयान है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: "ख़बरदार हो जाओ! मैं (अपने बाद) तुम में दो गिरांक़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, (उनमें से) पहली तो अल्लाह तआला की किताब (क़ुरआन ए हकीम) है जो अल्लाह तआला की रस्सी है, जो उसकी पैरवी करेगा, हिदायत पर क़ाइम रहेगा, और जो उसे छोड़ देगा, वो गुमराही में जा पड़ेगा।" और उसी हदीस में है कि ताबईन ने जब पूछा कि आप के अहले बैअत कौन हैं? क्या आप की बीवियाँ उनमें हैं ? (तो सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़म ने) फ़रमाया: "नहीं अल्लाह तआला की क़सम! बीवी तो एक लम्बा वक्त मर्द के साथ रहती है, फिर वो (ख़ाविन्द) उसे तलाक़ दे देता है, तो वो अपने मैके और ख़ानदान में लौट जाती है। (आप के) अहले बैअत तो आप का असल ख़ानदान और दधियाल वाले रिश्तेदार हैं जिन पर आप के बाद सद्क़ा हराम था।" **अस्सुन्नह इब्ने अबुआसिम की हदीस में है:** सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह मक़ाम ए ख़ुम में सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब का हाथ थामे हुए, ख़ुत्बे के लिए खड़े हुए और फिर इरशाद फ़रमाया: "ऐ लोगो ! क्या तुम गवाही नहीं देते कि अल्लाह तआला तुम्हारा रब है ? " सबने अर्ज़ किया: "क्यों नहीं! (हम गवाही देते हैं)" फिर आप ने फ़रमाया: "क्या तुम इस बात की भी गवाही नहीं देते हो कि अल्लाह तआला और उसका रसूल तुम्हारी अपनी जान से बढ़कर तुम पर हक़ रखते हैं?" तमाम सहाबा किराम ने अर्ज़ किया: "क्यों नहीं! (हम गवाही देते हैं)" आप ने फ़रमाया: "और ये कि अल्लाह तआला और उसका रसूल तुम्हें सबसे बढ़कर महबूब हैं ? तमाम सहाबा ने अर्ज़ किया: "क्यों नहीं! (बेशक ऐसा ही है)। फिर आप ने इरशाद फ़रमाया: "तो फिर (सुन लो कि) जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ तो उसका मौला (दिली महबूब) ये (अली) भी हैं।" **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अबुतुफ़ैल आमिर बिन वासला बयान फ़रमाते हैं कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ने (जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़े पर) लोगों को एक खुली जगह में इकठ्ठा किया और फिर उनसे फ़रमाया: "मैं अल्लाह तआला का वास्ता देकर हर उस शख़्स से पूछता हूँ कि जिसने ग़दीर-ए-ख़ुम में रसूलुल्लाह को ये फ़रमाते सुना था? " उस मौक़े पर कई सहाबा किराम उठ खड़े हुए, जिन्होंने गवाही दी कि रसूलुल्लाह ने ग़दीर-ए-ख़ुम के दिन फ़रमाया था कि तुम जानते हो कि मैं मौमिनीन पर उनकी ज़ान से बढ़कर हक़ रखता हूँ, ये फ़रमाते हुए आप सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब का हाथ थामे खड़े थे, फिर रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: "जिसका मौला (दिली महबूब)

में हूँ उसी का मौला (दिली महबूब) अलीؓ है,ऐ अल्लाह तआला जो इस (सय्यिदना अलीؓ) से मुहब्बत रखे तू भी उससे मुहब्बत फ़रमा और जो भी इस (सय्यिदना अलीؓ) से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी फ़रमा।" सय्यिदना अबु तुफ़ैय्ल आमिर बिन वास्लाؓ बयान फ़रमाते हैं कि मैं (ये गुफ़्तगू सुनकर) वहां से निकला तो मेरे दिल में इस (गुफ़्तगू) के बारे में कुछ (शक बाक़ी) था, चुनांचे मैं सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़मؓ से (जो साबिक़ूनुलअव्वलून सहाबाؓ में से थे) मिला और उन्हें सारी बात और इश्काल सुनाया तो उन्होंने फ़रमाया: "तुम्हें किस बात पर शक है? ये सब कुछ तो ख़ुद मैंने भी रसूलुल्लाहﷺ से सुन रखा है।" **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़मؓ ने रसूलुल्लाहﷺ से बयान किया कि आपﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ उसी का मौला (दिली महबूब) अलीؓ है, इमाम तिरमिज़ीؒ फ़रमाते हैं ये हदीस हसन सहीह है। **मुस्नद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुतुफ़ैल आमिर बिन वासलाؓ (जिन्होंने सहाबा किरामؓ में सबसे आख़िर में 110 हिजरी में वफ़ात पाई) बयान फ़रमाते हैं कि सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ ने लोगों को एक खुली जगह में इकठ्ठा किया और फिर उनसे फ़रमाया: "मैं अल्लाह तआला का वास्ता देकर हर उस शख़्स से पूछता हूँ कि जिसने गद्दीर-ए-ख़ुम में रसूल्ल्लाहﷺ का फ़रमान सुना, तो वो उठकर बताए। इस पर 30 अफ़राद खड़े हुए और उन्होंने गवाही दी (फिर आगे इस हदीस में भी आख़िर तक वही अल्फ़ाज़ हैं जो ऊपर सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में गुज़र चुके हैं) **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरक़मؓ ने रसूलुल्लाहﷺ से बयान किया कि आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मैं तुम में दो गिराकदर (मूल्यवान) चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, अल्लाह तआला की किताब (क़ुरआन ए हकीम) और मेरे अहले बैअत। और ये दोनों हरगिज़ अलग नहीं होंगे (और हमेशा इकठ्ठे रहेंगे) हत्ता कि हौज़ (कौसर) पर मेरे पास आ जाएंगे।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की एक हदीस में है :** सय्यिदना अबुज़र ग़फ़ारीؓ के ग़ुलाम सय्यिदना अबुसाबित ताबईؒ बयान करते हैं: "मैं जंग जमल में सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ के साथियों में था, और जब मैंने उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ाؓ को (अपने मदे मुक़ाबिल) देखा तो मेरे दिल में वही बात आई जो लोगों को याद आया करती है (यानी वस्वसा और शक पैदा हुआ) फिर अल्लाह तआला ने ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त वो (शक) मुझसे दूर फ़रमा दिया। चुनांचे मैं (शरह सदर के साथ) अमीरुल मोमिनीन (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ) की तरफ़ से लड़ा, फिर फ़ारिग़ हुआ तो मैं मदीना मुनव्वरा में उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्माؓ के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैंने खाने पीने (की ग़र्ज़ से) हाज़िर नहीं हुआ, बल्कि मेरा तार्रुफ़ ये है कि मैं सय्यिदना अबुज़र गफ्फारीؓ का ग़ुलाम हूँ। उन्होंने फ़रमाया: "ख़ुशआमदीद" फिर मैंने अपना सारा क़िस्सा उन्हें सुनाया तो सय्यिदा उम्मे सल्माؓ ने फ़रमाया: "जब लोग अपनी अपनी राय की पैरवी कर रहे थे तो उस वक़्त तुम्हारा क्या मौकिफ्फ़ था ? "मैंने अर्ज़ किया: "सूरज ढलने के वक़्त अल्लाह तआला ने मुझ से शक व शुबाह ज़ाइल फ़रमा दिया तो मैंने वही (मौकिफ्फ़ इख़्तियार) किया (यानी सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ का साथ दिया)। सय्यिदा उम्मे सल्माؓ ने फ़रमाया: "तुमने बहुत ही अच्छा किया, मैंने रसूलुल्लाहﷺ का ये फ़रमान ख़ुद सुना है: "(सय्यिदना) अलीؓ क़ुरआन के साथ और क़ुरआन (सय्यिदना) अलीؓ के साथ है। ये दोनों हरगिज़ अलग नहीं होंगे (और हमेशा इकठ्ठे रहेंगे) हत्ताकि हौज़े (कौसर) पर मेरे पास आ जाएंगे।"

[सहीह मुस्लिम: 6225 और 6228, अस्सुन्नह इब्ने अबुआसिम: 1158, सुनन नसाई अलकुबरा: 8478, जामेअ तिरमिज़ी: 3713, सिलसिलातुस्सहीहा: 1750 और 2223, मुसनद अहमद: 19321, अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4711 और 4626]

[صحیح مسلم : 6225 اور 6228 ، السنۃ لابن ابی عاصم : 1158 ، سنن نسائی الکبریٰ : 8478 ، جامع ترمذی : 3713 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

[السلسلۃ الصحیحۃ : 1750 اور 2223 ، مسند احمد : 19321 (جلد - 4 ، صفحہ - 370) ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی و الشیخ الارنووط : اسنادہ صحیح]

[المستدرک للحاکم : 4711 اور 4628 ، قال الامام حاکم و الامام الذھبی : اسنادہ صحیح علی شرط البخاری و مسلم]

34 **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहाज़म ताबईؒ बयान करते हैं कि मुझे सय्यिदना सहल बिन साद अस्साअदीؓ ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाहﷺ ने ग़ज़्वा खैबर के मौक़े पर सहाबा किरामؓ से इरशाद फ़रमाया: "कल मैं (लश्कर की क़यादत का) झंडा उस शख़्स को दूँगा, जिसके हाथों पर फ़तह होगी और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूलﷺ भी उस से मुहब्बत फ़रमाते हैं।" चुनांचे सारी रात सहाबा किराम इसी पर तरद्दुद करते रहे कि उनमें से किस (ख़ुशनसीब) को वो झंडा मिलेगा, और सुबह के वक़्त सभी पुर उम्मीद थे (कि झंडा हमें मिलेगा) तो आपﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया: "अलीؓ कहां है ?" आपﷺ को अर्ज़ की गई कि उन (सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिबؓ) की आंखें दुखती हैं, आपﷺ ने (बुलवाकर) उनؓ की दोनों आंखों में (अपना) लुआब ए दहन (मुबारक) डाला और उनؓ के लिए दुआ फ़रमाई। पस वो यूं अच्छे भले हो गये गोया कभी बीमार ही नहीं थे। आपﷺ ने सय्यिदना अलीؓ को झंडा दिया। इस पर सय्यिदना अलीؓ ने पूछा: "क्या मैं उन (दुश्मन) से उस वक़्त तक लड़ाई करता रहूँ जब तक वो हमारी तरह (मुसलमान) हो जाएं ?" आपﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "आराम से चलते रहो यहां तक कि तुम उनके क़रीब पहुंच जाओ, फिर तुम उनको इस्लाम की दावत देना और उन्हें बताना कि (मुसलमान होने से) उन पर क्या फ़र्ज़ होगा, अल्लाह तआला की क़सम! अगर तुम्हारी (दावत व मेंहनत की) वजह से अल्लाह तआला ने उनमें से एक शख़्स

को भी हिदायत दे दी तो ये बात तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर होगी।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷛ बयान करते हैं: रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ज़वा ख़ैबर के दिन इरशाद फ़रमाया: "आज मैं ये झंडा उस शख़्स को दूँगा जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला उसके हाथों पर फ़तह अता फ़रमाएगा।" सय्यिदना अबुहुरैरा ﷛ बयान करते हैं कि इस पर सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷛ फ़रमाते थे कि (ज़िंदगी में) सिर्फ़ उसी दिन मुझे क़यादत की तमन्ना हुई (कि झंडा मुझे मिले और मैं उस बशारत का मिस्दाक़ बन जाऊं) सारी रात मैंने इसी उम्मीद में गुज़ारी कि मुझे (उस क़यादत के लिए) बुलाया जाएगा, चुनांचे आप ने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ को बुलवाया और उन्हें झंडा अता किया और इरशाद फ़रमाया: "सीधे रवाना हो जाओ और यक्सू रहना यहां तक के अल्लाह तआला तुम्हें फ़तह अता फ़रमा दे।" (सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷛ ने) फ़रमाया कि सय्यिदना अली ﷛ रवाना हुए, थोड़ी देर बाद रुके और वापस मुड़े बग़ैर बुलन्द आवाज़ से पूछा: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! मैं किस मक़्सद की ख़ातिर लड़ाई करूं ?" आपने फ़रमाया: "उनसे जंग करो हत्ताकि वो गवाही दे दें कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और ये कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआला के रसूल हैं, (और जब वो ये गवाही दे दें) तो फिर तेरे हाथों से उनकी जानें और अम्वाल महफ़ूज़ हो गए, सिवाए क़ानूनी जवाज़ के और उनका (उख़रवी) हिसाब अल्लाह तआला के सुपुर्द है।" [सहीह बुख़ारी: 3701, सहीह मुस्लिम: 6222 और 6223] [صحیح بخاری : 3701 ، صحیح مسلم : 6222 اور 6223]

35 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना मसुअब बिन साद ताबई ﵀ अपने वालिद (सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷛) से बयान करते हैं कि रसूल्लाह ﷺ ग़ज़वा-ए-तबूक के लिए रवाना हुए तो आपने सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ को (अपने पीछे) क़ाइम मक़ाम के तौर पर छोड़ा। इस पर उन्होंने (सय्यिदना अली ﷛) ने (आपकी जुदाई पे इज़्हार ए अफ़्सोस करते हुए) पूछा: "आप ﷺ मुझे बच्चों और औरतों में छोड़े जाते हैं? " तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "(ऐ अली ﷛ !) क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं कि तुम्हारा मुझ से वही रिश्ता है जो हारून ﵇ का मूसा ﵇ से था?" (यानी जैसा कि कोहे तूर पर जाते वक़्त सय्यिदना मूसा ﵇ ने सय्यिदना हारून ﵇ को बनी इस्राईल पर अपना कायम मक़ाम (प्रतिनिधि) बनाया था, वैसे ही मैं भी तबूक पे जाते वक़्त तुम्हें अपना क़ाइम मक़ाम बनाकर जा रहा हूँ) **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷛ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अली ﷛ ! तेरी मुझ से वही निस्बत है जो हारून ﵇ को मूसा ﵇ से थी, सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।" सय्यिदना सईद ताबई ﵀ कहते हैं कि मेरा दिल चाहा कि मैं बराहेरास्त (ख़ुद) ये हदीस सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷛ से सुनूं, चुनांचे मैं सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷛ से मिला और उन्हें इसी तरह की हदीस सुनाई जो मैंने उनके बेटे सय्यिदना आमिर बिन साद ताबई ﵀ से सुनी थी, (इस पर) सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷛ ने फ़रमाया: (हां) मैंने (रसूलुल्लाह ﷺ से) इसी तरह सुना था। (नोट: अब चूंकि हज़रत मुआविया बिन अबुसूफ़ियान ﷛ का दौरे मलूकियत था और बनू उमय्या के मिम्बरो से सय्यिदना अली ﷛ पर लानत करने की बिदअत का रिवाज आम था, जिसकी तफ़्सील आगे हदीस नम्बर: 37 से 48 तक आ रही है, तो ऐसे हालात में सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ की इतनी शान बयान करने वाली हदीस को हज़म करना इन्तहाई मुश्किल काम था, चुनांचे) सय्यिदना सईद ताबई ﵀ कहते हैं कि मैंने फिर (दोबारा ताकीदन) पूछा "क्या वाक़ई आपने ख़ुद (रसूलुल्लाह ﷺ से) सुना था?" चुनांचे सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷛ ने (ग़ुस्से की हालत में) अपनी दोनों उंगलियां अपने कानों पर रखकर फ़रमाया: "हां! वर्ना (अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ तो मेरे) ये दोनों कान ही बहरे हो जाएं।" [सहीह बुख़ारी: 4416, सहीह मुस्लिम: 6217 और 6218]
[صحیح بخاری : 4416 ، صحیح مسلم : 6217 اور 6218]

36 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﵂ बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक सुबह (घर से) निकले और आप ﷺ ने मुन्क़श सियाह ऊनी चादर ओढ़ी हुई थी, इसी दौरान सय्यिदना हसन बिन अली ﷛ आए तो आप ﷺ ने उन्हें (अपनी चादर में) दाख़िल फ़रमा लिया, फिर सय्यिदना हुसैन बिन अली ﷛ आए तो आप ﷺ ने उन्हें भी (अपनी चादर में) दाख़िल फ़रमा लिया, फिर सय्यिदा फ़ातमा ﵂ आईं तो आप ﷺ ने उन्हें भी (अपनी चादर में) दाख़िल फ़रमा लिया, फिर सय्यिदना अली ﷛ आए तो आप ﷺ ने उन्हें भी (अपनी चादर में) दाख़िल फ़रमा लिया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने ये आयत तिलावत फ़रमाई: "ऐ अहले बैअत ! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें ख़ूब पाक और साफ़ कर दे।" [अलअहज़ाब: 33] [सहीह मुस्लिम: 6261]
[سورۃ الاحزاب : 33] [صحیح مسلم : 6261]

37 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुसईद ख़ुदरी ﷛ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मेरे सहाबा को गाली मत दो, क्योंकि तुम में से कोई अगर उहद पहाड़ के बराबर सोना भी (अल्लाह तआला की राह में) ख़र्च कर दे तो भी वो उन (सहाबा किराम ﷛ के मुद्द (यानी तकरीबन 600 ग्राम वज़न की गंदुम को ख़ैरात करने के सवाब) को नहीं पा सकता बल्कि उसके आधे को भी नहीं पा सकता।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷛ बयान करते हैं कि सय्यिदना ख़ालिद बिन वलीद ﷛ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷛ के दर्मियान कुछ (इख़्तिलाफ़ हुआ) था, तो (जज़्बात में आकर) सय्यिदना ख़ालिद

बिन वलिद ﷛ ने उन (सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷛) को गाली दी तो आप ﷺ ने (सय्यिदना ख़ालिद बिन वलीद ﷛ से) इरशाद फ़रमाया: "तुम मेरे सहाबा ﷡ में से किसी को गाली मत दो, क्योंकि अब तुम (बाद में इस्लाम लाने वालों) में से कोई अगर उहद पहाड़ के बराबर सोना भी (अल्लाह तआला की राह में) ख़र्च कर दे तो भी वो उन (पहले मुसलमान सहाबा किराम ﷡) के एक मुद्द (यानी तक़रीबन 600 ग्राम वज़न की गंदुम को ख़ैरात करने के सवाब) को नहीं पा सकता बल्कि उसके आधे को भी नहीं पा सकता।" [सहीह बुख़ारी: 3673, सहीह मुस्लिम: 6488] [صحیح بخاری : 3673 ، صحیح مسلم : 6488]

38 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा ﷞ बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मुर्दा लोगों को गाली मत दो क्योंकि वो अपने किये हुए आमाल (के अन्जाम) तक पहुंच चुके हैं।" (यानी उन्होंने जो कुछ अच्छा या बुरा इस दुनिया में बोया था, अब आलम ए बरज़ख़ में उसी की जज़ा या सज़ा को काट रहे हैं) [सहीहबुख़ारी:1393][صحیح بخاری : 1393]

नोट रसूलुल्लाह ﷺ का मन्दर्जा बाला (उपरोक्त) मुबारक फ़रमान पूरी उम्मत के लिए यक्सां है और इस हुक्म से कोई एक शख़्स भी बाहर नहीं है, चाहे वो शख़्स सहाबा किराम ﷡ में ही से क्यों ना हो। चुनांचे इसी ज़िमन में **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा ﷞ ही बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माना मुबारक में मख़्ज़ुमिया औरत (जिसका नाम फ़ातमा बिन अस्वद था) ने चोरी की थी । इस वाक़्या ने क़ुरैश को ग़मज़दा कर दिया था। उन्होंने मशवरा किया कि (ऊंचे घराने की उस चोर औरत को सज़ा से बचाने की ख़ातिर) उससे मुताल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ से कौन सिफ़ारिश करेगा? चुनांचे उन्होंने फ़ैसला किया कि ये काम तो सिर्फ़ रसूलुल्लाह ﷺ के महबूब सय्यिदना उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा ﷛ ही कर सकते हैं। जब उसामा बिन ज़ैद ﷛ ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में उसकी सिफ़ारिश की तो आप ﷺ ने (इंतहाई गुस्से की हालत में) इरशाद फ़रमाया: "क्या तुम अल्लाह तआला की हुदूद के मामले में मुझसे सिफ़ारिश करते हो ?" फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने (लोगों में) खड़े होकर ख़ुत्बा दिया और इरशाद फ़रमाया: "तुम से पहले लोग सिर्फ़ इसी (जुर्म की) वजह से हलाक कर दिये गए कि जब उनमें से कोई ऊंचे घराने वाला चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पे हद जारी कर देते। अल्लाह तआला की क़सम! अगर (बिलफ़र्ज़) फ़ातमा बिंत मुहम्मद ﷺ भी चोरी करती तो मैं उसके हाथ भी कटवा देता। (यानी इस्लाम के क़वानीन व हुदूद का इत्लाक़ सभी पे एक जैसा होगा)" **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर ताबई ﷬ बयान करते हैं कि मैंने अहले शाम में से एक शख़्स को सुना कि वो उमरा को हज के साथ मिलाने के हवाले से (मेरे वालिद मुहतरम) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷛ से सवाल कर रहा था (यानी हज तमअतुअ जाइज़ है कि नहीं?) तो सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷛ ने फ़रमाया: "हाँ ऐसा करना बिलकुल हलाल है।" इस पर उस शामी ने अर्ज़ की कि आप के वालिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷛ तो इस (हज तमअतुआ) से मना फ़रमाते थे। उसकी इस बात पर सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷛ ने फ़रमाया: "अगर किसी बात से मेरे वालिद मुहतरम मना कर दें हालांकि रसूलुल्लाह ﷺ ने तो उस अमल को जारी फ़रमाया हो, तो मुझे बताओ कि फिर मेरे बाप की बात मानी जाएगी या कि रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म माना जाएगा?" उसने अर्ज़ की कि बेशक रसूलुल्लाह ﷺ का हुक्म ही माना जाएगा। तो सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷛ ने फ़रमाया: "(फिर ख़ूब समझ लो कि) बेशक रसूलुल्लाह ﷺ ने हज ए तमअतुअ का हुक्म दिया है।" [सहीह बुख़ारी: 6788, सहीह मुस्लिम:4410, जामेअ तिरमिज़ी:824]
[صحیح بخاری : 6788 ، صحیح مسلم : 4410 ، جامع ترمذی : 824 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

39 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु हाज़म ताबई ﷬ बयान करते हैं कि एक आदमी सय्यिदना सहल बिन साद ﷛ के पास आकर बताने लगा कि फ़लां (बनू उमय्या से ताल्लुक़ रखने वाला) शख़्स जो अमीरे मदीना है, अपने मिम्बर पर सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﷛ का (बुरे अंदाज़ से) ज़िक्र करता है। (सय्यिदना सहल बिन साद ﷛ ने) पूछा: "वो क्या कहता है?" उसने बताया कि वो (हिक़ारत से) उन (सय्यिदना अली ﷛) को अबुतुराब (यानी मिट्टी वाला) कहता है।" उसकी इस बात पर सय्यिदना सहल बिन साद ﷛ हंस पड़े और फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! उन (सय्यिदना अली ﷛ का ये नाम (अबुतुराब) तो ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ ने रखा था और अल्लाह तआला की क़सम! उन (सय्यिदना अली ﷛) को इस नाम से बढ़कर कोई और नाम महबूब ना था।" (सय्यिदना अबु हाज़म ताबई ﷬ कहते हैं कि उनकी ये बात सुनकर) मैंने सय्यिदना सहल बिन साद ﷛ को सारा क़िस्सा सुनाने की दर्ख़्वासत की। और कहा कि ऐ अबुअब्बास ﷛ ! ये क़िस्सा कैसे पेश आया? तो उन्होंने वो क़िस्सा यूं बयान फ़रमाया: "एक रोज़ सय्यिदना अली ﷛ सय्यिदा फ़ातमा ﷞ के पास आए फिर (किसी बात पे उन से नाराज़ होकर) घर से बाहर निकल गए और मस्जिद में जाकर लेट गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने (सय्यिदा फ़ातिमा ﷞ से) पूछा: "तुम्हारा चचाज़ाद (यानी सय्यिदना अली ﷛) कहां है?" उन्होंने अर्ज़ किया कि मस्जिद में हैं। चुनांचे आप ﷺ उनके पास मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि सय्यिदना अली ﷛ की कमर से लिबास हटा हुआ है और उस पे मिट्टी लग गई है। चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ख़ुद अपने मुबारक हाथों से सय्यिदना अली ﷛ की कमर से मिट्टी झाड़ते जाते और फ़रमाते जाते: "ऐ

अबुतुराब (मिट्टी वाले) ! उठ जाओ। ऐ अबु तुराब ! उठ जाओ।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना सहल बिन साद ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि (बनू उमय्या के दौरे मलूकियत में) आले मरवान में से एक शख़्स को मदीना का वाली बनाकर भेजा गया। उस गवर्नर ने सय्यिदना सहल ﷺ को बुलवाया और हुक्म दिया कि वो सय्यिदना अली ﷺ को गाली दें। (نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना सहल ﷺ ने साफ़ इन्कार फ़रमा दिया। फिर इस इंकार पर उस (वाली ए मदीना) ने कहा कि चलो कम अज़ कम इतना ही कह दो कि: "अल्लाह तआला अबुतुराब (मिट्टीवाले) पर लानत करे।" (نعوذ بالله من ذلك) उस की इस बात पर सय्यिदना सहल ﷺ ने फ़रमाया कि सय्यिदना अली ﷺ को तो अबुतुराब (मिट्टीवाला) से बढ़कर कोई और नाम महबूब ही ना था। वो तो इस नाम से पुकारे जाने पर ख़ुश हुआ करते थे। इस पर उस (वाली ए मदीना) ने कहा के हमें सारी बात सुनाओ कि उनका ये नाम क्यों कर रखा गया था ? सय्यिदना सहल ﷺ ने फ़रमाया: "(एक मरतबा) रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदा फ़ातमा ﷺ के घर तशरीफ़ लाए तो वहां सय्यिदना अली ﷺ मौजूद ना थे , तो आप ﷺ ने (सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से) पूछा: "तुम्हारा चचाज़ाद (यानी सय्यिदना अली ﷺ) कहां है ?" उन्होंने अर्ज़ की कि मेरे और उनके दर्मियान कोई (झगड़े की) बात हुई तो वो मुझ से नाराज़ होकर चले गए और दोपहर बाहर गुज़ारी। रसुल्ल्लाह ﷺ ने किसी को हुक्म दिया कि जाओ और देखो वो कहां है? किसी ने आकर अर्ज़ की कि वो तो मस्जिद में सो रहे हैं। चुनांचे आप ﷺ उनके पास मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि सय्यिदना अली ﷺ की कमर से लिबास हटा हुआ है और उस पे मिट्टी लग गई है। चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ख़ुद अपने मुबारक हाथों से सय्यिदना अली ﷺ की कमर से मिट्टी झाड़ते और साथ साथ फ़रमाते जाते: "ऐ अबुतुराब (मिट्टीवाले) उठ जाओ। ऐ अबुतुराब उठ जाओ।" [सहीह बुख़ारी: 3703, सहीह मुस्लिम: 6229] [صحيح بخارى : 3703 ، صحيح مسلم : 6229]

40 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना आमिर बिन साद बिन अबीवक़ास ताबई ﷺ अपने वालिद सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ से बयान करते हैं कि हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ ने सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ को हुक्म दिया (तो उन्होंने साफ़ इंकार फ़र्मा दिया) पस हज़रत मुआविया ﷺ ने उनसे पूछा कि आपको अबुतुराब (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ) को गाली देने से किस बात ने रोक रखा है? सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ ने जवाब में फ़रमाया: "मैं हरगिज़ उन्हें कभी भी गाली नहीं दूँगा, क्योंकि 3 बातें (बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली ऐसी हैं) जो सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ के लिए रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाई थीं। और अगर उन 3 बातों में से मुझे एक भी मिल जाती तो (वो फ़ज़्ल) मुझे सुर्ख़ ऊंटों के मिल जाने से भी बेहतर होता। (पहली फ़ज़ीलत सय्यिदना अली ﷺ के लिए ये है कि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुना कि आपने जब किसी ग़ज़वा (तबूक) में सय्यिदना अली ﷺ को पीछे छोड़ा तो उन्होंने (बतौरे शिकवा) कहा कि आप ﷺ ने मुझे औरतों और बच्चों के साथ पीछे छोड़ दिया है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम इस (इज़्ज़त अफ़्ज़ाई) पर ख़ुश नहीं कि तुम्हारी मुझ से वही निस्बत है जो हारून عليه السلام को मूसा عليه السلام से थी, सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।" और (दूसरी फ़ज़ीलत सय्यिदना अली ﷺ के लिए ये है कि) मैंने ग़ज़्वह-ए-ख़ैबर के दिन रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना: "कल मैं (लश्कर की क़्यादत का) झंडा उस शख़्स को दूँगा, जिस के हाथों पर फ़तह होगी और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ भी उससे मुहब्बत फ़रमाते हैं।" (ये सुनकर) हम सब इसी उम्मीद में रहे (कि शायद झंडा हमें मिल जाए) मगर (सुबह होने पर) आप ﷺ ने फ़रमाया: "अली ﷺ को मेरे पास बुलाकर लाओ।" उन्हें लाया गया तो उनकी आंखें दुखती थीं, पस आप ﷺ ने उन की आंखों में (अपना) लुआब ए दहन मुबारक लगाया और झंडा उन्हें दे दिया और (फिर) उनके हाथों पर फ़तह हासिल हुई।और (तीसरी फ़ज़ीलत सय्यिदना अली ﷺ के लिये है कि) जब (ईसाई पादरियों को मुबाहले का चेलंज देने के लिए) क़ुरआन की ये आयत मुबारका नाज़िल हुई: "ऐ पैगम्बर ﷺ ! फ़रमा दें कि आओ हम अपने बेटों और तुम्हारे बेटों को बुलाते हैं, और अपनी औरतों को भी और तुम्हारी औरतों को भी, और अपने आपको भी और तुम्हें भी, और फिर बड़ी आजिज़ी से (अल्लाह तआला के हुज़ूर इल्तिजा करें फिर लानत भेजें अल्लाह तआला की झूठो पर।" [आले इमरान : 61] तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना अली ﷺ , सय्यिदा फ़ातमा ﷺ सय्यिदना हसन ﷺ और सय्यिदना हुसैन ﷺ को बुलाया और फिर यूं अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह तआला ! ये मेरे अह्ल हैं।" **सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ ने सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ से पूछा कि आप ﷺ को अबुतुराब (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ) को गाली देने से किस बात ने रोक रखा है? सय्यिदना साद ﷺ ने जवाब में फ़रमाया: जब तक 3 बातें (बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली) जो सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ के लिए रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाई थीं। मुझे याद रहेंगी उस वक़्त तक मैं सय्यिदना अली ﷺ को गाली नहीं दूँगा "उन 3 बातों में से मुझे एक (बात) भी मिल जाती तो (वो) मुझे सुर्ख़ ऊंटों से ज़्यादह महबूब होती। (फिर आगे इस हदीस में भी आख़िर तक वही अल्फ़ाज़ हैं जो **सहीह मुस्लिम** की हदीस में गुज़र चुके हैं, लेकिन इसके आख़िर में है कि) फिर सय्यिदना आमिर बिन साद ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! साद बिन अबीवक़ास ﷺ की ये गुफ़्तगू सुन लेने के बाद हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ जितना अर्सा मदीना शरीफ़ में मुक़ीम रहे इस मौज़ूअ पर एक हर्फ़ का भी कलाम ना किया।" **सुनन इब्नेमाजा की**

हदीस में है: सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ؓ का बयान है कि हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ؓ किसी हज के मौक़े पर (मदीना शरीफ़) आए तो सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ؓ हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ؓ के पास मिलने आए तो हज़रत मुआविया ؓ ने (उनके सामने) सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ का तज़्किरह किया और उन (सय्यिदना अली ؓ) की तौहीन की तो सय्यिदना साद ؓ को गुस्सा आ गया और उन्होंने फ़रमाया तुम ऐसी बातें उस शख़्स के मुताल्लिक़ कहते हो जिसके बारे, मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ उसका मौला (दिली महबूब) अली ؓ है, और मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था: "ऐ अली ؓ ! तेरी मुझ से वही निस्बत है जो हारून ؑ को मूसा ؑ से थी, सिवाए इसके के मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।" और मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये फ़रमाते हुए सुना था "आज मैं (लश्कर की क़्यादत का) झंडा उस शख़्स को दूँगा, जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूल भी उससे मुहब्बत रखते हैं।" [सहीह मुस्लिम: 6220, सुनन नसाई अलकुबरा: 8439, सुनन इब्ने माजा: 121]

[صحیح مسلم : 6220 ، سنن نسائی اکبریٰ : 8439 ، قال الشیخ غلام مصطفی فی خصائص علی : اسناده صحیح ، سنن ابن ماجه : 121 ، قال الشیخ الالبانی : اسناده صحیح]

41 सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है: सय्यिदना अबुबकर बिन ख़ालिद ताबई ؒ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना साद बिन मालिक (अबीवक़ास) ؓ को मदीना मुनव्वरह में मिलने गया तो वो हमसे पूछने लगे कि: "मैंने सुना है कि तुम लोग सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ को गाली देते हो?" मैंने अर्ज़ किया: क्या वाक़ई आप ؓ ने हमारे मुताल्लिक़ ऐसी बात सुनी है? तो उन्होंने फ़रमाया: "हां ऐसा ही है, शायद तुमने भी उन्हें गाली दी होगी ?" मैंने अर्ज़ की अल्लाह तआला की पनाह! (कि हमने कभी ऐसी हरकत नहीं की)। सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ؓ ने फ़रमाया "सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ؓ को कभी गाली ना देना। बेशक अगर मेरी मांग (यानी सर के दर्मियाने हिस्से) पर आरा भी रख दिया जाए (यानी मुझे इन्कार करने पे अपनी जान चले जाने का ख़ौफ़ हो और मुझे मजबूर किया जाए) कि मैं सय्यिदना अली ؓ को गाली दूँ तो मैं फिर भी उन्हें गाली नहीं दूँगा क्योंकि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से (सय्यिदना अली ؓ के फ़ज़ाइल में) बहुत कुछ सुन रखा है।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना कैस बिन अबुहाज़म ताबई ؒ बयान करते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरह के बाज़ार में घूम फिर रहा था। इसी दैरान जब मैं अह्जारज़ियत (नामी जगह पर) पहुंचा तो देखा कि लोग एक घुड़सवार के गिर्द जमा हैं और वो घुड़सवार सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ को गालियां बक रहा है और वो लोग (उस गुस्ताख़ घुड़सवार को मना करने की बजाए) उसके गिर्द मज्मा लगाए खड़े हैं। इसी दौरान इत्तफ़ाक़न सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ؓ वहां तशरीफ़ ले आए और पूछा: "ये क्या हो रहा है?" लोगों ने अर्ज़ की: "ये शख़्स सय्यिदना अली बिन अभी तालिब ؓ को गालियां दे रहा है।" (نعوذ باللہ من ذلك) इस पर सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ؓ आगे बढ़े तो लोगों ने (इहतराम में) उनके लिए रास्ता खुला कर दिया और वो शख़्स के सामने जाकर खड़े हुए और फ़रमाया: "ऐ शख़्स! तू किस बिना पर सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ को गालियां दे रहा है? (ऐ गुस्ताख़ मुझे बता) क्या वो (सय्यिदना अली ؓ) सबसे पहले मुसलमान नहीं थे? क्या वो (सय्यिदना अली ؓ) रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सबसे पहले नमाज़ पढ़ने वाली शख़्सियत नहीं थे? क्या वो (सय्यिदना अली ؓ) सबसे ज़्यादा दुनिया से बेरग़बती रखने वाली शख़्सियत नहीं थे? क्या वो (सय्यिदना अली ؓ) सबसे बढ़कर इल्म रखने वाली शख़्सियत नहीं थे? साद बिन अबीबक़ास ؓ (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ के) मज़ीद फ़ज़ाइल ज़िक्र करते रहे यहां तक कि फ़रमाया: "क्या वो (सय्यिदना अली ؓ) रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादी के रिश्ते से आपके दामाद नहीं थे? क्या रसूलुल्लाह ﷺ के ग़ज़वात में वो (सय्यिदना अली ؓ) आप ﷺ के अलमबर्दार (झंडा उठाने वाले) नहीं थे? फिर साद ؓ ने मुह (चेहरा) क़िब्ले की तरफ़ किया और दोनों हाथ उठा कर दुआ की: "ऐ अल्लाह तआला! ये शख़्स तेरे वलियों में से एक वली को गालियां बक रहा है, इस हजूम के मुंतशिर होने से पहले पहले इन्हें अपनी क़ुदरत का मुज़ाहिरा दिखा दे"। सय्यिदना क़ैस बिन अबुहाज़म ताबई ؒ बयान करते हैं: "हम अभी मुन्तशिर भी नहीं हुए थे कि उस (गुस्ताख़ घुड़सवार) की सवारी (ज़मीन में) धंसने लगी और उसकी सवारी ने उसको खोपड़ी के बल पत्थरों पर पटख़ दिया, जिसकी वजह से उस (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ के गुस्ताख़ घुड़सवार) का दिमाग़ फट गया और वो वहीं मर गया।"[सुनन नसाई अलकुबरा:8477,अलमुसतदरकलिलहाकिम: 6121]

[سنن نسائی الکبریٰ : 8477 ، قال الشیخ غلام مصطفی فی خصائص علی : اسناده صحیح ، المستدرک للحاکم : 6121 ، قال الامام حاکم و الامام الذهبی : اسناده صحیح]

42 सुनन अबुदाऊद की हदीस में है: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालम ताबई ؒ बयान करते हैं कि जब फ़लां शख़्स (यानी हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ؓ जिनका नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) कूफ़ा में आया तो उन्होंने फ़लां शख़्स (यानी हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा जिन का नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) को ख़तीब मुक़र्रर किया। (इस मौक़े पर हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ؓ की तक़रीर सुनकर) सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ؓ ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया: "इस ज़ालिम (ख़तीब हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ؓ) को देख रहे हो? (जो कि सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ पर लानत कर रहा है, जिसकी ख़बर इसी हदीस के अगले तरीक़ में आ रही है) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालम ताबई ؒ बयान करते हैं कि फिर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ؓ (जो पहले 10

इस्लाम लाने वालों में शामिल थे और सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ के बहनोई भी थे) ने 9 अफ़राद के बारे में जन्नती होने की गवाही दी (और फ़रमाया कि) मैं अगर दसवें शख़्स की गवाही भी दे दूँ तो कोई गुनाह नहीं होगा (यानी बिल्कुल दुरुस्त होगा)।" मैंने पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन कौन से हैं? सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ ने बताया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कोहे हिरा पर खड़े होकर इरशाद फ़रमाया था: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर (इस वक़्त सिर्फ़) नबी या सिद्दीक़ या शहीद ही तो (मौजूद) हैं।" मैंने (फिर) पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन कौन से हैं?" सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया (वो 9 अफ़राद ये हैं): "रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ, सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ, सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ, सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ)।" मैंने फिर पूछा कि और दसवां शख़्स कौन है ? वो (सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ) थोड़ी देर (आजिज़ी के बाइस) ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया: "(वो दसवां शख़्स) मैं हूँ।" (**नोट: इसी हदीस से एक और मिलती जुलती रिवायत सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ से जामेअ तिरमिज़ी में हदीस नम्बर 3747 नक़ल हुई है,** लेकिन उस हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ की बजाए सय्यिदना अबु उबैदा बिन जराह رضی اللہ عنہ नाम आया है) **सुनन नसाई अलकुबरा और मुस्नद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालम ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि जब हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ कूफ़ा में आए तो हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा رضی اللہ عنہ ने कुछ ख़ुतबा देने वाले मुक़र्रर किये जो कि सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ पर ज़बान दराज़ी कर रहे थे चुनाँचे सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया इस ज़ालिम शख़्स (हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा رضی اللہ عنہ) को देखते हो कि ये एक जन्नती शख़्स (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ) पर लानत करवाता है।" फिर उन्होंने 9 अफ़राद के बारे में गवाही दी कि वो जन्नती हैं। और (फ़रमाया:) "अगर मैं दसवें शख़्स के जन्नती होने की ख़बर दूँ (तो भी सच होगा)।" मैंने पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन से हैं? सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ ने बताया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कोहे हिरा पर खड़े होकर इरशाद फ़रमाया था: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर (इस वक़्त सिर्फ़) नबी या सिद्दीक़ या शहीद ही तो (मौजूद) हैं।" मैंने (फिर) पूछा कि वो 9 अफ़राद कौन कौन से हैं?" सय्यिदना सईद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया (वो 9 अफ़राद ये हैं): "रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना उस्मान رضی اللہ عنہ, सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ, सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ, सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ)।" मैंने (फिर) पूछा कि और दसवां शख़्स कौन है? वो (सय्यिदना सईद थोड़ी देर (आजिज़ी के बाइस) ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया: "मैं हूँ।" [सुनन अबुदाऊद: 4648, सुनन नसाई अलकुबरा: 8208 और 8190, सहीह इब्ने हिबान: 6996, अस्सुन्नह इब्ने अबुआसीम: 1220, मुसनद अहमद: 1644]

[سنن ابی داؤد : 4648 ، سنن نسائی الکبریٰ : 8208 اور 8190 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی و الشیخ غلام مصطفی ظہیر فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]
[صحیح ابن حبان : 6996 ، السنۃ لابن ابی عاصم : 1220 ، مسند احمد : 1644 (جلد - 1 ، صفحہ - 189) ، قال الشیخ شعیب الارنوط : اسنادہ صحیح]

43 **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना रियाह बिन हारिस ताबई رحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं फ़लां शख़्स (यानी हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा رضی اللہ عنہ जिनका नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) के पास कूफ़ा की मस्जिद में बैठा था और अहले कूफ़ा भी मौजूद थे कि सय्यिदना सईद बिन ज़ैद वहां तशरीफ़ लाए तो उस (फ़लां शख़्स) ने उन्हें ख़ुशआमदीद कहा और तख़्त पर अपने पांव वाली तरफ़ पास बैठा लिया। इसी दौरान वहां कोई शख़्स आया जिसका नाम कैस बिन अल्क़मा था। उस (फ़लां शख़्स) ने उसका इस्तक़्बाल किया। फिर उस (कैस बिन अल्क़मा) ने मुसल्सल गाली गलोच शुरू कर दी। इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया: "ये शख़्स किसे गालियां दिये जा रहा है?" उस (फ़लां शख़्स) ने कहा कि सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ को गालियां दे रहा है। सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ ने अफ़्सोस से फ़रमाया: "मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे सामने असहाबे रसूल رضی اللہ عنہم को गालियां दी जाती हैं और तुम (फ़लां शख़्स) इस (जुर्म) को नही तो बुरा समझते हो और नही तो मना करते हो? (जबकि इसके विपरीत) मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को ये इरशाद फ़रमाते हुए सुना था, और मैं कोई मनघड़त बात आपकी तरफ़ मंसूब नहीं करूंगा कि कल (रोज़े क़यामत) आपसे मुलाक़ात होने पर मुझे जवाबदेही भुगतनी पड़ जाए, (आप ﷺ ने) फ़रमाया था "(रसूलुल्लाह ﷺ के साथ) सय्यिदना अबुबकर رضی اللہ عنہ जन्नती हैं, सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ जन्नती हैं, सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ जन्नती हैं, सय्यिदना तलहा رضی اللہ عنہ जन्नती हैं, सय्यिदना ज़ुबैर رضی اللہ عنہ जन्नती हैं, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास رضی اللہ عنہ जन्नती हैं और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضی اللہ عنہ जन्नती हैं।" और अगर मैं चाहूँ तो दसवें (ख़ुशनसीब) का नाम भी बता सकता हूँ। फिर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ (आजिज़ी के बाइस) ख़ामोश हो गए। तो लोगों ने बाइसरार पूछा कि वह दसवें कौन हैं ? तो फ़रमाया: "वो (दसवां शख़्स) सईद बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ है।" फिर फ़रमाया: "(तुम सब कान खोलकर सुन लो) रसूलुल्लाह ﷺ की मअयत में किसी सहाबी का चेहरा ग़ुबार आलूद होना, तुममें से किसी के सारी उम्र के नेक अमाल करने से बेहतर है ख़्वाह उसे सय्यिदना नूह عليه السلام जितनी उम्र (ही क्यों ना) दे दी जाए।" **मुस्नद अहमद की हदीस में है:** हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा رضی اللہ عنہ बड़ी मस्जिद में थे और उनके पास दाएं बाएँ अहले कूफ़ा मौजूद थे, इसी दौरान उनके पास सय्यिदना सईद बिन ज़ैद सहाबी رضی اللہ عنہ तशरीफ़ लाए। हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा رضی اللہ عنہ ने उन्हें ख़ुशआमदीद कहा और (शाही) तख़्त पर अपने पाऊं की जानिब अपने पास बैठा लिया। फिर एक कूफ़ी शख़्स आया

और उसने हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ की तरफ़ मुतवज्जा होकर मुसलसल गालियां देना शुरु कर दीं। सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने पूछा: "ऐ मुग़ीरा ﷺ ! ये किसको गालियां दे रहा है ?" उन्होंने कहा: "ये सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ को गाली दे रहा है।" इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने (ग़ुस्से में आकर) फ़रमाया: ऐ मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ,ऐ मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ! ऐ मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ ! मैं ये क्या सुन रहा हूँ कि असहाबे रसूल ﷺ को तुम्हारे पास गालियां दी जाती हैं और तुम इस (जुर्म) को ना तो बुरा समझ रहे हो और ना (ही) मना करते हो ? (जबकि इस के बर्अक्स) मैं रसूलुल्लाह ﷺ के मुताल्लिक़ गवाही देता हूँ, वो जो कुछ मेरे कानों ने सुना और मेरे दिल ने महफ़ूज़ कर लिया, और मैं कोई मनघड़त बात आप ﷺ की तरफ़ मंसूब नहीं करूंगा कि कल (रोज़-ए-क़यामत) आप ﷺ से मुलाक़ात होने पर मुझे जवाब देही भुगतनी पड़ जाए, (आप ﷺ ने) फ़रमाया था सय्यिदना अबुबकर ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना उमर ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना अली ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना उस्मान ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना तलहा ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ जन्नती हैं, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ जन्नती हैं और सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ जन्नती हैं।" और एक नवां मुसलमान भी जन्नती है, अगर मैं चाहूँ तो उसका नाम भी बता सकता हूँ"। इस पर अहले मस्जिद ने बा इसरार अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछा: "ऐ रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी ﷺ ! वो नवां शख़्स कौन है ?" सय्यिदना सईद ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने मुझे अल्लाह तआला का वास्ता दे डाला है, अल्लाह तआला की क़सम ! वो नवां मुसलमान मैं (सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ) हूँ और रसूलुल्लाह ﷺ दसवें हैं। अल्लाह तआला की क़सम! ऐसा शख़्स, जिसका चेहरा रसूलुल्लाह ﷺ की मअयत में गर्द आलूद हुआ, उसका ये अमल तुमहारी तमाम उम्र की नेकियों से बेहतर है ख़्वाह तुम्हें सय्यिदना नूह ﷺ जितनी उम्र (ही क्यों ना) दे दी जाए।"[सुनन अबुदाऊद:4650, मुस्नद अहमद:1629]

[سنن ابی داؤد : 4650 ، مسند احمد : 1629 (جلد - 1 ، صفحہ - 187) ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی و الشیخ شعیب الارنووط : اسنادہ صحیح]

44 **सुनन नसाई अल कुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालिम ताबई ﷺ बयान करते हैं कि हज़रत मुग़ीरा ﷺ ने ख़ुतबा दिया और उस में सय्यिदना अली ﷺ को सब व शतम का निशाना बनाया तो इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद ये बात सुनी कि आप ﷺ फरमा रहे थे: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर (इस वक़्त सिर्फ़) नबी ﷺ या सिद्दीक़ या शहीद ही तो मौजूद हैं।" और उस वक़्त उस (पहाड़) पर रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर ﷺ , सय्यिदना उमर ﷺ , सय्यिदना उस्मान ﷺ ,सय्यिदना अली ﷺ ,सय्यिदना तलहा ﷺ ,सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ ,सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ और सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ और सईद बिन ज़ैद ﷺ थे। **सुनन नसाई अल कुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ालिम ﷺ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ के सामने बैठा हुआ था, तो वह फ़रमाने लगे: "हमारे ये हुक्मरान हमें हुक्म देते हैं कि हम अपने भाइयों पर लानत करें, और बेशक हम तो लानत नहीं करेंगे बल्कि हम तो उनके लिए अल्लाह तआला कि बारगाह में आफ़ियत की दुआ करेंगे, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से खुद ये बात सुनी कि आप ﷺ फरमा रहे थे: "अनकरीब मेरे बाद बहुत से फ़ितने रुनुमा (प्रकट) होंगे और ऐसे ऐसे होगा।" इसी दौरान एक शख्स वहा आया और सय्यिदना सईद ﷺ से अर्ज़ की कि मुझे तो सय्यिदना अली ﷺ से हर चीज़ से बढ़कर मुहब्बत है ! इस पर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने उस से फ़रमाया: "(तुम्हें बशारत हो कि) तुम तो एक जन्नती इन्सान से मुहब्बत करते हो।" फिर सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ ने हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह ﷺ, सय्यिदना अबुबकर ﷺ , सय्यिदना उमर ﷺ , सय्यिदना उस्मान ﷺ , सय्यिदना अली ﷺ , सय्यिदना तलहा ﷺ , सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ , सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ और सय्यिदना साद बिन अबी वक़ास ﷺ थे, अगर मैं चाहूँ तो दसवें (जन्नती) आदमी का नाम भी बता सकता हूँ, यानी वह (सय्यिदना सईद ﷺ) खुद थे, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ हिरा पहाड़! थम जा, तुझ पर नबी ﷺ या सिद्दीक़ या शहीद (मौजूद) हैं। **सुनन नसाई अल कुबरा और सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अखनस ताबई ﷺ बयान करते हैं कि सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ﷺ के पास बैठे हुए थे तो हज़रत मुग़ीरा बिन शैबा ने सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷺ से मुताल्लिक़ कुछ (नाज़ेबा अल्फ़ाज़ में) कहा तो सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷺ वहीं पर खड़े हुए और फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से खुद ये बात सुनी कि आप ﷺ फरमा रहे थे: "अहले क़ुरैश में से 10 आदमी जन्नत में हैं, (रसूलुल्लाह ﷺ जन्नत में हैं), सय्यिदना अबुबकर ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना उमर ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना उस्मान ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना अली ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना तलहा ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ जन्नत में हैं, सय्यिदना साद बिन अबीवक़ास ﷺ जन्नत में हैं और सय्यिदना ज़ुबैर ﷺ जन्नत में हैं)।" [सुनन नसाई अल कुबरा:8205,8206 और8210, सुननअबुदाऊद: 4649]

[سنن نسائی الکبریٰ : 8205 ، 8206 اور 8210 ، سنن ابی داؤد : 4649 ، قال الشیخ غلام مصطفی ظہیر امن پوری فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

45 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना बरा बिन आज़िब बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने माहे ज़िकादा में उमरा का क़सद फ़रमाया तो अहले मक्का ने आप ﷺ को मक्का मुकर्रमा में दाख़िले की इजाज़त से इंकार कर दिया। बिल आख़िर फ़ैसला ये हुआ कि आप ﷺ (आइन्दा साल) 3 दिन इस (मक्का मुकर्रमा) में ठहर सकेंगे और मुआहिदे की तहरीर में लिखा गया: "ये वो फ़ैसला है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के साथ तय पाया है।" इस पर क़ुरैश मक्का बिगड़ गए और कहा कि हम तो आपको (रसूलुल्लाह ﷺ) नहीं मानते

क्योंकि अगर हमें (यक़ीनी) इल्म हो कि आप नबी हैं तो आपको (मक्का मुकर्रमा में) दाख़िले से क्यों रोकते ? लिहाज़ा यहां मुहम्मद बिन अब्दुल्लाहﷺ लिखें। आपﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "मैं अल्लाह तआला का रसूलﷺ भी हूँ और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाहﷺ भी हूँ।" फिर आपﷺ ने सय्यिदना अली बिन अबुतालिब रضی اللہ عنہ से इरशाद फ़रमाया: "लफ़्ज़ रसूलुल्लाहﷺ मिटा दो।" सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ ने (जज़्बात मुहब्बत में) अर्ज़ की: नहीं अल्लाह तआला की क़सम! मैं आपﷺ (के नाम मुबारक के साथ लिखे रसूलुल्लाह) को नहीं मिटा सकता।" चुनांचे आपﷺ ने (मुआहिदे की) तहरीर ख़ुद पकड़ी, हालांकि आप अच्छी तरह लिखना नहीं जानते थे, फिर लिखा (गया): "ये (वो मुआहिदा) है जो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाहﷺ ने तय कर लिया है कि मक्का मुकर्रमा में कोई हथियार लेकर नहीं आएंगे, सिवाए एक तलवार के जो नयाम में बंद होगी और ये कि अहले मक्का में से कोई भी आपﷺ के पीछे (मदीन मुनव्वरा) जाना चाहे तो आपﷺ उसे नहीं ले जाएंगे और अपने साथियों में से किसी को नहीं रोकेंगे अगर वो उस (मक्का मुकर्रमा) में मुक़ीम होना चाहे।" .... चुनांचे रसूलुल्लाहﷺ ने सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ से (बतौर दिलजोई के) इरशाद फ़रमाया: "(ऐ अली!) तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूँ।" **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना इमरान बिन हुसैन رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अली मुझसे है और मैं अली से हूँ और वह मेरे बाद हर एक मुसलमान के वली (दिली दोस्त) होंगे।" **जामेअ तिरमिज़ी की एक हदीस में है:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ के पास एक भुना हुआ परिंदा था, आपﷺ ने दुआ की: "ऐ अल्लाह ताआला! अपनी मखलूक में से सबसे महबूब तरीन शख्स को मेरे पास भेज जो मेरे साथ इस परिंदे को खाए।" पस (दुआ कुबूल हुई और उसी वक़्त ही) सय्यिदना मौला अली رضی اللہ عنہ रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और रसूलुल्लाहﷺ के साथ परिंदा तानावुल फ़रमाया। **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا से पूछा गया कि रसूलुल्लाहﷺ को लोगों में से सबसे बढ़कर महबूब कौन था? फ़रमाया: सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا पूछा गया: मर्दों में कौन था? फ़रमाया: उनके शौहर (सय्यिदना अली इब्ने तालिब رضی اللہ عنہ) जो बहुत ही रोज़े रखने वाले और शब ज़िन्दादार (रात को जाग कर इबादत करने वाले) थे। **मुसनद अबुयाला, अलमुअज्जमउलसगीर और सुनन नसाई अलकुबरा की हदीस में है:** सय्यिदना अबु अब्दुल्लाह जद्ली ताबईرحمہ اللہ बयान करते हैं कि उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا (दुखी होकर) मुझसे फ़रमाने लगीं: "क्या रसूलुल्लाहﷺ को मिम्बरो पर गालियां दी जाती हैं ? (نعوذ باللہ من ذلک) मैंने अर्ज़ किया कि ये (इन्तिहाई गुस्ताख़ाना और क़बीह फ़ैल) क्यों कर हो सकता है ? तो सय्यिदा उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया: "क्या सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ और उनसे मुहब्बत करने वालों को गालियां नहीं दी जातीं ? (نعوذ باللہ من ذلک) (जबकि) मैं गवाही देती हूँ कि रसूलुल्लाह ﷺ उन (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ) से मुहब्बत फ़रमाया करते थे।" (यानी सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ को मिम्बरो पर गालियां देना गोया कि रसूलुल्लाहﷺ को मिम्बरो पर गालियां बकने के ही मुतारादिफ़ है। (نعوذ باللہ من ذلک)

[सहीह बुख़ारी: 4251, जामेअ तिरमिज़ी: 3712 और 3721, अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4744, मुसनद अबुयाला: 7013, अलमुअज्जमउलसगीर लिततबरानी: 822, सुनन नसाई अलकुबरा: 8476]

[صحیح بخاری : 4251 ، جامع ترمذی : 3712 اور 3721 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی مشکوۃ المصابیح تحت الحدیث 6094 : اسنادہ صحیح]

[مسند ابی یعلیٰ : 7013 ، المعجم الصغیر للطبرانی : 822 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی مشکوۃ المصابیح تحت الحدیث 6101 : اسنادہ صحیح]

[سنن نسائی الکبریٰ : 8476 ، قال الشیخ غلام مصطفی ظہیر امن پوری فی خصائص علی تحت الحدیث 8476 : اسنادہ صحیح]

नोट अल्लामा जलालुद्दीन अलसयूती (अल मुतवफ़्फ़ा-911 हिजरी) लिखते हैं: "बनू उमय्या (अपने) ख़ुतबात में सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ को गाली दिया करते थे, फिर जब सय्यिदना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ताबईرحمہ اللہ ख़लीफ़ा बने तो उन्होंने इस (ग़लीज़, इंतहाई गुस्ताख़ाना और क़बीह रसम) को बंद करवा दिया, और हकुमती कारिंदों के नाम हुक्मनामा जारी फ़रमाया कि इस (ग़लीज़ रसम) को बंद कर दिया जाए। फिर उसकी जगह इस (आयत) को जारी फ़रमा दिया: "बेशक (ऐ ईमान वालों!) अल्लाह तआला तुम्हें (इन 3 कामों का) हुक्म देता है कि हर मामले में इंसाफ़ से काम लो और एहसान करो, और अच्छा सुलूक करो रिश्तेदारों के साथ, और (तुम्हें इस 3 कामों से) मना फ़रमाता है बेहयाई से और बुरे कामों से और सरकशी से । वो (अल्लाह तआला) तुम्हें वाज़ करता है ताकि तुम नसीहत हासिल कर सको।" [अननहल: 190], चुनांचे उस वक़्त से अब तक ख़ुतबात में इस (आयत मुबारका) की क़िराअत मुसलसल जारीहै।" [तारीख ए खुलफ़ा (अल सयूती) "बाब उमर बिन अब्दुलअज़ीज़"] [تاریخ الخلفاء للسیوطی "باب عمر بن عبدالعزیز"]

46 **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन ज़ुबैर ताबईرحمہ اللہ बयान करते हैं कि मैं सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ के हमराह मैदाने अरफ़ात में था, तो आप رضی اللہ عنہ ने मुझसे दरयाफ़्त फ़रमाया: क्या वजह है कि लोगों से तल्बिया (لبیک اللھم لبیک، لبیک اللھم لبیک،) की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही?" मैंने अर्ज़ किया कि लोग हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضی اللہ عنہ (के मना करने की वजह) से डरते हैं। (इसलिए बुलन्द आवाज़ से तल्बिया कहने की बजाए आहिस्ता आवाज़ में ही कह लेते हैं)।चुनांचे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ (गुस्से की हालत में) अपने खेमे से बाहर तशरीफ़ लाए और बुलंद आवाज़ से पुकारना शुरू कर दिया: (لبیک اللھم لبیک، لبیک اللھم لبیک،) ، (لبیک اللھم لبیک، لبیک اللھم لبیک،)(और साथ ही फ़रमाया) बेशक उन लोगों ने सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضی اللہ عنہ से बुग़्ज़ रखने की वजह से (बुलन्द

आवाज़ से तल्बिया कहने की) सुन्नत मुबारका को (ही) छोड़ दिया है। **सुनन अलकुबरा लिलबैहक़ी की हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन ज़ुबैर ताबईؒ का बयान है कि हम अरफ़ात के मैदान में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बासؓ के पास थे, तो उन्होंने सवाल फ़रमाया: "क्या वजह है कि मुझ लोगों के तल्बिया की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही ?" मैंने अर्ज़ किया कि लोग हज़रत मुआविया से डरते हैं। " सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बासؓ (गुस्से की हालत में) अपने खेमे से बाहर तशरीफ़ लाए और पुकारा: (لبیک اللھم لبیک ، لبیک اللھم لبیک ، لبیک), ख़्वाह हज़रत मुआविया बिन अबु सुफ़्यानؓ की नाक ख़ाक आलूद हो जाए (यानी वो मेरे इस सुन्नत पर अमल करने को ख़्वाह बुरा ही मान जाएं), (और साथ ही फ़रमाया) ऐ अल्लाह तआला ! इन लोगों पर लानत फ़रमा बेशक इन लोगों ने सय्यिदना अलीؓ के बुग़्ज़ की वजह से (बुलंद आवाज़ से तल्बिया कहने की) सुन्नत मुबारका को (ही) छोड़ दिया है। (यानी सय्यिदना अलीؓ का बुलंद आवाज़ से तल्बिया कहना तो रसूलुल्लाहﷺ की सुन्नत पर अमल करने की वजह से था ना कि उनका कोई ज़ाती इज्तिहाद था) [सुनन नसाई: 3009, सुनन अलकुबरा (बैहक़ी): 9230]

[سنن نسائی : 3009 ، قال الشیخ زبیر علیزئی و الالبانی : اسنادہ صحیح][سنن الکبری للبیھقی : 9230 (جلد - 5 ، صفحہ - 113) ، قال الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

47 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अली बिन अबुतालिबؓ बयान फ़रमाते हैं: "क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने को फाड़ा (नबातात निकाले) और मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया, बेशक नबी ए उम्मीﷺ ने मुझसे ये अहद किया था कि मुझ (सय्यिदना अली बिन अबुतालिबؓ) से सिर्फ़ मोमिन ही मुहब्बत रखेगा और मुनाफ़िक़ ही मुझ (सय्यिदना अली बिन अबुतालिबؓ से बुग़्ज़ रखेगा।
[सहीह मुस्लिम:240] [صحیح مسلم : 240]

48 **फ़ज़ाएले सहाबा अहमद बिन हम्बल की हदीस में है:** सय्यिदना अबुमर्यम ताबईؒ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना अली बिन अबुतालिबؓ को ये फ़रमाते हुए सुना: "मेरी (ज़ात की) वजह से दो (क़िस्म के) लोग हलाक (यानी गुमराह) हो जाएंगे, (पहली क़िस्म) हद से ज़्यादा मुहब्बत में ग़ुलू करने वाले और (दूसरी क़िस्म मुझसे) बुग़्ज़ रखने वाले।" **फ़ज़ाइलुस्सहाबा और अस्सुन्नह की हदीस में है:** सय्यिदना अबु असवार ताबईؒ बयान करते हैं कि सय्यिदना अली बिन अबुतालिबؓ ने (रसूलुल्लाहﷺ की तरफ़ से बताई हुई ग़ैबी ख़बर की बुनियाद पर) इरशाद फ़रमाया: कुछ लोग मुझसे मुहब्बत करेंगे यहां तक कि मुहब्बत (में ग़ुलू करना) उन (राफ़्ज़ियों) को आग में दाख़िल कर देगा और कुछ लोग मुझसे बुग़्ज़ रखेंगे यहां तक कि ये बुग़्ज़ रखना उन (नास्बियों) को आग में ले जाएगा।"
[फ़ज़ाइलुस्सहाबा (अहमद बिन हम्बल):932 और 920, अलसुन्नह (इब्ने अबुआसिम): 819,]

[فضائل الصحابۃ لاحمد ابن حنبل : 932 اور 920 (جلد - 2 ، صفحہ - 445 اور 443) ، السنۃ لابن ابی عاصم : 819 ، قال الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

E हज़रत मुआवियाؓ को हुकूमत मिल जाने के बाद से बतदरीज उम्मत पर कैसी मलुकियत मुसल्लत हुई और फिर उसका क्या भयानक नतीजा निकला?

49 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना हसन बसरी ताबईؒ का बयान है कि (सय्यिदना अली बिन अबुतालिबؓ की शहादत के बाद जब सहाबा-ए-किरामؓ ने मश्वरे के बाद सय्यिदना हसन बिन अलीؓ को मुत्तफ़िक़ा (सर्वसम्मति) तौर पर ख़लीफ़ा चुन लिया तो अल्लाह तआला की क़सम ! सय्यिदना हसन बिन अलीؓ पहाड़ों जैसे लश्कर लेकर हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियानؓ के मुक़ाबले में आए थे, (जिनको देखकर) हज़रत अम्र बिन आसؓ ने कहा: "मुझे ऐसे लश्कर नज़र आ रहे हैं जो मुकाबले में आई फ़ौज को फ़ना किए बग़ैर वापस नहीं लौटेंगे।" ये सुनकर हज़रत मुआवियाؓ ने कहा: "ऐ अम्र! अगर दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को मार डाला तो उनके (पस्मान्दगान) का ज़िम्मेदार कौन होगा ? उनकी (बेवा) औरतों का ज़िम्मेदार कौन होगा ? उनके यतीम बच्चों का ज़िम्मेदार कौन होगा ? चुनांचे हज़रत मुआवियाؓ ने बनी अब्द शम्स के दो क़ुरैशी अफ़राद, अब्दुर्रहमान बिन समरा और अब्दुल्लाह बिन आमिर को भेजा कि जाओ और उस शख़्स (सय्यिदना हसन बिन अलीؓ) को (सुलह की) पेशकश करो और उनसे मुसालहत का मुतालबा करो। वो दोनों उन (सय्यिदना हसन बिन अलीؓ) के पास आए और सुलह व अमन की बात चलाई। सय्यिदना हसन ने फ़रमाया: "हम बनू अब्दुलमुत्तलिब (इन जंगों में) बहुत माल ख़र्च कर चुके हैं (यानी सुलह की सूरत में उनकी किफ़ालत की ज़िम्मेदारी कौन लेगा ?) और ये उम्मत (इन जंगों की वजह से) अपने ख़ून में लतपत हो चुकी है।" उन दोनों ने अर्ज़ की: "हज़रत मुआवियाؓ आपको फ़लां फ़लां पेशकश करते हैं और कुछ मुतालबात के तलबगार हैं (यानी आपؓ ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हो जाएं)।" सय्यिदना हसन बिन अलीؓ ने फ़रमाया: इस (समझोते) की तक्मील का ज़िम्मेदार कौन होगा? उन दोनों ने जवाब दिया कि हम दोनों ज़िम्मेदार हैं। चुनांचे सय्यिदना हसन बिन अलीؓ जो भी मुताल्बा करते गए वो दोनों अपने ज़िम्मा लेते गए। (जब सुलह हो गई तो) सय्यिदना हसन बसरी ताबईؒ फ़रमाने लगे कि मैंने सय्यिदना अबुबकरؓ को ये फ़रमाते हुए सुना कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाने के दौरान सय्यिदना

हसन बिन अली رضي الله عنه को अपने पहलू में लिए हुए कभी उन की तरफ़ देखते और कभी लोगों की तरफ़ और साथ साथ ये इरशाद फ़रमाते जाते: "मेरा ये बेटा सरदार है (यानी अपनी हकूमत से दस्तबरदार होकर कुरबानी करके बड़ेपन का मुज़ाहिरा करेगा) और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों में सुलह करवा देगा (यानी ख़लीफ़ा राशिद सय्यिदना अली رضي الله عنه की हक़ वाली जमाअत और दूसरी हज़रत मुआविया رضي الله عنه की जमाअत जिसने ख़लीफ़ा ए राशिद के ख़िलाफ़ बग़ावत की)।"

[सहीह बुख़ारी: 2704 और 7109] [صحیح بخاری : 2704 اور 7109]

नोट सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه ने जिन शर्तो की बुनियाद पर हज़रत मुआविया رضي الله عنه को हुकुमत सुपुर्द की थी, उनकी पूरी तफ़्सीलात शरोहे अहादीस और कुतुब ए तारीख़ में दर्ज हैं, मसलन:

1. हज़रत मुआविया رضي الله عنه अल्लाह तआला की किताब, रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत और ख़ुल्फ़ा ए राशिदीन رضي الله عنهم के तरीक़े के मुताबिक़ निज़ाम ए हकूमत चलाएंगे।
2. हज़रत मुआविया رضي الله عنه अपने बाद किसी को जानशीन मुक़र्रर नहीं करेंगे बल्कि उम्मत को ख़लीफ़ा के चुनाव के लिए शूरा (मुसलमानों की सलाहकार समिति) पर छोड़ेंगे।
3. सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضي الله عنه की जमाअत के लोग, जो सुलह के बाद हथियार डाल चुके हैं, उनके ख़िलाफ़ किसी क़िस्म की इन्तक़ामी कार्रवाई नहीं की जाएगी।
4. आले मुहम्मद ﷺ के लिए ख़ुम्स (माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा) जो अल्लाह तआला ने कुरआन में मुक़र्रर किया, बदस्तूर अब्दुलमुत्तलिब की संतान को मिलेगा जैसा कि ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन رضي الله عنهم के अद्वार से मिलता आ रहा है।
5. सय्यिदना अली इब्ने तालिब पर बनु उमय्या की मिम्बरों से होने वाला सब व सितम का सिलसला हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया जायेगा | वग़ैरा वग़ैरा। मगर अफ़सोस इन शर्तो की वैसी पाबंदी नही की गई जैसा की इसका हक़ था। [इब्ने अब्दुलबर, इब्ने हजर, इब्ने कसीर, फ़तहुल बारी (बुख़ारी की 7109) के तहत] [الاستیعاب لابن عبدالبر ، الاصابة لابن حجر ، البداية و النهاية لابن كثير ، فتح البارى لابن حجر تحت الحديث البخارى : 7109]

50 अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा की हदीस में है: सय्यिदना उमैर बिन इस्हाक ताबई رحمه الله का बयान है कि मैं और एक दूसरा शख़्स, सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه की अयादत के लिए हाज़िर हुए। सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه उस शख़्स से बार बार फ़रमाते जाते थे: "मुझसे (जो भी इल्मी बात पूछनी है) पूछ लो उस वक़्त से पहले कि तुम न पूछ सको।" उस शख़्स ने अर्ज़ की कि मैं आपसे कुछ पूछना नहीं चाहता (हम तो सिर्फ़ आपकी अयादत करने के लिए हाज़िर हुए हैं), अल्लाह तआला आपको सेहत अता फ़रमाए। फिर आप رضي الله عنه उठे और बैअतुलख़िलाअ में दाख़िल हुए, फिर वापस आए और फ़रमाया: "अभी अभी मैंने अपने जिगर का टुकड़ा थूका है, जिसे मैं इस लकड़ी से उलट पलट रहा था, मुझे कई बार ज़हर पिलाया गया है, और इस बार तो वो (ज़हर) बहुत ही सख़्त था।" सय्यिदना उमैर बिन इस्हाक ताबई رحمه الله का बयान है कि फिर अगले दिन हम दोबारा सुबह सुबह सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه की अयादत के लिए हाज़िर हुए, तो वो (घर से बाहर) बाज़ार में (किसी जगह लेटे हुए) थे, और इसी दौरान (आपके छोटे भाई) सय्यिदना हुसैन बिन अली رضي الله عنه आए और आप आए और आपके सिर मुबारक के पास बैठ गए और पूछा "ऐ मेरे भाईजान ! आपको ज़हर देने वाला कौन है ?" सय्यिदना हसन बिन अली ने पूछा: "क्या तुम उसे क़त्ल करना चाहते हो ?" (सय्यिदना हुसैन बिन अली رضي الله عنه) ने अर्ज़ की: "जी हां! सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه ने फ़रमाया: "अगर मैंने मुजरिम को सहीह शनाख़्त किया है, तो अल्लाह तआला ख़ुद सख़्त इंत्क़ाम लेने वाला है, और अगर वो बेगुनाह है, तो मैं नहीं चाहता कि कोई बेगुनाह (मेरी वजह से) मार दिया जाए।"

[अल मुसन्नफ़ इब्ने अबुशैबा: 37359]

[المصنف ابن ابی شیبه : 37359 ، قال الشيخ غلام مصطفى ظهير فی السنة - 26 : اسناده صحيح]

नोट सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه कि शहादत और उस के बाद पैदा होने वाली भयानक सूरते हाल का बिलकुल सहीह सहीह इदराक करने के लिए यहाँ दर्ज ज़ेल अहम् तरीन हदीस दोबारा मुलाहिज़ा फरमाएं:

51 सुनन अबुदाऊद की हदीस में है: सय्यिदना ख़ालिद ताबई رحمه الله बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضي الله عنه और अम्र बिन अस्वद और बनी असद का एक शख़्स, हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضي الله عنه के पास वफ़द बन कर गए, (इस मौक़े पर मुलाक़ात के दौरान) हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضي الله عنه से कहा: क्या तुम्हें मालूम है कि सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه फ़ौत हो गए हैं? सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضي الله عنه ने फ़ौरन पढ़ा: إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون एक शख़्स (यानी हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान رضي الله عنه जिनका नाम इसी हदीस के अगले तरीक़ में आया है) ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضي الله عنه से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه की मौत को) मुसीबत समझते हो ?"(نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब رضي الله عنه ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه की मौत को) मुसीबत क्यों नही समझूं हालांकि मैंने ख़ुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन बिन अली رضي الله عنه को अपनी गोद मुबारक में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमा रहे थे: "ये

(हसन ﷜) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन ﷜ अली ﷜ से है।" बनू असद के एक शख़्स ने कहा: "वो (हसन ﷜ तो एक अंगारा था जिसे अल्लाह तआला ने बुझा दिया।"(نعوذ باللہ من ذلک)सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ ने (ये बातें सुनने के बाद ग़ुस्से में आकर इरशाद) फ़रमाया: "मैं उस वक़्त तक यहां से नहीं उठूंगा जब तक तुझ (हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷜) को ग़ुस्सा ना दिलाऊं और ऐसी बात ना सुनाऊं जो तुझे नापसंद हो। ऐ मुआविया ﷜ !अगर मैं सच बयान करूं तो मेरी तस्दीक़ कर देना और अगर झूठ बोलूं तो मेरी तर्दीद कर देना।" हज़रत मुआविया ﷜ ने कहा ठीक है। चुनांचे सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ ने पूछा:" मैं तुझे अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि तूने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को सोना पहनने से मना फ़रमाते हुए सुना था?" हज़रत मुआविया ﷜ ने कहा: "हां! फिर सय्यिदना मिक्दाम ﷜ ने पूछा:"मैं तुझे अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि तूने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को रेशम पहनने से मना फ़रमाते सुना था?" हज़रत मुआविया ﷜ ने कहा: "हां! फिर सय्यिदना मिक्दाम ने पूछा: "मैं तुझे अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ कि तूने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ को दरिंदों की खालों (के लिबास) को पहनने से और उन पर (क़ालीन के तौर पर) बैठने से रोका था ?" हज़रत मुआविया ﷜ ने कहा: "हां! फिर सय्यिदना मिक्दाम ﷜ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की क़सम! ऐ मुआविया ﷜ ये सब (हराम वस्तु इस्तेमाल होती हुई) मैंने तेरे घर में देखी हैं।" ये सुनकर हज़रत मुआविय ﷜ ने कहा: "ऐ मिक्दाम ﷜ ! मुझे पता है कि मैं तुम से जीत नहीं सकता।" सय्यिदना ख़ालिद ताबई ﷫ बयान करते हैं कि फिर हज़रत मुआविया ﷜ ने सय्यिदना मिक्दाम ﷜ के लिए उन के दोनों साथियों से बढ़कर इनाम व इकिराम का हुक्म सादिर किया। और सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ ने सारा माल अपने साथियों में ही वहीं बांट दिया और असदी ने किसी को कुछ भी ना दिया। इस बात की ख़बर जब हज़रत मुआविया ﷜ को हुई तो उन्होंने कहा: "सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ तो वाक़ई एक सख़ी शख़्स हैं जिन्होंने दिल खोल कर दे दिया और जो असदी शख़्स है वो अपने माल को अच्छी तरह से संभालने वाला है।" मुस्नद अहमद की हदीस में है कि सय्यिदना ख़ालिद बिन मअदइन ताबई ﷫ बयान करते हैं कि सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ और अम्र बिन अस्वद ﷜ हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷜ से मिलने आए तो हज़रत मुआविया ﷜ बिन अबुसुफ़्यान ﷜ ने सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ से कहा: "क्या तुम्हें मालूम है कि सय्यिदना हसन बिन अली ﷜ फ़ौत हो गए हैं? सय्यिदना मिक्दाम ﷜ ने फ़ौरन पढ़ा:إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ इस पर हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷜ ने सय्यिदना मिक्दाम ﷜ से कहा: "तुम इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली ﷜ की मौत को) मुसीबत समझते हो?"(نعوذ باللہ من ذلک) सय्यिदना मिक्दाम बिन मअदीकरब ﷜ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया: "मैं इसे (यानी सय्यिदना हसन बिन अली ﷜ की मौत को) मुसीबत क्यों नही समझूं हालांकि मैंने ख़ुद देखा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदना हसन बिन अली ﷜ को अपनी गोद मुबारक में बैठाया हुआ था और इरशाद फ़रमा रहे थे: ये (हसन ﷜) मुझ (मुहम्मद ﷺ) से है और हुसैन ﷜ अली ﷜ से है। **[सुनन अबुदाऊद:4131, मुस्नद-ए-अहमद:17228]**

[سنن ابی داؤد : 4131 ، مسند احمد : 17228 (جلد - 4 ، صفحہ - 132) ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

52 सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबुराफ़ेअ ताबई ﷫ बयान करते हैं कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मुझसे पहले जिस भी नबी ﷤ को मबऊस फ़रमाया तो उन सब ही की उम्मत में उनके कुछ हवारी (क़रीबी और ख़ास साथी) और अस्हाब हुआ करते जो उस नबी ﷤ की सुन्नत पर चलते और उसके अहकाम की पैरवी किया करते। फिर उन हवारियों के बाद ऐसे नालायक लोग उनके जानशीन होते जो ज़बान से वो कहते जो वो नहीं करते और वो कुछ करते जिसका हुक्म नहीं दिया गया था। (ऐसी बुरी सूरते हाल में) जो कोई उन (नालायक जानशीनों) से अपने हाथों से जिहाद करेगा तो वो (अल्लाह तआला के नज़दीक) मोमिन है। और जो कोई भी उन से अपनी ज़बान से जिहाद करेगा तो वो (अल्लाह तआला के नज़दीक) मोमिन है। और जो कोई भी उनसे अपने दिल से (बुरा समझते हुए) जिहाद करेगा तो वो (भी अल्लाह तआला के नज़दीक) मोमिन है। और इसके बाद तो राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं है। सय्यिदना अबुराफ़अ ताबई ﷫ बयान करते हैं कि मैंने जब यही हदीस सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷜ से बयान की तो उन्होंने इस (के हदीस होने) का इंकार कर दिया। इत्तफ़ाक़न मुझ से मिलने के लिए सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷜ वहां तशरीफ़ लाए और (मदीना शरीफ़ की एक वादी) क़नातह में क़याम किया, तो सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷜ मुझे साथ लेकर उनकी अयादत के लिए हाज़िर हुए। जब हम उनके पास बैठ गए तो मैंने उसी हदीस के मुताल्लिक़ सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷜ से सवाल किया तो उन्होंने बिल्कुल वही हदीस बयान की जो मैं सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷜ से बयान कर चुका था। सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना तारिक़ बिन शहाब ताबई ﷫ बयान करते हैं कि सबसे पहले मरवान बिन हुक्म ने ईद के दिन नमाज़ से पहले ख़ुत्बे की बिदअत शुरू की (नोट: नमाज़ के बाद ख़ुत्बे में बनू उमय्या के गवर्नर सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ﷜ पर अपने मिम्बरो से लानत करवाते थे और लोग ख़ुत्बा सुने बग़ैर ही अपने अपने घरों को चले जाया करते थे) तो इस पर एक शख़्स ने उठकर (मरवान से) कहा: "नमाज़े ईद ख़ुत्बे से पहले होने चाहिए (क्योंके यही सुन्नत

है)।" इस पर मरवान ने कहा: "बेशक वो (दौरे नबवी के) तरीक़े तो अब मतरूक हो चुके हैं।" (نعوذ بالله من ذلك) (उस मौक़े पर) सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक उस शख़्स ने (वक़्त के हुक्मरान को कल्मा ए हक़ के ज़रिये तम्बीह करके) अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है। क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद फ़रमाते हुए सुना था: "तुममें से जो कोई नापसंदीदा चीज़ देखे तो उसे हाथ से (बज़ोरे बाज़ू) बदल डाले, अगर इस की ताक़त ना हो तो ज़बान से (मना करदे) और अगर इसकी भी इस्ताअत ना रखता हो तो दिल से (इस चीज़ को बुरा जाने) और ये (तीसरा दर्जा) सबसे कमज़ोर ईमान का है।" सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा के मौक़े पर ईदगाह की तरफ़ तशरीफ़ ले जाते तो सब से पहले नमाज़ (ईद) अदा फ़रमाते , फिर लोगों के सामने खड़े होते जबकि लोग अपनी सफ़ों में बैठे होते। चुनांचे आप ﷺ उन्हें नसीहत फ़रमाते और (नेकी का) हुक्म देते, और अगर कोई लश्कर तशकील देना होता तो उसे तशकील देते और कोई और खास हुक्म होता तो इरशाद फ़रमाते। फिर आप ﷺ वापस तशरीफ़ ले जाते। सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ का बयान है कि लोग इस (सुन्नत) पर क़ायम थे हत्ता कि एक बार (हज़रत मुआविया ﷺ का मुक़र्रिर करदा गवर्नर) अमीर ए मदीना मरवान बिन हक्म के हमराह ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा (की नमाज़ के लिए) निकला और जब हम ईदगाह में पहुंचे तो नागहाँ देखा कि कसीर बिन सलत ने वहां एक मिम्बर तैयार किया हुआ था, और मरवान बिन हक्म ने नमाज़ से पहले ही उस मिम्बर पर (बागर्ज़ ख़ुतबा) चढ़ना चाहा तो मैने उस के लिबास को पकड़ कर खींचा (यानी सुन्नत कि मुखालिफत से रोकना चाहा) मगर वह दामन छुड़ा कर चढ़ गया और नमाज़ से पहले (ही) ख़ुतबा दे डाला। मैंने कहा: "अल्लाह तआला की क़सम! तुम ने (सुन्नत नबवी ﷺ को) बदल डाला।" उस (मरवान बिन हक्म) ने कहा: "ऐ अबुसईद! जिस (सुन्नत) को तुम जानते हो वह रुखसत हो चुकी।" मैंने जवाबन कहा: "अल्लाह तआला की क़सम! मैं जिस (सुन्नत) को जानता हूँ वह इस (बिदअत) से बेहतर है जिसे मैं नहीं जानता।" उस ने कहा कि असल बात ये है कि लोग नमाज़ के बाद हमारे (ख़ुतबे) के लिए बैठते नही थे इसलिए इस (ख़ुतबे) को नमाज़ से पहले मुक़र्रर कर लिया है।"[सहीह मुस्लिम:179 और 177, सहीह बुख़ारी:956, सहीह मुस्लिम: 2053] [صحیح مسلم : 179 اور 177 ، صحیح بخاری : 956 ، صحیح مسلم : 2053]

53 सहीह बुख़ारी की हदीस में है: सय्यिदना यूसुफ़ ताबई ﷺ बयान करते हैं कि मरवान बिन हक्म को हज़रत मुआविया बिन अबुसुफियान ﷺ ने हिजाज़ के लिए अपना गवर्नर मुक़र्रर किया तो उसने (मस्जिदे नबवी में) ख़ुत्बा देने के दौरान (हज़रत मुआविया ﷺ की ज़िंदगी में ही) यज़ीद बिन मुआविया ﷺ का ज़िक्र करना शुरू किया ताकि लोगों से उसके बाप के बाद (ख़लीफ़ा बनने के लिए पेशगी ही) बैअत ले सके। (उसकी तक़रीर सुनकर) सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अबुबकर ﷺ ने उस (मरवान) से कुछ कह दिया (सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ के उन खरे खरे जवाबी अल्फ़ाज़ का ज़िक्र इसी हदीस के अगले तरीक़ में मौजूद है) मरवान ने (ग़ुस्से में) हुक्म दिया कि उन्हें गिरफ़्तार कर लिया जाए। चुनांचे सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ (जान बचाने की ख़ातिर अपनी बहन) उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ के घर (जो मस्जिदे नबवी ﷺ के साथ जुड़ा हुआ था) में दाख़िल हो गए। जब वो (हकूमती कारिंदे) उन्हें ना पकड़ सके तो मरवान बिन हक्म ने (ग़ुस्से में आकर गुस्ताख़ी करते हुए) कहा कि बेशक ये वही शख़्स है कि जिसके मुताल्लिक अल्लाह तआला ने फ़रमाया था: "और वो शख़्स की जिसने कहा अपने वालिदैन से कि अफ़्सोस है तुम्हारे हाल पर, क्या तुम मुझे इस बात की धमकी देते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊंगा हालांकि मुझसे पहले भी कई क़ौमें गुज़र चुकी हैं....... ये धमकियां तो सिर्फ़ अगले लोगों की कहानियां हैं।" [अल अहक़ाफ़: 17] (मरवान की तरफ़ से अबुबकर ﷺ की औलाद पर लगाए गए इस गुस्ताख़ाना और झूठे इल्ज़ाम पर) उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आयशा ﷺ ने पर्दे में से ही जवाब देते हुए इरशाद फ़रमाँया: "हम (अबुबकर ﷺ की औलाद) से मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने कुछ भी नाज़िल नहीं फ़रमाया सिवाए उसके जो (सूरह नूर में) मेरी बराअत से मुताल्लिक़ नाज़िल हुआ था।" सुनन नसाई अल कुबरा और अलमुसतदरकलिलहाकिम की अहादीस में है: सय्यिदना मुहम्मद बिन ज़ियाद ताबई ﷺ बयान करते हैं कि जब (मरवान के ज़रिये) हज़रत मुआविया ﷺ ने अपने बेटे (यज़ीद बिन मुआविया) के लिए बैअत ली तो मरवान बिन हक्म ने कहा: "सय्यिदना अबुबकर ﷺ और सय्यिदना उमर ﷺ की सुन्नत है (कि उन्होंने अपने बाद ख़लीफ़ा को नामज़द किया था)।" सय्यिदना अब्दुर्रहमान ﷺ ने जवाबन फ़रमाया: "ये तो हरकल और कैसर (जैसे बादशाहों) की सुन्नत है (के बाप के बाद उस का बेटा हुक्मरान बने)।" तो मरवान ने कहा: "बेशक ये वो शख़्स है कि जिसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने ये आयत उतारी थी: [अल अहक़ाफ़: 17] जब ये बात सय्यिदा आयशा ﷺ तक पहुंची तो उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की क़सम! उस (मरवान) ने झूठ कहा, अल्लाह तआला ने वो आयत हमारे मुताल्लिक़ नाज़िल नहीं फरमाई, और अगर मैं चाहूँ तो उसका नाम भी बता सकती हूँ जिसके मुताल्लिक़ वो नाज़िल हुई (हक़ीक़त तो ये है कि) बेशक मैंने ख़ुद सुना कि रसूलल्लाह ﷺ ने मरवान और उसके बाप पर लानत की थी जब कि मरवान उस वक़्त अपने बाप की पुश्त में था, पस मरवान अल्लाह तआला की तरफ़ से उसी लानत का एक टुकड़ा है। [सहीह बुख़ारी: 4827, सुनन नसाई अलकुबरा: 11491, अलमुसतदरकलिलहाकिम: 8483]

[صحیح بخاری : 4827 ، سنن نسائی الکبری : 11491 ، المستدرک للحاکم : 8483 ، قال الامام حاکم : اسناده صحیح علی شرط البخاری و مسلم]

54 **अल अवाइल इब्ने अबुआसिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुज़र गफ्फारी ؓ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "पहला शख़्स जो मेरी सुन्नत को बदल देगा उसका ताल्लुक़ बनूउमय्या से होगा।" इसी के तहत अपने मज्मूए में ख़ुद **मुहद्दिसे आज़म सऊदी अरब शैख़ मुहम्मद नासिरुद्दिन अल्बानी** ؒ **(अलमुतवफ्फ़ा-1420 हिजरी) लिखते हैं:** "इस हदीस में सुन्नत को तबदील कर देने से मुराद ख़लीफ़ा से इंत्ख़ाब के तरीक़े को बदलकर उसे विरासत बिना देन है।" **मुस्नद अबुयाला और मजमाउज़्ज़वाइद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन सबा ताबई ؒ बयान करते हैं कि सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ ने हमें ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया: "क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने वाले को फाड़ा (फिर उससे नबातात निकाले) और मख़्लूख़ात को पैदा फ़रमाया, एक वक़्त आएगा कि मेरी दाढ़ी को मेरी सर के ख़ून से रंग दिया जाएगा।" एक शख़्स खड़ा हुआ और अर्ज़ की: अल्लाह तआला की क़सम! जो कोई भी ऐसी हरकत करेगा हम उसको उसके अहलो अयाल समेत तबाह बर्बाद कर देंगे। सय्यिदना अली ؓ ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाता हूँ कि ऐसी हरकत मत करना, मेरे क़त्ल के बदले में सिर्फ़ मेरे क़ातिल को ही क़त्ल करना।" उस शख़्स ने अर्ज़ की: ऐ अमीरुल मोमिनीन ؓ ! आप ؓ के बाद हमारे लिए अपना कोई ख़लीफ़ा मुकरर फ़रमा दें। सय्यिदना अली ؓ ने फ़रमाया: "नहीं बल्कि मैं तुम्हें उसी तरह छोड़ कर जाऊंगा जैसा कि रसूलुल्लाहﷺ ने हमें (बग़ैर ख़लीफ़ा के) छोड़ा था।" लोगों ने अर्ज़ की: अगर आप ؓ हमे बग़ैर ख़लीफ़ा के छोड़े जा रहे हैं तो जब अल्लाह तआला से मुलाक़ात होगी तो क्या जवाब देंगे ? सय्यिदना अली ؓ ने फ़रमाया: "मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ अल्लाह तआला मैं उनमें रहा जब तक तूने मुझे उन में रखा और जब तूने मुझे मौत दे दी तो मैंने तुझे उन पर निगरान छोड़ दिया, अब तेरी मर्ज़ी है, चाहे तो उनकी इस्लाह फ़रमा दे और चाहे तो उनको तबाह बरबाद फ़रमा दे।"

[अलअवाइल इब्ने अबुआसिम:61 , सिलसिलातुस्सहिहा:1749, मुस्नद अबुयाला: 590, मजमाउज़्ज़वाइद: 14782,]

[الاوائل لابن ابی عاصم : 61 ، السلسلة الصحیحة : 1749 ، مسند ابی یعلیٰ : 590 ، مجمع الزوائد : 14782 ، قال الامام الهیثمی و الشیخ حسین سلیم : اسناده صحیح]

55 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली ؓ बयान करते हैं कि मैं यमन में था और वहां मेरी मुलाक़ात दो यमनी बाशिंदों, ज़ूकलाअ और ज़ूअम्र से हुई, मैं उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ कि अहादीस सुनाने लग गया, (ये सुन कर) ज़ूउम्र कहने लगे "अगर आप कि बातें अपने नबी ﷺ के बारे में दुरुस्त हैं तो फिर (सुन लो) उन (नबी ﷺ) कि वफात को तो तीन दिन गुज़र चुके हैं।" फिर वह मेरे साथ ही सफ़र करते रहे हत्ता कि हम रस्ते में ही थे कि हमारे सामने मदीना मुनव्वरा से आने वाला एक क़ाफ़िला नमूदार हुआ, और हमने उन से (नबी ﷺ के मुताल्लिक़) पुछा तो उन्होंने बताया रसूलुल्लाह ﷺ वफात पा गए और सय्यिदना अबुबकर ؓ को खलीफा बना लिया गया है और सब लोग अमन व अमान से हैं। उन दोनों ने कहा: "अपने खलीफा को बताना कि हम आ रहे थे (मगर अब वापिस हो रहे हैं) और शायद दोबारा वापस आएँगे इन शा अल्लाह। फिर वह यमन को लौट गए। चुनांचे मैंने (मदीना पहुँच कर) सय्यिदना अबुबकर ؓ से उन का सारा वाकिया बयान किया तो उन्होंने फ़रमाया: "तुम उन्हें (मेरे पास) ले कर क्यों नहीं आए?" फिर कुछ वक्त बाद (मुलाक़ात होने पर) ज़ूअम्र ने मुझसे कहा: "ऐ जरीर! मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज्ज़त है और मैं तुम्हें एक (खास) बात बताता हूँ कि तुम अरब उस वक़्त तक खैर व इस्लाह में रहोगे जब तक तुम अपने हाकिम के इन्तेक़ाल पर दूसरा हाकिम बना लोगे मगर फिर जब (हुसूले इक्तिदार के लिए) तलवार (इस्तेमाल) होगी तो (तुम्हारे हाकिम) बादशाह बन जाएँगे जो बादशाह की तहर ग़ज़बनाक हुआ करेंगे और बादशाहों की तरह खुश होंगे।" (यानी उनके मिजाज़ शाहाना और अतवार जाहराना होंगे) **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान करते हैं कि एक दिन मैं मिना में सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ؓ के घर में था और वो अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ؓ के आख़री हज में उनके साथ थे। सय्यिदना अब्दुर्रहमान ؓ लौट आए और मुझसे कहने लगे: "काश तुम उस शख़्स को देखते जो आज अमीरुल मोमिनीन ؓ के पास आया और कहने लगा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ؓ ! क्या आप उस फ़लां शख़्स से पूछगछ नहीं करेंगे कि जो ये कहता है कि अगर सय्यिदना उमर ؓ फ़ौत हो गए तो मैं फ़लां शख़्स की बैअत कर लूंगा क्योंकि सय्यिदना अबुबकर ؓ की बैअत भी तो अचानक (बग़ैर किसी मंसूबे के) हुई थी और कामयाब रही थी? " उसकी ये ख़बर सुनकर सय्यिदना उमर गुस्से में आ गए और फ़रमाया: "इन्शा अल्लाह तआला आज शाम में ज़रूर लोगों को ख़ुत्बा दूँगा और उन्हें इन (साज़िशी) लोगों से ख़बरदार करूंगा जो लोगों से मामलात (यानी इक़्तदार) छीन लेना चाहते हैं।" इस पर सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ؓ ने अर्ज़ किया: "ऐ अमीरुल मोमिनीन ؓ ! अभी ऐसा ना कीजिएगा क्योंकि हज के मौक़े पर हर क़िस्म के आम्मी और बाज़ारी लोग भी जमा हुए होते हैं और यही लोग ख़ुत्बे के वक़्त आप ؓ के क़रीब व जवार में इकठ्ठे होंगे और मुझे ख़ौफ़ है कि आप ؓ कोई बात ऐसी कह दें कि जो ग़लत मतलब व मफ़्हूम के साथ हर तरफ़ फैल जाए और लोग उसे ग़लत स्याक़ व सबाक़ के साथ ना समझ पाएं, लिहाज़ा आप ؓ थोड़ा सा इंतज़ार कर लें, हत्ता कि आप ؓ मदीना मुनव्वरह पहुंच जाएं जो कि हिजरत और सुन्नत का गढ़ है, वहां आप ؓ समझदार लोगों और मुअज़्ज़ज़ीन के साथ मख़्सूस मज्लिस में बात करें ताकि आप ؓ की गुफ़्तगू को सहीह और मौज़ूंव मफ़्हूम में

लिया जा सके। सय्यिदना उमर ﷠ ने फ़रमाया: "ठीक है लेकिन अल्लाह तआला की क़सम! इन्शा अल्लाह तआला मैं मदीना मुनव्वरह पहुंचते ही पहला काम यही करूंगा।" सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷠ बयान करते हैं कि हम लोग ज़ुलहिज्जा के आख़िर में मदीना मुनव्वरह वापस आए, और जुमा के दिन मैं सूरज ढलते ही जल्दी (मस्जिद में) चला गया। मैंने देखा कि सय्यिदना सईद बिन ज़ैद ﷠ मिंबर के पास पहले से तशरीफ़ फ़रमा हैं, मैं भी उनके क़री बही बैठ गया और मेरा घुटना उनके घुटने को छू रहा था। अभी ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷠ तशरीफ़ ले आए। उन्हें आता देखकर मैंने सय्यिदना सईद ﷠ से कहा कि आज वो ऐसा ख़ुत्बा देंगे कि ख़लीफ़ा बनाए जाने के बाद से आज तक वैसा ख़ुत्बा नहीं दिया होगा। सय्यिदना सईद ﷠ ने मेरी बात से इत्तफ़ाक़ ना किया और कहने लगे कि नहीं, कोई बात नहीं कहेंगे। सय्यिदना उमर ﷠ आकर मिम्बर पर बैठ गए, और जब मौअज़्ज़िन (अज़ान से) फ़ारिग़ हो गया तो आप ﷠ ने अल्लाह तआला की हम्दोसना के बाद इरशद फ़रमाया: "आज मैं ऐसी बात कहने वाला हूँ जो अल्लाह तआला की तरफ़ से ही सुझाई गई है, शायद ये मेरी ज़िंदगी की आख़री गुफ़्तगू हो, जो शख़्स भी इसे सुन ले और समझ ले तो उस का फ़र्ज़ है कि जहां तक वो उसे पहुंचा सके, पहुंचा दे, और जो इसे ना समझ सके, तो मैं उसे इजाज़त नहीं देता कि इसे आगे बयान करे और (कम फ़हमी की वजह से) ग़लत बयानी का मुर्तकिब हो .... मुझे पता चला है कि तुम में से किसी ने ये कहा है कि अगर सय्यिदना उमर ﷠ फ़ौत हो गए तो हम फ़लां शख़्स की बैअत कर लेंगे। ऐ लोगों! देखना तुम में से किसी शख़्स इस बात से ये ग़लतफ़हमी ना हो कि सय्यिदना अबुबकर ﷠ की बैअत भी तो अचानक हुई थी और इसके बावजूद मुनअक़िद हो गई थी और कामयाब ठहरी थी। ख़बरदार ! वो बैअत वाक़ई हुई तो इसी तरह अचानक थी लेकिन अल्लाह तआला ने (महज़ अपने फ़ज़्लोकरम से ख़ास) उस मौक़े पर शरारत और फ़ित्ना से महफ़ूज़ रखा (और सब मुसलमानों ने उस बैअत को तस्लीम कर लिया था)। लेकिन अब तुम में (क़यामत तक) सय्यिदना अबुबकर ﷠ जैसा कौन हो सकता है कि सबके सब उस एक पर मुत्तफ़िक़ भी हो जाएं (यानी अब ऐसा दोबारा होना मुम्किन नहीं लिहाज़ा अब ख़लीफ़ा के इंतख़ाब के मामले में मशावरत के बग़ैर कोई चारह नहीं) अब जिस ने भी मुसल्मानों के मश्वरे के बग़ैर किसी भी शख़्स की (ज़बर्दस्ती ख़िलाफ़त के लिए) बैअत मुनअक़िद की गई (तो याद रखना) वो बैअत करने वाला और जिसकी बैअत की गई होगी, (फ़साद के) नतीजे में दोनों ही क़त्ल कर दिए जाएंगे।" **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷠ का बयान है...........अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब ﷠ ने इरशाद फ़रमाया: "अब जिस ने भी मुसलमानों के मशवरे क बग़ैर किसी भी शख़्स कि (ज़बरदस्ती ख़िलाफ़त के लिए) बैअत मुनाक़द की (तो याद रखना) न तो बैअत करने वाले कि बैअत होगी और न जिस (ख़लीफ़ा) की बैअत की गई उसकी बैअत मुनाक़द होगी।" **[सहीह बुख़ारी: 4359 और 6830 मुसनद अहमद: 391]**

[صحیح بخاری : 4359 اور 6830 ، مسند احمد : 391 (جلد - 1 ، صفحہ - 55) ، قال الشیخ شعیب الارنووط : اسنادہ صحیح علی شرط مسلم]

56 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷠ बयान फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से दो क़िस्म के (उलूम के) प्याले महफ़ूज़ किये हैं, एक (इल्म ए शरीअत) को मैंने लोगों में नशर कर दिया है, और दूसरे (मुस्तक़्बिल में होने वाले फ़ित्नों से मुताल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ की बताई हुई ख़बरों) को अगर बयान करूं तो (इन मौजूदह हुक्मरानों के करतूतों की अस्लियत खुलने के बाइस उनकी तरफ़ से) मेरी शह रग ही काट दी जाएगी।" **सहीह बुख़ारी की एक और हदीस में है:** सय्यिदना सईद बिन उमर ताबई ﵀ का बयान है कि मैं मस्जिदे नबवी शरीफ़ में सय्यिदना अबु हुरैरा के हमराह बैठा हुआ था, और हमारे साथ मरवान (बिन हक्म) भी था।सय्यिदना अबुहुरैरा ﷠ ने फ़रमाया कि मैंने सादिक़ व मस्दूक़ (रसूलुल्लाह ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना था: "मेरी उम्मत की हलाकत ख़ानदाने क़ुरैश (में से बनू उमय्या) के नौजवानों लड़कों के हाथों से होगी।" (و العیاذ باللہ تعالیٰ) ये सुनकर मरवान (ख़ुद ही) कहने लगा: "उन छोकरों पर अल्लाह तआला की लानत हो!" सय्यिदना अबुहुरैरा ﷠ ने फ़रमाया: "अगर मैं चाहूँ तो फ़लां और बनूफलां कह (कर उन छोकरों के नाम भी बता) सकता हूँ।" (रावी ए हदीस कहते हैं कि) जब वो लोग शाम के हुक्मरान बन गए तो मैं अपने दादा (सईद ताबई ﵀) के साथ बनी मरवान के पास जाया करता था, तो मेरे दादा जान जब उन कम उमर लड़कों को देखते तो फ़रमाते: "ऐन मुम्किन है कि ये वही लड़के हों।" हमने उन से जवाबन अर्ज़ किया: "आप (सय्यिदना सईद बिन उमर ताबई ﵀) ही बेहतर जानते हैं।" **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷠ बयान फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद सुना था: "क़ुरैश का ये क़बीला (मुराद बनू उमय्या, और इसके सबूत में इसी मुक़ाबले की हदीस नम्बर 2 पहले ही गुज़र चुकी है) मेरी उम्मत को बर्बाद करेगा।" हमने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ! फिर आप हमें (ऐसी हालत में) क्या हुक्म देते हैं?" आपने जवाबन इरशद फ़रमाया: "काश कि लोग उनसे अलग ही रहें (यानी उम्मत की बर्बादी का सबब बनने वाले हुक्मरानों के साथ किसी भी बुरे अमल में हरगिज़ शरीक ना हों)।" **[सहीह बुख़ारी: 120 और 7058, सहीह मुस्लिम : 7325]** [صحیح بخاری : 120 اور 7058 ، صحیح مسلم : 7325]

57 **मुसनदे अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﵁ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद सुना था: "70 की दहाई के आग़ाज़ (61 हिजरी) और छोकरों की हुक्मरानी से अल्लाह तआला की पनाह मांगा करो।" **दलाइलुन्नबुवालिलबैहकी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﵁ मदीना मुनव्वरह के बाज़ार में चलते फिरते ये दुआ मांगा करते थे: "ऐ अल्लाह तआला! मुझे 60 (के सन) तक बाक़ी ना रखना (ऐ लोगों) तुम्हारी बरबादी हो! हज़रत मुआविया ﵁ की कन्पटियों को मज़बूती से पकड़ (कर उन्हें रोक) लो। ऐ अल्लाह तआला! मुझे छोकरों के इक़्तिदार के दौर तक बाक़ी ना रखना।" **[मुस्नद अहमद: 8302, मिश्कातुलमसाबीह: 3716, दलाइलुन्नबुवालिलबैहकी: 2801,]**

[مسند احمد : 8302 (جلد - 2 ، صفحہ - 326) ، مشكوة المصابيح : 3716 ، دلائل النبوة للبيهقي : 2801 ، قال الشيخ زبير عليزئى فى مقالات جز - 6 : اسناده صحيح]

58 **मुसनद अबुयाला की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﵁ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़्वाब में देखा कि गोया हकम के बेटे (मरवान बिन हकम और उसकी औलाद) आप ﷺ के मिम्बर शरीफ़ पर उछल कर चढ़ते हैं और उतरते हैं। (ये ख़्वाब देखने के बाद) आप सख़्त तैश (ग़ुस्से की हालत) में आ गए और इरशाद फ़रमाया: "मैं क्या देख रहा हूँ कि हकम के बेटे (मरवान बिन हकम और उसकी औलाद) मेरे मिंबर पर बंदरों की तरह उछल कूद कर रहे हैं !" सय्यिदना अबुहुरैरा ﵁ का बयान है: "इस (ग़ैबी ख़बर मिलने) के बाद वफ़ात तक आपको कभी मुतमईन और मुस्कराता हुआ नहीं देखा गया।" **[मुस्नद अबुयाला: 6461]**

[مسند ابى يعلىٰ : 6461 ، قال الشيخ حسين سليم اسد و الشيخ ارشاد الحق الاثرى و الشيخ زبير عليزئى فى مقالات جز - 6 : اسناده صحيح]

59 **सहीह मुस्लिम की हदीस में है:** सय्यिदना आइद बिन अम्र ﵁ , उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद (जो यज़ीद बिन मुआविया की तरफ़ से कूफ़ा के लिए गवर्नर मुक़र्रर था) के पास आए और (बतौर नसीहत) फ़रमाया: "ऐ बेटा! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद फ़रमाते हुए सुना है: "बदतरीन हुक्मरान वो हैं, जो ज़ालिम हों, इसलिए तुम उनमें शामिल होने से बच जाओ।" ये सुनकर वो (उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद गुस्ताख़ी करते हुए) बोला: "बैठ जाओ, तुम तो सहाबा ﵃ में से महज़ भूसा (एक गिरे पड़े ग़ैर अहम शख़्स) हो।" (نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना आइद बिन अम्र ﵁ ने जवाबन फ़रमाया: "क्या सहाबा ﵃ में से भी कोई शख़्स भूसा था ? भूसा तो उनके बाद में आने वाले (तुम जैसे) लोगों में है।" **सुनन अबुदाऊद की हदीस में है:** सय्यिदना अबुतालूत ताबई ﵀ बयान करते हैं कि मैंने सय्यिदना अबुबर्ज़ह ﵁ को (गवर्नर यज़ीद बिन मुआविया) उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास आते देखा जबकि वो दस्तख़्वान पर था। उसने सय्यिदना अबुबर्ज़ह ﵁ को आते हुए देख कर कहा:"ये है तुम्हारा ठिगना मुहम्मदी ﷺ !" (نعوذ بالله من ذلك) सय्यिदना अबुज़र्दह ﵁ उसकी (तंज़या) बात को समझ गए और जवाबन फ़रमाया: "मुझे गुमान नहीं था कि मैं ऐसे लोगों (के दौरे हकूमत) तक ज़िंदा रहूँगा जो मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की सोहबत पर आर दिलाएंगे।" उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद बोला: "मुहम्मद ﷺ की सहाबियत तुम्हारे लिए बाइसे ज़ीनत है, आर का सबब नहीं।" फिर कहने लगे: मैंने तुम्हें इसलिए बुलवाया है कि तुमसे हौज़ (कौसर) के मुताल्लिक़ पूछूं, क्या तुमने रसूलुल्लाह ﷺ से उसके बारे में कुछ सुना था ?" सय्यिदना अबुज़र्दह ﵁ ने फ़रमाया: "हां! ना एक बार, ना दो बार, ना तीन बार, ना चार बार और ना पाँच बार (यानी मुताअदिद बार सुना था) और जो शख़्स उस (हौज़ ए कौसर) के वजूद का इंकार करे तो अल्लाह तआला उसको उस से पीना नसीब ना फ़रमाए।" सय्यिदना अबुतालूत ताबई ﵀ का बयान है: "फिर सय्यिदना अबुबर्ज़ह ﵁ ग़ुस्से की हालत में वहां से तशरीफ़ ले गए। " **[सहीह मुस्लिम: 4733, सुनन अबुदाऊद: 4749]**

[صحيح مسلم : 4733 ، سنن ابى داؤد 4749 ، قال الشيخ الالبانى و الشيخ زبير عليزئى : اسناده صحيح]

60 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना बराअ बिन आज़ब ﵁ बयान फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़ुद सुना था: "अन्सार से सिर्फ़ मोमिन ही मुहब्बत करेगा, और अन्सार से सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही बुग़्ज़ रखेगा। चुनांचे जिस ने अन्सार से मुहब्बत की तो अल्लाह तआला उस से मुहब्बत फ़रमायेगा, और जिसने अन्सार से दुश्मनी रखी तो अल्लाह तआला उस से दुश्मनी रखेगा।" **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अनस ﵁ बयान फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ सिर मुबारक पर पट्टी बांधे (मर्ज़े वफ़ात में) बाहर तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर जलवा अफरोज़ हुए और उसके बाद आप ﷺ कभी मिम्बर पर तशरीफ़ ला ही न सके। आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद इरशाद फ़रमाया: " मैं अन्सार के बारे में तुम्हें नसीहत करता हूँ कि वह मेरे जिस्म व जान हैं। वह अपनी जिम्मेदारियां निभा चुके, उनके हुक़ूक़ बाक़ी हैं। तुम (मेरे बाद) उनके नेकोकारों की तरफ़ से उज़्र क़बूल करना और उनके ख़ताकारों से दरगुज़र करना।" **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﵁ बयान फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अगर हिजरत न होती तो मैं भी अन्सार में से एक आदमी होता। अगर सारे लोग एक वादी में चलें और अन्सार दूसरी घाटी में तो मैं अन्सार की घाटी में चलूँगा। अन्सार अस्तर (अंदरूनी लिबास) हैं जबकि बाक़ी लोग ऊपर का कपड़ा हैं। (ऐ अन्सार !) बेशक तुम लोग मेरे बाद तरजीह देखोगे तो तुम सब्र करना यहाँ तक कि मुझ से हौज़ ए कौसर पर मुलाक़ात करना।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵄ का बयान है कि सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ जो रसूलुल्लाह ﷺ के मेज़बान बने थे, जब रोम के युद्ध में शरीक हुए तो (अमीरे लश्कर) हज़रत मुआविया ﵁ ने उसने कहा: "क्या तुम उस्मान ﵁ के कातिलो में शामिल नहीं ?" और उनके साथ

बदसुलूकी का ममला किया, फ़िर युद्ध से वापसी पर भी ऐसा ही सुलूक किया और उनकी तरफ़ कोई तवज्जो न दी तो सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ ने हज़रत मुआविया ﵁ से फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने हम (अंसारियों) से पहले ही फरमा दिया था कि तुम लोग किन किन आज़माइशों में मुब्तिला होगे ! हज़रत मुआविया ﵁ ने कहा तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हें क्या हुक्म दिया था ? सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ ने कहा कि आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम सब्र करना यहाँ तक कि मुझ से कौसर की हौज़ पर मुलाक़ात करना।" हज़रत मुआविया ﵁ ने कहा तो फिर तुम सब्र ही करो। इस (गुस्ताखी) पर सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ गुस्से में आ गए और क़सम खाई कि पूरी ज़िन्दगी हज़रत मुआविया ﵁ से कलाम नहीं करूँगा। जब सय्यिदना अली इब्ने अबुतालिब ﵁ ने सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ को बसरा का गवर्नर बनाकर भेजा तो वहां सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ उनको मिलने के लिए आए। सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ ने फ़रमाया: मैं आप ﵁ के लिए आज वैसे ही घर ख़ाली कर दूंगा जैसे आप ﵁ ने रसूलुल्लाह ﷺ के मेहमान नवाज़ी के लिए किया था। फिर उन्होंने अपने घर वालों को वहां से निकल जाने का हुक्म दिया और सारा घर साज़ो सामान समेत सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ को तोहफ़े में दे दिया, फिर पूछा क्या कोई और ज़रुरत है ? सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﵁ ने फ़रमाया: मुझ पर चार हज़ार दरहम का क़र्ज़ है और मुझे अपनी ज़मीन पर काम करने के लिए आठ गुलामों की ज़रूरत है। इस पर सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ ने सय्यिदना अबू अय्यूब अंसारी ﵁ को बीस हज़ार दरहम और चालीस गुलाम तोहफ़े में दे दिए। [सहीह बुख़ारी: 3783, 3799 और 4330, अलमुसतदरकलिलहाकिम: 5935 और 5941]

[صحیح بخاری : 3783 ، 3799 اور 4330 ، المستدرک للحاکم : 5935 اور 5941 ، قال الامام حاکم و الامام الذھبی : اسنادہ صحیح]

F सय्यिदना हुसैन ﵁ के फ़ज़ाइल का बयान और यज़ीद बिन मुआविया की मलूकियत में उसके गवर्नर उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के हाथों मज़लूमाना शहादत !

61 **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना हुज़ैफा बिन यमान ﵁ बयान फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा ने मुझ से पूछा कि तुमने रसूलुल्लाह ﷺ से (आख़िरी बार) कब मुलाक़ात की है? मैंने कहा कि मुझे आप ﷺ से मिले हुए इतना (लम्बा) अर्सा बीत गया है। इस पर मेरी वालिदा ने मुझे सख़्त सुस्त कहा। मैंने (मअज़रत करते हुए) कहा कि बस अब जाने दीजिए, मैं आप ﷺ के साथ मग़रिब की नमाज़ अदा करता हूँ और आप ﷺ से दरख़्वास्त करूंगा कि आप ﷺ मेरे और आप (वालिदा) के लिए मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाएं। चुनांचे मैं आप ﷺ की ख़िदमत ए अक़दस में हाज़िर हुआ और मग़रिब की नमाज़ अदा की तो आप ﷺ (नफ़्ली) नमाज़ में मशगूल रहे यहां तक कि मैंने इशा कि नमाज़ भी आपके साथ अदा की। फिर आप ﷺ वापस (घर को) चले तो मैं भी (अंधेरे में) आपके पीछे पीछे चल दिया। आप ﷺ ने मेरी (क़दमों की) आवाज़ सुनी तो दरयाफ़्त फ़रमाया: "कौन ? हुज़ैफ़ा हो ?" मैंने अर्ज़ किया: "जी हां!" आप ﷺ ने पूछा: "कोई काम है ? फिर आप ﷺ ने (ख़ुद ही) दुआ दी: "अल्लाह तआला तेरी और तेरी मां की बख़्शिश फ़रमाए।" (राज़दार-ए-रसूल सय्यिदना हुज़ैफ़ा बिन यमान ﵁ का मज़ीद बयान है कि) फिर आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "आज रात एक ऐसा फ़रिश्ता ज़मीन पर उतरा है जो पहले कभी नहीं आया और उसने अल्लाह तआला के हुक्म से मुझे सलाम कहा और ख़ुशख़बरी दी कि (मेरी बेटी सय्यिदा) फ़ातिमा ﵂ अहले जन्नत की औरतों की सरदार होंगी और (मेरे नवासे) हसन और हुसैन ﵄ जन्नती जवानों के सरदार होंगे।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है :** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﵁ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "हसन और हुसैन ﵄ जन्नती जवानों के सरदार होंगे और उनके वालिद (सय्यिदना अली ﵁) उन दोनों से बेहतर (जन्नती मक़ाम पर) होंगे।" [जामेअ तिरमिज़ी : 3781 अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4779, सिलसिलातुस्सहिहा: 796]

[جامع ترمذی : 3781 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]
[المستدرک للحاکم : 4779 ، السلسلۃ الصحیحۃ : 796 ، قال الامام حاکم و الامام الذھبی و الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

62 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदना हसन ﵁ और सय्यिदना हुसैन ﵁ को (अल्लाह तआला की) पनाह में दिया करते और फ़रमाते: "तुम्हारे बाप सय्यिदना इबराहीम ﵇ (अपने दो बेटों) सय्यिदना इस्माईल ﵇ और सय्यिदना इस्हाक ﵇ को भी इन्ही अलफ़ाज़ के साथ पनाह में दिया करते थे और मैं तुम दोनों को अल्लाह तआला के कलिमात ए तआमह की पनाह में देता हूँ हर शैतान से (बचाव), और ज़हरीले जानवर से, और हर नुकसान पहुँचाने वाली नज़रे बद से (बचाव के लिए)।" **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना उसामा बिन ज़ैद ﵁ बयान करते हैं कि मैं किसी काम से रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत ए अक़दस में रात के वक़्त हाज़िर हुआ, तो आप ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए इस हाल में कि आप ﷺ ने अपनी चादर में कोई चीज़ लपेट कर उठा रखी थी, मालूम नहीं क्या चीज़ थी. जब मैंने अपने काम की बात आप ﷺ से अर्ज़ कर ली तो पूछा: "आप ﷺ ने चादर में क्या उठा रखा है?" ये सुनकर आप ﷺ ने चादर खोल कर दिखाई तो (उसमें) सय्यिदना हसन ﵇ और

सय्यिदना हुसैन عليه السلام थे, (नोट: सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन के नामों के साथ عليه السلام ख़ुद इमाम तिरमिज़ी رحمه الله ने लिखा है) जिन्हें आपने अपनी गोद मुबारक में उठाया हुआ था। फिर आप ﷺ ने यूं दुआ फ़रमाई: "ये दोनों मेरी औलाद हैं और मेरी बेटी के बेटे हैं, ऐ अल्लाह तआला! मैं इन दोनों से मुहब्बत रखता हूँ, इसलिए तू भी इन से मुहब्बत फ़रमा और उस शख़्स से भी मुहब्बत फ़रमा जो इन दोनों से मुहब्बत रखे।" **जामेअ तिरमिज़ी की एक हदीस में है:** सय्यिदना याला बिन मरह رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "हुसैन رضي الله عنه मुझ से है और मैं हुसैन رضي الله عنه से हूँ, अल्लाह तआला उस शख़्स से मुहब्बत फ़रमाए जो हुसैन رضي الله عنه से मुहब्बत करता है, हुसैन رضي الله عنه मेरे नवासों में से एक (अज़ीमुश्शान) नवासा है।" [सहीह बुख़ारी: 3371, जामेअ तिरमिज़ी: 3769 और 3775,]

[صحیح بخاری : 3371 ، جامع ترمذی : 3769 اور 3775 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

63 जामेअ तिरमिज़ी, सुनन अबुदाऊद और सुनन नसाई की हदीस में है: सय्यिदना बरीरा رضي الله عنه का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें ख़ुतबा इरशाद फरमा रहे थे कि अचानक सय्यिदना हसन عليه السلام और सय्यिदना हुसैन عليه السلام आ गए। (नोट: सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन के नामों के साथ عليه السلام खुद इमाम तिरमिज़ी رحمه الله और इमाम नसाई رحمه الله ने लिखा है) उन्होंने सुर्ख क़मीसें पहन रखी थीं, वो चलते चलते गिर पड़ते थे। रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर से नीचे उतरे, और उन दोनों को उठाया और अपने सामने बिठा लिया और फिर फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया: "तुम्हारे अमवाल और औलाद में तुम्हारे लिए आज़माइश है।" [अत्तागाबुन: 15] मैने जब इन बच्चों को चलते और गिरते हुए देखा तो मैं सब्र न कर सका हत्ता कि मैंने अपना ख़ुतबा काट कर उन्हें उठा लिया।" **सुनन नसाई की हदीस में है:** सय्यिदना शद्दाद رضي الله عنه का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास नमाज़ ए इशा की इमामत के लिए बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त आप ﷺ ने सय्यिदना हसन رضي الله عنه या सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه को उठाया हुआ था। रसूलुल्लाह ﷺ इमामत के लिए आगे हो गये और नवासे को वही ज़मीन पर बैठा लिया । फिर तकबीर कह कर नमाज़ शुरू फरमाई । आप ने नमाज़ के दौरान सजदे में ताखीर फरमा दी तो मैंने नमाज़ में ही सिर उठा कर देखा कि आप ﷺ के नवासे पुश्त मुबारक पर चढ़े हुए हैं और उस वक़्त आप ﷺ सजदा की हालत में हैं। फिर जब आप ﷺ नमाज़ से फारिग़ हुए तो लोगों ने अर्ज़ किया कि आप ﷺ ने दौरान ए नमाज़ जब सजदा में ताखीर फरमाई तो हम लोगों ने गुमान किया कि शायद आप ﷺ के साथ कोई हादसा पेश आ गया है या फिर आप ﷺ पर (हालते सजदा में) वही नाज़िल हो रही है। आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐसी कोई बात नहीं थी। दरअसल मेरा बेटा मुझ पर सवार हुआ तो मुझे ये बुरा महसूस हुआ कि मैं सजदे से जल्दी सिर उठा लूँ और उस बच्चे की ख्वाहिश मुकम्मल न हो सके।" (नोट: **मुसनद अहमद की हदीस में** सय्यिदना अबुहुरैरा رضي الله عنه ने सय्यिदना हसन رضي الله عنه और सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه दोनों से मुताल्लिक बिलकुल ऐसा ही वाकिया बयान किया है।) [जामेअ तिरमिज़ी: 3774, सुनन अबुदाऊद: 1109, सुनन नसाई: 1414 और 1142, मुसनद अहमद: 10669]

[جامع ترمذی : 3774 ، سنن ابی داؤد : 1109 ، سنن نسائی : 1414 اور 1142 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]
[مسند احمد : 10669 (جلد - 2 ، صفحہ - 513) ، قال الشیخ شعیب الارنووط : اسنادہ صحیح]

64 मुसनद ए अहमद की हदीस में है: सय्यिदना अबु अब्दुल्लाह ताबई رحمه الله के बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन नजी رحمه الله अपने वालिद से बयान करते हैं जो सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضي الله عنه के लिए (सफ़र में) सामान ए तहारत का बंदोबस्त करते थे कि वो सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضي الله عنه के साथ सफ़र में थे, जब आप सिफ़्फ़ीन को जाते हुए (मक़ाम) नैनवा के बराबर पहुंचे तो आप ﷺ ने बुलंद आवाज़ से कहा: "ऐ अबु अब्दुल्लाह ! (ये सय्यिदना हुसैन बिन अली رضي الله عنه की कुनियत थी) फ़रात के किनारे सब्र करना, ऐ अबु अब्दुल्लाह! फ़रात के किनारे सब्र करना, मैंने पूछा: "क्या (ख़ास) बात हो गई (ऐ अमीरुल मोमिनीन رضي الله عنه)?" सय्यिदना अली बिन अबुतालिब رضي الله عنه ने फ़रमाया: "एक दिन मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुआ, तो (क्या देखता हूँ कि) आप ﷺ की मुबारक आंखों से आंसू रवां थे, मैंने (बेचैन होकर) अर्ज़ किया: "क्या आप ﷺ को किसी ने नाराज़ किया है? आप ﷺ की मुबारक आंखों से आंसू क्यों बह रहे हैं ?" रसुलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "नहीं! बल्कि अभी अभी सय्यिदना जिब्राईल عليه السلام मेरे पास से उठ कर गए हैं और उन्होंने मुझे (अल्लाह तआला की तरफ़ से) ये ख़बर दी है कि बेशक हुसैन رضي الله عنه को फ़रात के किनारे क़त्ल कर दिया जाएगा। फिर उन्होंने पूछा कि क्या में आप ﷺ को हुसैन رضي الله عنه के मक़तल की मिट्टी लाकर दिखाऊं ? मैंने कहा हां दिखाओ ! चुनांचे उन्होंने मिट्टी की एक मुठ्ठी भर कर मुझे दी, तो इस पर मैं अपने आंसू ना रोक सका।" **अलमुस्तदरकलिलहाकिम और सिलसिलातुलसहीहा की हदीस में है:** सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूललुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "सय्यदुशशोहदा (यानी शहीदों के सरदार) सय्यिदना हमज़ा बिन अब्दुलमुत्तलिब رضي الله عنه हैं और वह शख्स (भी सय्यदुशशोहदा है) जिसने किसी ज़ालिम हाकिम को (नेकी का) हुक्म दिया और (बुराई से) रोका तो उस (हाकिम) ने (इस हक़गोई के पादाश में) उसे क़त्ल कर दिया।" (नोट: ये सहीह हदीस मुबारक सय्यिदना हुसैन बिन अली رضي الله عنه के सय्यादुश शोहदा होने पर एक बहुत मज़बूत दलील है। (و الحمد لله) [मुस्नद अहमद:648, सिलसिलातुलसहीहा:822, अलमुसतदरकलिलहाकिम:4884, अलसिलासिलातुलसहीहा: 374]

[مسند احمد : 648 (جلد - 1 ، صفحہ - 85) ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

[السلسلۃ الصحیحۃ : 822 ، المستدرک للحاکم : 4884 ، السلسلۃ الصحیحۃ : 374 ، قال الامام حاکم الشیخ الالبانی : اسنادہ صحیح]

65 **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान करते हैं कि एक दिन मैंने दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ को (ख़्वाब में) देखा, (इस हाल में) कि आप ﷺ के बाल मुबारक बिखरे हुए, और आप ﷺ पर गर्द लगी हुई है, और आप ﷺ के पास एक शीशी है, जिसमें ख़ून है। मैंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! ये क्या (माजरा) है ?" रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "ये हुसैन ؓ और उसके साथियों का ख़ून है जिसे मैं आज सुबह से इकठ्ठा कर रहा हूँ।" सय्यिदना अम्मार ताबई ؒ का बयान है: "हमने वो (ख़्वाब वाला) दिन याद रखा, और फिर (बाद में) हमने तस्दीक़ कर ली कि उसी (61 हिजरी में 10 मुहर्रमुलहराम के) दिन वो (सय्यिदना हुसैन ؓ मैदान ए करबला में) क़त्ल किये गये थे।" [मुस्नद अहमद:2165]
[مسند احمد : 2165 (جلد - 1 ، صفحہ - 242) ، قال الشیخ شعیب الارنووط و الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

66 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अबु नईम ताबई ؒ बयान करते हैं कि सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से किसी ने मुहरिम (एहराम बांधे हुए शख्स) के मुताल्लिक़ पूछा, जो मक्खी को मार डाले (तो उसका कफ्फारा क्या है ?) (ये सवाल सुनकर) सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ ने फ़रमाया: "ये इराक़ के रहने वाले मक्खी के (मारने से) मुताल्लिक़ पूछते हैं, हालांकि इन लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ कि बेटी के लख़ते जिगर को क़त्ल कर डाला है, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: "ये दोनों (सय्यिदना हसन ؓ और सय्यिदना हुसैन ؓ) दुनिया में मेरे दो फूल हैं।" **मुसनद अहमद की हदीस में है:** सय्यिदना शहर बिन हौशब ताबई ؒ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौजा उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ को फ़रमाते हुए सुना, जब सय्यिदना हुसैन बिन अली ؓ की शहादत की ख़बर आई, तो सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ ने अहले इराक़ पर लानत की और कहा: "उन्होंने उन (सय्यिदना हुसैन बिन अली ؓ) को मार डाला है, अल्लाह तआला उन (इराक़ियों) को ग़ारत करे, पहले उन्हें धोखा दिया और (फिर) ज़लील किया, अल्लाह तआला उन पर लानत करे, मैं (उम्मुल मोमिनीन) ने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़ुद देखा कि सय्यिदा फ़ातमा ؓ आप ﷺ के पास सुबह सुबह एक हँड़िया लेकर आईं जिसमें असीदह (एक क़िस्म का हलवा) था, जो उन्होंने आप ﷺ के लिए तैयार किया था, वो एक थाली में लेकर आईं और आप ﷺ के सामने रख दिया। आप ﷺ ने पूछा: "तुम्हारा चचाज़ाद (सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ) कहां है?" उन्होंने अर्ज़ किया: "वो घर मे हैं" आप ﷺ ने हुक्म फ़रमाया: "जाओ उसे बुलाओ और दोनों बच्चों को भी लाना।" उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ बयान फ़रमाती हैं कि वो (सय्यिदा फ़ातिमा ؓ) उन दोनों (सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन ؓ) को एक एक हाथ से थामे हुए लेकर आईं और पीछे सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ तशरीफ़ ला रहे थे। जब सब रसूलुल्लाह ﷺ के पास आ गए तो आप ﷺ ने उन दोनों को गोद में बिठाया, सय्यिदना अली बिन अबुतालिब ؓ आपके दाएं जानिब और सय्यिदा फ़ातमा ؓ बाएं तरफ़ तशरीफ़ फ़रमा हुईं। उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे नीचे से ख़ैबरी चादर खींच निकाली जिसे हम बतौर बिस्तर इस्तेमाल करते थे। वो चादर आप ﷺ ने उन सब पर औढ़ा दी और बाएं दस्ते मुबारक से चादर के दोनों किनारे पकड़े रखे और दाएं हाथ को रब अज़्वजल की जानिब फैरा और दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह तआला! ये मेरे अहले बैअत हैं, इन से नापाकी दूर फ़रमा और इन्हें ख़ूब पाक फ़रमा दे।" आप ﷺ ने 3 मरतबा इन्हीं अल्फ़ाज़ में दुआ फ़रमाई। सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ बयान फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ ! क्या मैं आपके अहले बैअत में से नहीं हूँ ?" आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "क्यों नहीं! तुम भी चादर में आ जाओ।" सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ बयान फ़रमाती हैं: मैं भी चादर में दाख़िल हो गई लेकिन आप ﷺ अपने चचाज़ाद सय्यिदना अली ؓ , अपने नवासों ؓ और अपनी बेटी सय्यिदा फ़ातमा ؓ के लिए दुआ फ़रमा चुके थे।" **अलमुअज्जमउलकबीर लिततबरानी की रिवायत में है:** सय्यिदना अम्मार ताबई ؒ फरमाते हैं कि सय्यिदा उम्मे सल्मा ؓ ने मुझसे फ़रमाया: "मैंने खुद जिन्नात को सय्यिदना हुसैन ؓ पर नौहा करते (रोते) हुए सुना है।" [सहीह बुख़ारी:3753, मुस्नद अहमद:26592 अलमुअज्जमउलकबीरलिततबरानी: 2867]
[صحیح بخاری : 3753 ، مسند احمد : 26592 (جلد - 6 ، صفحہ - 298) ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]
[المعجم الکبیر للطبرانی : 2867 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

67 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अनस बिन मालिक ؓ बयान फ़रमाते हैं कि सय्यिदना हुसैन बिन अली ؓ का सिर मुबारक एक थाल में रखकर (कूफ़ा में यज़ीद बिन मुआविया के इराक़ी गवर्नर) उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया तो वो उसे (छड़ी से) हल्की ज़रब लगाने लगा और उन ؓ के हुस्न के मुताल्लिक़ (गुस्ताख़ाना अन्दाज़ में) कुछ कहा। (نعوذ باللہ من ذلك) उस मौक़े पर सय्यिदना अनस ؓ ने फ़रमाया: "ये (सय्यिदना हुसैन ؓ) रसूलुल्लाह ﷺ से (शकल व सूरत में) बहुत मुशाबहत रखते थे।" और उस वक़्त उनके बाल वस्मा (बूटी के काले रंग) से रंगे हुए थे। **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अनस बिन मालिक

ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि मैं उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के पास बैठा हुआ था कि सय्यिदना हुसैन बिन अली ﷺ का सिर मुबारक लाया गया तो उसने छड़ी उनकी नाक पर मारी और कहा मैंने इन जैसा हुस्न रखने वाला कभी नहीं देखा, मैं (सय्यिदना अनस बिन मालिक ﷺ) ने कहा कि सय्यिदना हुसैन बिन अली ﷺ तो रसूलुल्लाह ﷺ से (शक्ल व सूरत में) बहुत मुशाबेहत रखते थे।"
[सहीह बुख़ारी:3748, जामेअ तिरमिज़ी:3778,]
[صحیح بخاری : 3748 ، جامع ترمذی : 3778 ، قال الشیخ الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح]

"क़ुस्तुन्तुनिया" वाली बशारत "यजीद बिन मुआविया" पर चस्पाँ करना "इल्मी गलती" है

इस मोज़ूअ (विषय) पर चंद सहीह अहादीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

I तर्जुमा सहीह हदीस: "मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो कैसर के शहर (क़ुस्तुन्तुनिया की फ़तह) के लिए जंग करेगा उन की मग़फ़िरत कर दी गई है।" [सहीह बुख़ारी: 2924]

II तर्जुमा सहीह हदीस: "अबु इमरान ताबई ﷺ का बयान है: "हम क़ुस्तुन्तुनिया पर हमले के लिए रोम पहुंचे और हमारे अमीर ए लश्कर "अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद ﷺ" थे। वहां सय्यिदना अबु अय्यूब अंसारी ﷺ ने हमें एक आयत की तफ़सीर समझाई फिर आप अल्लाह की राह में जिहाद में शरीक होते रहे और बिल आख़िर क़ुस्तुन्तुनिया में दफ़न हुए। [सुनन अबूदाऊद: 2512]

III तर्जुमा सहीह हदीस: "सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ रोम में उस लश्कर में फौत हुए जिस में अमीर ए लश्कर "यज़ीद बिन मुआविया" था।" [सहीह बुख़ारी:1186]

नोट क़ुस्तुन्तुनिया पर एक से ज़्यादा हमले हुए थे और सय्यिदना अबुअय्यूब अंसारी ﷺ ख़ुद इन तमाम लश्करों में शरीक रहे। अब आप ﷺ अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद ﷺ वाले लश्कर में तो ज़िन्दा थे, जबकि यज़ीद वाले लश्कर में आप ﷺ (54 हिजरी में) फौत हुए, इस तहक़ीक़ से बिलकुल आसान सा नतीजा निकलाता है: "यज़ीद वाला लशकर क़तअन पहला लश्कर नहीं था, बल्कि वह तो आखिरी लश्कर था।"

यज़ीद के 3 स्याह कारनामे

I जलीलुल क़द्र सहाबी अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ के ख़िलाफ़ मक्का मुकर्रमा पर हमला करके "बैतुल्लाह के गिलाफ़" को आग लगाकर शहीद कर दिया: [सहीह मुस्लिम: 3245]

II "वाक़िया हर्रा" में यज़ीदी फ़ौज ने "क़त्ले आम" करके "मदीना मुनव्वरा" की हुरमत को पामाल किया, और यूं सहीह मुस्लिम की अहादीस की रू से अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की "लानत" कमाई: [सहीह बुख़ारी: 2604, 2959, 4024 और 4906, सहीह मुस्लिम: 3339, 3319, 3323 से 3333]

नोट इमामे अहले सुन्नत सय्यिदना इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ (अलमुतवफ्फ़ा-241 हिजरी) ने अपने शागिर्द महना बिन यहया को "यज़ीद बिन मुआविया" से मुताल्लिक़ पूछने पर फ़रमाया: "वह (यज़ीद) वही है जिसने मदीने वालो के साथ वह करतूत किये जो उस ने किए।" उसने पूछा यज़ीद ने क्या किया था? फ़रमाया: "उसने मदीने को लूटा था।" उसने पूछा क्या हम यज़ीद से हदीस बयान कर सकते हैं? फ़रमाया: "यज़ीद से हदीस मत बयान करो, और किसी के लिए जायज़ नहीं कि वह यज़ीद से एक हदीस भी बयान करे।" उस ने पूछा जब यज़ीद ने ये हरकतें की थीं तो किस ने उसका साथ दिया था? फ़रमाया: "अहले शाम ने।"
[इमाम इब्नेजौज़ी की (यजीद के हिमायती के रद्द में) किताब हदीस-68]
[الرد علی المتعصب الغید المانع من ذم یزید لامام ابنُ الجوزی : صفحہ نمبر 40 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی الحدیث - 68 : اسنادہ صحیح]

III तर्जुमा सहीह हदीस: जब सय्यिदना हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो आप ﷺ का सिर मुबारक (यज़ीद बिन मुआविया के गवर्नर) उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद इराक़ी (कूफी नजदी) के सामने लाकर रखा गया तो वह (बदबख्त) आप ﷺ के सिर मुबारक को हाथ की छड़ी से कुरेदने लगा। ये देख कर सय्यिदना अनस बिन मालिक ﷺ ने (उस ख़बीस को तम्बीह करते हुए) फ़रमाया:"अल्लाह तआला की क़सम! (सय्यिदना) हुसैन ﷺ (अपनी सूरत के ऐतबार से) रसूलुल्लाह ﷺ के सबसे ज़्यादा मुशाबेह थे।" [सहीह बुख़ारी: 3748, जामेअ तिरमिज़ी: 3778]

नोट यज़ीद बिन मुआविया के दौरे मलूकियत में इस दिलसोज़ सानयह ए करबला के बाद भी यज़ीद बिन मुआविया ने अपने कूफ़ी नजदी गवर्नर उबैदुलाल्ह बिन ज़ियाद को कोई सज़ा नही दी और उसे माज़ूल भी नहीं किया, जो इस हकीकत का मुंह बोलता और नाक़ाबिले तरदीद सुबूत है कि यज़ीद इब्ने मुआविया ख़ुद भी इस जुर्म में बराबर का शरीक था, चुनांचे इसी ज़िमन में सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की हदीस में है: सय्यिदना अली इब्ने हुसैन इब्ने अली ताबई ﷺ अलमारूफ इमाम सज्जाद जैनुल आबेदीन

(अलमुतवफ्फ़ा-95 हिजरी) का अपना बयान है: "जब मैं (अपने वालिद) सय्यिदना हुसैन इब्ने अली ﷺ की शहादत के बाद यज़ीद इब्ने मुआविया के दरबार से वापिस मदीना शरीफ आया तो सय्यिदना मसवर इब्ने मखरमा सहाबी ﷺ मेरे पास आए और कहा कि आप ﷺ के पास रसूलुल्लाह ﷺ की वो तलवार (जो रसूलुल्लाह ﷺ के बाद सय्यिदना अली ﷺ फिर सय्यिदना हसन ﷺ फिर सय्यिदना हुसैन ﷺ की शहादत के बाद आप तक पहुंची) है, वह तलवार मुझे इनायत फरमा दें क्योंकि मुझे डर है कि कोई क़ौम (यानी बनू उमय्या वाले) इस तलवार को आप ﷺ से छीन न लें। जब तक मेरी जान में जान है अल्लाह तआला की क़सम मैं इसकी हिफ़ाज़त करूँगा.." [सहीह बुख़ारी: 3110, सहीह मुस्लिम: 6309] [صحیح بخاری : 3110 ، صحیح مسلم : 6309]

68 **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदना अमारा बिन उमैर ताबई ﷺ बयान करते हैं कि जब (मुख़्तार सक़्फ़ी की फ़ौज जानिब से जंग के बाद यज़ीद बिन मुआविया के इराक़ी गवर्नर) उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सिर काट कर लाई तो उन सिरों को एक क़तार में मस्जिद में (लोगों की इबरत के लिए) रख दिया गया। मैं भी वहां पहुंचा तो लोग (किसी ख़ौफ़नाक शै को देखकर) कह रहे थे: "वो आया! वो आया!" अचानक मैंने एक सांप देखा जो सिरों के दर्मियान से गुज़रता हुआ उबैय्दुल्लाह बिन ज़ियाद के नथनो में घुस गया और थोड़ी देर उस के सिर में रुका फिर निकल कर ग़ायब हो गया। कुछ देर बाद फिर शोर मचा: "वो आया! वो आया!" सय्यिदना अमारा ताबई ﷺ का बयान है कि इस तरह उस (सांप) ने दो या तीन बार ये अमल दोहराया।" [जामेअ तिरमिज़ी: 3780]
[جامع ترمذی : 3780 ، قال الامام الترمذی و الشیخ الالبانی : اسنادہ صحیح]

69 **सहीह बुख़ारी की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना अबुबकर सिद्दीक़ ﷺ ने फ़रमाया: "मुहम्मद ﷺ के क़ुर्ब को आप ﷺ के अहले बैअत (की मुहब्बत और क़ुर्बत) में तलाश करो।" **जामेअ तिरमिज़ी और अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह तआला से मुहब्बत रखो कि वो तुम्हे नेमतें अता फ़रमाता है, और अल्लाह तआला की मुहब्बत की वजह से मुझ से मुहब्बत रखो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले बैअत से मुहब्बत रखो।" [सहीहबुख़ारी:3751, जामेअ तिरमिज़ी:3789, अलमुसतदरकलिलहाकिम:4716]
[صحیح بخاری : 3751 ، جامع ترمذی : 3789 ، قال الشیخ زبیر علیزئی : اسنادہ صحیح ، المستدرک للحاکم : 4716 ، قال الامام حاکم و الذهبی : اسنادہ صحیح]

70 **अलमुसतदरकलिलहाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबुहुरैरा ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए इस हाल में आप ﷺ ने एक कंधे पर सय्यिदना हसन ﷺ और दूसरे पर सय्यिदना हुसैन ﷺ को सवार कर रखा था, और बारी बारी दोनों को चूम रहे थे, इसी हालत में आप ﷺ हमारे पास आ पहुंचे तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया: "ऐ रसूलुल्लाह ﷺ ! क्या आप ﷺ दोनों से मुहब्बत रखते हैं ?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "हां ! जो इन दोनों से मुहब्बत रखे, तो गोया कि उसने मुझ से मुहब्बत रखी, और जिसने इन दोनों से बुग़्ज़ रखा तो गोया उसने मुझ से बुग़्ज़ रखा।" (نعوذ باللہ من ذلك)[अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4777,]
[المستدرک للحاکم : 4777 ، قال الامام حاکم و الامام الذهبی و الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

71 **अलमुसतदरकलिल हाकिम की हदीस में है:** सय्यिदना अबु सईद ख़ुदरी ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, हम अहले बैअत से जो कोई भी बुग़्ज़ रखेगा, अल्लाह तआला ज़रूर उसे आग में दाख़िल करेगा।" **अलमुसतदरकलिलहाकिम की एक और हदीस में है:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अब्दुलमुत्तलिब की औलाद ! मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से 3 दुआऐं मांगी हैं कि तुम्हें साबित क़दम रखे, और तुममें से भटकते हुए को हिदायत बख़्शे, और तुम में से जाहिलों को इल्म अता फ़रमाये और मैंने अल्लाह तआला से ये दुआ भी मांगी है कि वो तुम्हें सख़ावत वाला बहादुर और रहमदिल बनाए। (और याद रखो) अगर कोई शख़्स हजरे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान जमकर नमाज़ पढ़ता और रोज़े रखता रहे, मगर (इसके साथ वो शख़्स) मुहम्मद ﷺ के अहले बैअत से बुग़्ज़ रखने की हालत में अल्लाह तआला से (मरने के बाद) मुलाक़ात करे तो ज़रूर आग में जाएगा।" [अलमुसतदरकलिलहाकिम: 4717, सिलसिलातुस्सहिहा: 2488,]
[المستدرک للحاکم : 4717 اور 4712 ، السلسلۃ الصحیحۃ : 2488 ، قال الامام حاکم و الذهبی و الالبانی و الشیخ زبیر علیزئی فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

72 **जामेअ तिरमिज़ी की हदीस में है:** सय्यिदा आएशा ﷺ का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया। " 6- क़िस्म के लोगों पर अल्लाह तआला और उसके हर नबी ﷺ ने लआनत की है, (पहला) अल्लाह तआला की किताब में इज़ाफ़ा करने वाला, और (दूसरा) अल्लाह ताआला की तक़दीर को झुठलाने वाला, और (तीसरा) ताक़त के बलबूते पर मुसल्लत होने वाला ताकि वह किसी ऐसे शख़्स को मुआज़्ज़िज़ बनाए जिसको अल्लाह तआला ने ज़लील किया हो, और किसी ऐसे शख़्स को ज़लील करे जिसको अल्लाह तआला ने मुअज़्ज़ज़ बनाया हो, और (चौथा) अल्लाह तआला के हरम की बेहुरमती करने वाला, और (पांचवा) मेरे अहले बैअत की बेहुरमती करने वाला, और (छठा) मेरी सुन्नत को (हक़ीर समझ कर) तर्क कर देने वाला।" **अलमुअज्जमउलकबीर लिततबरानी की रिवायत है:**

(सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम के बुनियादी रावी) सय्यिदना इब्राहीम नख़ई ताबई رحمه الله बयान करते थे: "अगर (बिलफ़र्ज़) मैं क़ातिलाने सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه में शामिल होता, और (बिलफ़र्ज़) मेरी बख़्शिश भी हो जाती, और (बिलफ़र्ज़) मुझे जन्नत में भी दाख़िला नसीब हो जाता, तो फिर भी मुझे इस बात से शर्म आती कि मैं रसुलुल्लाह ﷺ के पास से गुज़रूं और आपकी नज़र मुझ पर पड़े (कि सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه के क़ातिलों में शामिल था)।"

[जामेअ तिरमिज़ी: 2154, अलमुअज्जमउलकबीर लितबरानी: 2829,]

[جامع ترمذی : 3789 اور 2154 ، المعجم الکبیر للطبرانی : 2829 ، قال الشیخ زبیر علیزئی فی مشکوۃ المصابیح و فی فضائل الصحابۃ : اسنادہ صحیح]

नोट अहले सुन्नत के सहीह मनहज को जानने के लिए हमारी वेबसाइट **www.AhleSunnatPak.com** पर मौजूद इसी मौज़ूअ से मुताल्लिक़ 17 वीडियो लेक्चर ज़रूर देखें:

1. मसअला नम्बर 48: फ़िक्र ए हुसैन तहरीक ए ख़िलाफ़त की रूह है
2. मसअला नम्बर 55-A: इल्म लद्दुन्नी से मुताल्लिक़ राफ़्ज़ियों और सूफ़िया के अक़ाइद का तहक़ीक़ी जाइज़ा
3. मसअला नम्बर 55-B: वसी ए रसूल ﷺ कौन है? और हदीस ए क़िरतास का तहक़ीक़ी जाइज़ा
4. मसअला नम्बर 61: हुसैनियत और यज़ीदियत का तहक़ीक़ी जाइज़ा
5. मसअला नम्बर 65: सय्यिदना उमर फ़ारूक़ رضي الله عنه के सहीह फ़ज़ाइल
6. मसअला नम्बर 66-A: मुहर्रमुलहराम और वाक़िया करबला से मुताल्लिक़ 5-इल्मी निकात
7. मसअला नम्बर 66-B: सय्यिदना हुसैन बिन अली رضي الله عنه के सहीह फ़ज़ाइल
8. मसअला नम्बर 94: ग़ज़्वा-ए-तबूक में मोमिनीन सहाबा किराम رضي الله عنهم और मुनाफ़िक़ीन के किरदार का फ़र्क़!
9. मसअला नम्बर 96: अज़्मत ए सहाबा ए किराम رضي الله عنهم और सुन्नी-शिया के इख़्तिलाफ़ का तहक़ीक़ी जाइज़ा
10. मसअला नम्बर 101: ख़िलाफ़तोमलूकियत, और फ़िक्र ए सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه हक़ परस्ती की अलामत है !
11. मसअला नम्बर 102: फ़ज़ाइल सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه और यज़ीद के करतूतों के दिफ़ा का तहक़ीक़ी जाइज़ा
12. मसअला नम्बर 116-A: जंगे सिफ़्फ़ीन और मुशाजरात ए सहाबा رضي الله عنهم पर डाक्टर इसरार رحمه الله के बयान का तहक़ीक़ी जाइज़ा
13. मसअला नम्बर 116-b: सय्यिदना उस्मान ग़नी رضي الله عنه की शहादत की हक़ीक़ी वजह क्या थी?
14. मसअला नम्बर 116-c: क्या हज़रत मुआविया رضي الله عنه कातिबे वही थे? और हिफ़ाज़त ए क़ुरआन का मोजज़ा
15. मसअला नम्बर 124-a, 124-b, 124-c और 124-d: इंजीनियर मुहम्मद अली मिर्ज़ा पर बाज़ फ़िर्क़ापरस्त उल्मा की जानिब से लगाए गए 10 झूठे इल्ज़ामात के इल्मी जवाबात!
16. मसअला नम्बर 127-बी: इमाम मेहदी عليه السلام की पूरी दुनिया पे ख़िलाफ़त और सुन्नी व शिया का इजमा
17. मसअला नम्बर 157-a और 157-b: सुन्नी और शिया इख़्तिलाफ़ात पे 100 सवालात और उनके जवाबात

आख़री नसीहत इमाम अहले सुन्नत सय्यिदना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई رحمه الله (अलमुतवफ़्फ़ा 204 हिजरी) पर जब नासबी और यज़ीदी उल्मा ने आले मुहम्मद ﷺ से मुहब्बत के मुक़द्दस जुर्म में राफ़ज़ी (यानी शिया) होने का झूठा इल्ज़ाम लगाया तो उन्होंने वो शोअरा आफ़ाक़ (क्या ख़ूब) शेर कहा जो उनके अपने दीवान में है: إِنْ كَانَ رَفْضًا حُبُّ آلِ مُحَمَّدٍ ...... فَلْيَشْهَدِ الثَّقَلَانِ أَنِّي رَافِضِيٌّ

तर्जुमा: अगर आले मुहम्मद ﷺ से मुहब्बत रखने का नाम (बिल फ़र्ज़) राफ़्ज़ियत है, तो तमाम जिन्न और इंसान इस बात पर गवाह हो जाएं कि मैं राफ़ज़ी हूँ।" [दीवान ए शाफ़ई] [دیوانُ الشافعی]